CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकान्त दर्पण

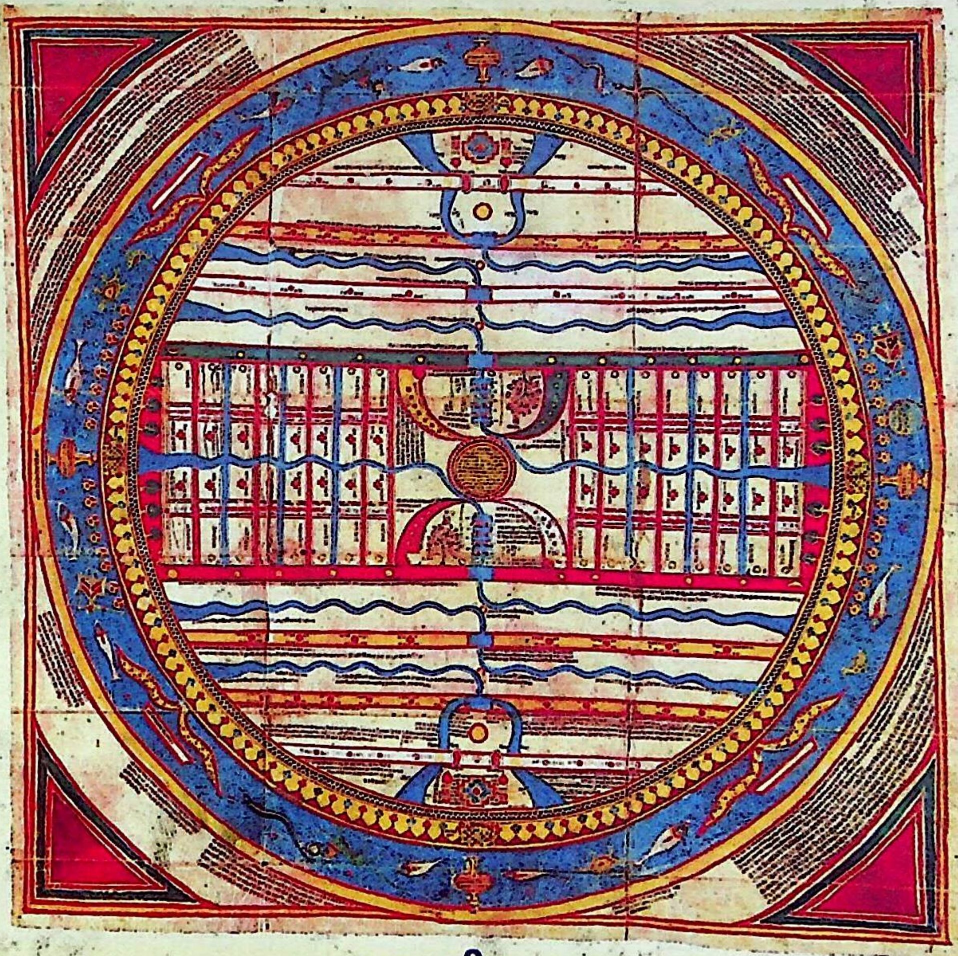

जम्बूद्वीप

4664

प्रकाशक
अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकान्त भवन

ग्रन्थ रत्नावली १, २

सम्पादक

ब्र० संदीप 'सरल'

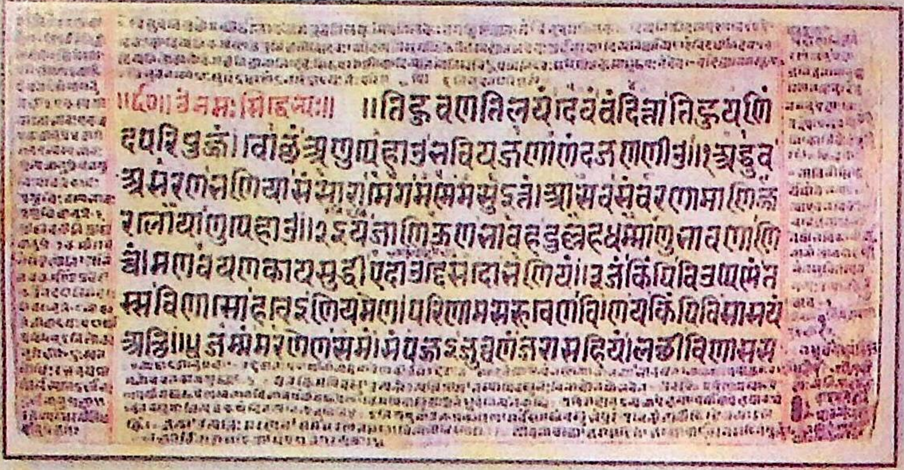

बहुमूल्य - कार्तिकेयानुप्रेक्षा ग्रन्थ की पाण्डुलिपि

(आचार्य सुमतिकीर्ति जी द्वारा लिपिकृत संवत् १६१२ की प्राचीन कृति संस्थान में सुरक्षित)

प्रकाशक

अनेकान्त ज्ञान मन्दिर शोध संस्थान, बीना (सागर) म.प्र.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

11.6

अनेकांत दर्पण

संस्थान की शोध वार्षिकी

अंक:३

वर्ष : २००१

श्री गणेश वर्णी दि. जैन संस्थान वाराणसी को सादर भेंट

वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
पुस्तक सं. 4664
दिनांक ....
नरिया, (का. हि. वि. वि.) वाराणसी

☆सम्पादक मण्डल☆

डॉ. रतनचन्द जैन
पूर्व प्रोफेसर(संस्कृत विभाग)
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

पं. अभय कुमार शास्त्री
जैन दर्शनाचार्य,प्राकृताचार्य, साहित्याचार्य
कानूनगो वार्ड, बीना (म०प्र०)
ph. 30103

❋प्रकाशक❋
अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान
अनेकांत नगर
बीना (सागर) म.प्र. – 470113
फोन : (07580) 30279

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पत्रिका संस्थापक
ब्र. संदीप जैन 'सरल'
अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान
छोटी बजरिया बीना
जिला – सागर म.प्र. – 470113
फोन : (07580) 30279

परामर्श मण्डल
१. पं. कुन्दनलाल जैन, दिल्ली
२. डॉ. भागचंद ज़ी, भास्कर, वाराणसी
३. आचार्य राजकुमार जी, दिल्ली
४. प्रो. एल. सी. जैन, जबलपुर
५. डॉ. नीलम जैन, मीरगंज

अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना के चहुंमुखी
विकास/उत्कर्ष हेतु अपेक्षित आर्थिक
सहयोग इस रूप में दे सकते हैं।

१. शिरोमणी संरक्षक सदस्य	५१०००)	२. परम संरक्षक सदस्य	१५०००)
३. संरक्षक सदस्य	११०००)	४. जिनवाणी सदस्य	५०००)
५. अतिथि व्यवस्था सदस्य	१५००)	६. आजीवन सदस्य	११००)
७. अलमारी हेतु	२५००)	८. एक ग्रंथ की सुरक्षा हेतु	५०१)

अपनी इच्छित राशि नगद/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा
अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना के
नाम भेजकर अनुग्रहीत करें।

धन्यवाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्रम
सुलेख खण्ड

क्र०	शीर्षक	लेखक	पृष्ठांक
१.	सम्पादकीय		5
२.	जैन शोध – समस्या और समाधान	डॉ.महेन्द्र सागर'प्रचंडिया'	9
३.	सार समुच्चय ग्रंथ समीक्षा	पं. अभय कुमार शास्त्री	11
४.	एक दुर्लभ दि० जैन मूर्ति	पं. कुन्दन लाल जैन	28
५.	जैन शोध संस्थानों की समस्याएं एवं समाधान	डॉ. अनुपम जैन	32
६.	श्रुत के प्रचार प्रसार में जैन समाज के कर्त्तव्य	डॉ. कस्तूरचंद 'सुमन'	38
७.	अप्रकाशित ग्रंथों की सूची	ब्र. संदीप जैन 'सरल'	41
८.	पाण्डुलिपियों की प्रशस्तियाँ और प्रशंस्तिबाचन	डॉ. महेन्द्र कुमार जैन	48
९.	उसी भारती के दीपक को हम कहते संदीप 'सरल'	पं. लालचंद जी 'राकेश'	54
१०.	शब्द: पुरातत्त्व का गौरव पाण्डुलिपि संग्रहालय	ब्र. संदीप जैन 'सरल'	56
११.	श्री नेमीचंद्रकृत शिखर जी पूजन एवं स्तोत्र संग्रह समीक्षा	पं. अभय कुमार शास्त्री	60
१२.	बुन्देलखण्डी कवि नवलशाह का पद साहित्य	डॉ. गंगाराम 'गर्ग'	64

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्थान परिचायक खंण्ड

क्र०	शीर्षक	लेखक	पृष्ठांक
१३.	अनेकांत ज्ञान मंदिर वर्ष २००० की एक संक्षिप्त झलक	ब्र. संदीप जैन 'सरल'	71
१४.	शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान रिपोर्ट – २०००	ब्र. संदीप जैन 'सरल'	80
१५.	अनेकांत दर्पण समीक्षाओं के क्षितिज पर	..	83
१६.	दर्शकों की नजर में अनेकांत ज्ञान मंदिर	अनेकांत जैन	87
१७.	साहित्य सत्कार		91
१८.	वर्ष २००० में आयोजित पाण्डुलिपि प्रदर्शनी रिपोर्ट		93
१६.	पंच वर्षीय आगम संरक्षण योजना		95
२०.	संस्थान के आधार स्तम्भ सदस्यों की सूची		97
२१.	इस अंक के लेखक		110
२२.	पत्रकारिता जगत में		
२३.	चित्रावली		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पादकीय

छठे स्थापना–दिवस ९८ के संकल्पानुसार नवमें स्थापना–दिवस दि० २० फरवरी २००१ के शुभ अवसर पर विज्ञ मनीषियों के सद्बोधक एवं शोध खोजपूर्ण सुलेखों सहित श्री अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की गतिविधियों एवं प्रगति की परिचायक वार्षिक पत्रिका **"अनेकांत दर्पण"** का यह तीसरा अंक सुधी पाठकों को सादर समर्पित है।

युवा मनीषी ब्र० श्री संदीप जी 'सरल' के अथक अपूर्व श्रम, लगन, निष्ठा एवं निष्काम समर्पण के फलस्वरूप विगत आठ वर्षों की अल्प समयावधि में ही श्रमण–संस्कृति संरक्षक श्रुतधाम श्री अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान दिनोंदिन प्रगति सोपानों पर उत्तरोत्तर अग्रसर है। प्रतिकूल और विषम परिस्थितियों में भी यह संस्थान सारे भारत में श्रुतोद्धार एवं श्रुतसेवा की अलख जगा रहा है। शास्त्रोद्धार एवं शास्त्र सुरक्षा के अभियान के ८७ तक के अभियानों में लगभग ७००० हस्तलिखित दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ और ७५०० मुद्रित ग्रंथ व्यवस्थित रूप से संस्थान में विराजमान हो चुके हैं।

यहाँ की श्रुत–संरक्षण व्यवस्था देख–जानकर जहाँ साधु–संतों ने इसे एक पुनीत करणीय कार्य बतलाते हुए शुभाशीष दिए हैं, वहीं जिनवाणी भक्त, उदार श्रेष्ठीजनों ने भी सहर्ष अपना सहयोग दिया है और दे रहे हैं। प्रबुद्ध श्रावकों में भी जिनवाणी माँ के प्रति श्रद्धा व आस्था जगी/बढ़ी है और ये यथाशक्ति आर्थिक सहयोग इस श्रुतधाम को दे रहे हैं। विद्वत् वर्ग भी सहयोग हेतु सदैव तत्पर है। इस श्रुतधाम/ शोध संस्थान के सभी अधिकारी व सदस्य गण इन सभी सहयोगियों व हितैषियों को कृतज्ञता पूर्वक साभार धन्यवाद देते हैं।

सन् २००० की संस्थान की विशेष उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

१. ***सूचीकरण***– श्रुतधाम में संकलित सभी शास्त्रों के सूचीकरण का कार्य निरंतर चालू है। संस्थान में शास्त्रों के आते ही उन्हें सुव्यवस्थित, सुसज्जित व परिवेष्ठित कर ग्रंथपरिचायक कार्ड के साथ अलमारियों में विराजमान कर दिया जाता है तथा रजिस्टर में ग्रंथ/ शास्त्र से संबंधित सभी प्रविष्टियाँ कर दी जाती हैं। संस्थान में संकलित शास्त्र संबंधि जानकारी को सर्वसुलभ बनाने के लिए तथा सूचीकरण को स्थायित्व प्रदान करने के लिए हस्तलिखित शास्त्रों की सूचियाँ प्रकाशित कराने का अति महत्त्वपूर्ण कार्य का शुभारम्भ इस वर्ष किया जा चुका है। अभी ७००० हस्तलिखित पाण्डुलिपियों में २६८८ शास्त्रों की सूची समस्त जानकारी सहित लगभग २०० पृष्ठों में **अनेकांत भवन ग्रंथ रत्नावली** नाम से प्रकाशित की गई है। २०० पृष्ठीय यह एक ही वोल्यूम है, जो दो खण्डो में विभक्त है। प्रथम खण्ड में १२१८ एवं द्वितीय खण्ड में १४७० शास्त्रों का विवरण दर्ज किया है। इस ग्रंथ रत्नावली में विषय वर्गीकरण के साथ–साथ अकारादि क्रम से ग्रंथ परिचायक सूची है तथा अंत में एक उपयोगी परिशिष्ट भी दिया गया है, जिसमें विषय विशेष से संबंधित कृतियों की एकत्र जानकारी सुलभ कराई गई है। यह श्रम साध्य कार्य संस्थान संस्थापक ब्र० संदीप जैन 'सरल' द्वारा ही सम्पादित किया गया है, जो स्तुत्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२. ***पंचकल्याण गजरथ समीक्षा का प्रकाशन*** –अनेक समीक्षा ग्रंथों के लेखक पूज्य गुरूवर १०८ मुनि श्री सरल सागर जी महाराज द्वारा लिखित इस समीक्षा ग्रंथ में मुनि श्री ने वर्तमान में पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सवों में निरंतर बढ़ रहीं विकृतियों /बुराईयों की ओर सभी का ध्यान खींचा है और मर्मभेदी कठोर प्रभावी भाषा द्वारा भूले भटकों को बलात् सही मार्ग पर आने के लिए प्रेरित किया है। यह समीक्षा ग्रंथ सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलनार्थ नई दिशा देता है। संस्थान द्वारा इस वर्ष इस समीक्षा ग्रंथ का भी प्रकाशन किया गया है।

३. ***सम्पादन एवं हिन्दी अनुवाद***– आचार्य श्री वादिराज जी द्वारा रचित न्याय ग्रंथ प्रमाण निर्णय का हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन का स्तुत्य कार्य भी इस वर्ष सुश्री डॉ. सूरजमुखी जैन, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) द्वारा पूर्ण कराया गया है, जिसके प्रकाशन की प्रतीक्षा है।

४. ***हिन्दी रूपांतरण*** – महावीराष्टक स्तोत्र के रचयिता पं० भागचंद जी द्वारा ढूंढारी भाषा में लिखित **प्रमाण परीक्षा वचनिका** नामक ग्रंथ का हिन्दी रूपांतरण का सराहनीय कार्य भी इस वर्ष डॉ. कस्तूरचंद जी 'सुमन' प्रभारी श्री जैन विद्या संस्थान श्री महावीर जी द्वारा पूर्ण कर लिया गया है, इसके प्रकाशन की भी प्रतीक्षा है।

५. ***शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान*** – सन् २००० के ७० से ८७ तक के अभियानों में दो विशिष्ट उपलब्धियाँ हुई हैं। (अ) स्व० डॉ० राजकुमार जी साहित्याचार्य, आगरा वालों के निजि ग्रंथालय से ३०० ग्रंथ इस संस्थान को प्राप्त हुए हैं। (ब) आ० श्री वर्धमान सागर जी महाराज की सत्प्रेरणा से टोडारायसिंह (राज०) का विशाल ग्रंथ भण्डार भी इस संस्थान को प्राप्त हुआ है। यहाँ से प्राप्त ४०० हस्तलिखित ग्रंथों में से अनेक अभी तक अप्रकाशित हैं। शास्त्रोद्धार एवं शास्त्र सुरक्षा अभियानों में दुर्लभं पाण्डुलिपियों का प्रदर्शन, धर्मसभा का आयोजन और अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान का परिचय देते हुए शास्त्रों के संरक्षण एवं सुरक्षा पर ब्र० भैया जी का प्रेरक उद्बोधन होता है तथा स्थानीय शास्त्र भण्डारों का अवलोकन कर उनकी साज–सम्भाल एवं सुरक्षा व्यवस्था हेतु श्रावकों को प्रेरित किया जाता है। नियमित स्वाध्याय करने की भी प्रेरणा उन्हें दी जाती है।

६. ***संस्थान को विशेष सम्मान*** – प्राचीन वाङ्मय की सुरक्षा, संरक्षण एवं संवर्द्धन से संबंधित इस संस्थान की विशिष्ट सेवाओं एवं कार्यों से प्रभावित होकर पं० श्यामसुन्दरलाल शास्त्री, प्रभावक न्यास फिरोजाबाद (उ०प्र०) द्वारा इस संस्थान को 'महाकवि रइधू पुरस्कार' प्रदान कर विशेष रूप से सम्मानित किया गया है। इस सम्मान में २१०००) की नकद राशि, एक शील्ड व प्रशस्ति पत्र संस्थान को प्राप्त हुआ है। यह इस संस्थान की प्रतिष्ठा के साथ ही साथ बीना नगर के भी गौरव की बात है। निःसंदेह यह संस्थान अपने सत्कार्यों से दिगदिगन्त में चहुँओर अपनी गौरवगाथा और यशोपताका फहरा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. ***अनेकांत वाचनालयों/स्वाध्याय भवनों की स्थापना*** – भ० महावीर की २६०० वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में इस संस्थान ने देश के विभिन्न भागों में २६ अनेकांत वाचनालयों+स्वाध्याय भवनों. की स्थापना करने का भी संकल्प लिया है, जिसमें से ४ स्थानों पर ऐसे वाचनालय स्थापित किए जा चुके हैं। इन वाचनालयों में स्वाध्याय हेतु चारों अनुयोगों के शास्त्र, बाल साहित्य, चित्रकथाऐं तथा पत्र पत्रिकाऐं उपलब्ध कराईं गई हैं तथा खुलने वाले अन्य सभी वाचनालयों में भी उपलब्ध कराईं जावेगी इन वाचनालयों का संचालन स्थानीय तौर पर गठित समितियाँ ही करेंगी, पर इन सभी की सम्बद्धता (मार्गदर्शन आदि) श्री अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना से ही रहेगी। जहाँ वाचनालय/स्वाध्याय भवन स्थापित हुए हैं वे चार स्थान हैं – १. अजनास (जिला–देवास) २. पिपरई (जिला–गुना) ३. मुगांवली (जिला–गुना) ४. जरूवाखेड़ा (जिला–सागर)।

मुंगावली –यहाँ के वाचनालय में स्थानीय जिनालय के लगभग ३५० हस्तलिखित तथा १८०० मुद्रित ग्रंथों को १७ अलमारियों में सुसज्जित कर विराजमान किया गया है जिनकी देख रेख व सम्भाल स्थानीय तौर पर गठित समिति ही करेगी। यहाँ २८ पत्र पत्रिकाऐं आती हैं तथा प्रतिदिन लगभग २०० लोग स्वाध्याय हेतु यहाँ आते हैं।

पिपरई – यहाँ भी १०० हस्तलिखित तथा ८०० मुद्रित ग्रंथों को ११ अलमारियों में सुसज्जित व सुरक्षित कर इसी वाचनालय में विराजमान किया गया है। यहाँ १५ पत्रिकाऐं आती हैं और १५० से २०० व्यक्ति प्रतिदिन स्वाध्याय हेतु यहाँ आते हैं।

8. ***"संस्थान समाचार" पत्र का प्रकाशन*** – इस संस्थान से जन–जन को जोड़ने के लिए तथा सर्व साधारण तक इसकी गतिविधियों की जानकारी पहुँचाने के लिए इस संस्थान द्वारा संस्थान संस्थापक ब्र० श्री संदीप जी 'सरल' के कुशल संपादकत्व में संस्थान समाचार पंत्र का प्रकाशन सन् १६६६ से प्रारम्भ किया गया था, जो बराबर चालू है। अभी तक इसके आठ अंक प्रकाशित हो चुके हैं। यह द्विमासिक अंक है, जो संस्थान के सभी सदस्यों को निःशुल्क भेजा जाता है।

शोध संस्थान की आवश्यकता – श्रुतधाम शोध संस्थान के शास्त्रों को कम्प्यूटर में फीड (कम्प्यूटराईज्ड) करने के लिए १. सीडी राइटर २. स्केनर उपकरण के साथ–साथ ३. एक अतिरिक्त कम्प्यूटर की भी तत्काल आवश्यकता है। इनके अतिरिक्त एक सीडी बनाने वाले विशेषज्ञ की भी जरूरत है ताकि शास्त्रों के कम्प्यूटरीकरण का कार्य संचालित किया जा सके। शास्त्रों की सुरक्षा और स्थायित्व के लिए यह आज के युग की विशेष मांग है।

संस्थान की सदस्यता हेतु आग्रह – इस संस्थान से जुड़ने के लिए सदस्यता हेतु श्रुत प्रेमियों से आग्रह है। सदस्यों के लिए संस्थान से प्रकाशित होने वाले सभी ग्रंथ, सूचियाँ, अनेकांत दर्पण तथा संस्थान समाचार पत्र सप्रेम भेंट करते हुए आवश्यक जानकारी भी समय–समय पर प्रदान की जावेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"अनेकांत दर्पण" का यह तीसरा अंक नवीन साज सज्जा एवं विशिष्ट पाठ्य सामग्री के साथ सुधी पाठकों के कर कमलों में पहुँच रहा है। यह अंक भी गत अंक की ही भांति दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम सुलेख खण्ड में विज्ञ मनीषियों के विविध विषयों से संबंधित विद्वत्तापूर्ण शोध आलेख तथा अप्रकाशित शास्त्रों की परिचयात्मक समीक्षाऐं संकलित हैं। दूसरे संस्थान परिचायक खण्ड में श्री अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की गति–प्रगति का लेखा जोखा होने के साथ–साथ अनेकांत दर्पण के गत अंक के सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाऐं, संस्थान दर्शकों के अभिमत सन् २००० के शास्त्र सुरक्षा अभियान का विवरण, पाण्डुलिपि प्रदर्शनियों की जानकारी, साहित्य पुरस्कार तथा संरक्षक सदस्यों की सूची आदि का समावेश है। अनेकांत दर्पण के इस तृतीय पुष्प (अंक) के सम्बंध में भरी सुधी पाठकों की निष्पक्ष समीक्षाएँ, सुझाव तथा प्रतिक्रियाएँ सादर आमंत्रित हैं।

जिन मनीषियों ने प्रकाशनार्थ अपने आलेख भेजकर हमें अनुगृहीत किया है और जिन्होंने इस अंक के प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग दिया है उन सभी को साभार धन्यवाद देते हैं। ब्र० भैया श्री संदीप जी 'सरल' का विशिष्ट योगदान भी सराहनीय है। उन्हें बहुशः धन्यवाद।

अनेकांत दर्पणामेषां वार्षिकीं शोधपत्रिकाम्।
धीमतां कर–पात्रेषु समर्पयामि समादरात्।।१।।
परीक्ष्य सम्यक् समालोच्य समबुद्धया समदर्शिभिः।
प्रतिक्रियां दातुमर्हन्ति सर्वे ते सुमनीषिणः।।२।।

दि० ६ फरवरी – २००१

विनयावनत –

अभय कुमार जैन (सेवानिर्वृत्त प्राचार्य)
एम. ए. बी. एड. साहित्यरत्न
साहित्याचार्य, जैनदर्शनाचार्य, प्राकृताचार्य
कानूनगो वार्ड कुआंवाली बाखर
बीना – 470113 जिला – सागर (म०प्र०)
फोन - 07580, 30103

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन शोध : समस्या और समाधान

विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया

शोध स्वाध्याय का एक विशिष्ट अंग होता है। सारस्वत सम्पदा जो अभी तक लुप्त और विलुप्त किसी प्राचीन शास्त्र भण्डार, सरस्वती भवन अथवा किसी जिनायतन के तहखाने में सुरक्षित दबी पड़ी है। उसका सम्यक् उजागरण करना वस्तुतः शोध का एक भेद है। इसी क्रम में शोध का दूसरा प्रभेद है – प्राप्त दुर्लभ सामग्री का मौलिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन तथा अनुशीलन प्रस्तुत करना, जिससे उसके मूल और मौलिक मन्तव्य का भली भाँति प्रसारण हो सके। इस प्रकार के अध्ययन और अनुशीलनों को तर्जी प्राप्त हुई है विश्वविद्यालयों विद्यापीठों के शोध–विभाग द्वारा मान्यता देने पर। ऐसे मौलिक और वैज्ञानिक अध्ययन और अनुशीलन परक शोध प्रबंधों पर यथोचित परीक्षण के उपरांत पी.एच.डी. और डी. लिट् की उच्च उपाधियां प्रदान की गईं हैं। उपाधि धारियों को ऊंचे स्तर की नौकरियॉ मिलने लगीं फलस्वरूप इस दिशा में भी भगदड़ मच गई। काम तो हुआ पर स्तर में भारी गिरावट आई यह वस्तुतः चिंता का विषय है।

विश्वविद्यालयी अध्ययन और अनुशीलनों की अपनी एक तकनीक और पद्धति होती है। उसे समझ कर इन उपाधियों के लिए शोध प्रबंध थोक में गढ़े जाने लगे। इस प्रकार के अध्ययनो का एक सांचा बन गया और खाड़ के खिलौनों की भांति शोध प्रबंध भी ढर्रे पर ढर्रे तैयार होने लगे। शोध की कितनी गहराई और पकड़ अपेक्षित है,उस पर प्रायः ध्यान नहीं दिया।

आज विद्या के क्षेत्र में भी गुण का स्थान गुड़ ने ले लिया है। 'दाम कराये काम' लोकोक्ति के अनुसार अब इस क्षेत्र में भी दाम अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने लगा है। जिन अनुसंधित्सुओं को साधारण से साधारण विषयों पर दो पृष्ठों का निबंध नहीं लिखना आता, जिनमें अपनी बात व्यक्त करने की क्षमता नही, वे एक वृहद् शोध प्रबंध निर्धारित अवधि में रचकर परीक्षार्थ प्रस्तुत कर देते हैं। और आश्चर्य का विषय है ऐसे शोध प्रबंध पास भी हो जाते हैं और अनुसंधित्सु उपाधि लेकर विद्वान और विदुषी की पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।

विद्वान और बुद्धिमान दो शब्द हैं। जो परीक्षाऐं उत्तीर्ण कर लेते हैं। ढेर सारी पोथियॉ लिख पढ़ लेते हैं। ऐसे अध्येता विद्वान कहलाते हैं। विद्वान के लिए बुद्धिमान होना आवश्यक नहीं होता, पर बुद्धिमान विद्वान हो यह भी आवश्यक नही। हिन्दी के एक बहुचर्चित कवि हैं–कबीरदास। वे विद्वान नहीं थे। उन्होंने अपने जीवन में मसि कागज तक नही छुआ और न उन्होने हाथ में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलम गही पर उनकी साखियों और सबद पर सैकड़ो पी.एच.डी. और डी. लिट् उपाधियों के लिए शोध प्रबंध रचे गए हैं और क्रम जारी है। कबीर बुद्धिमान थे।

मुझे अवगत कराया गया कि अब शोध के क्षेत्र में पर्याप्त ध्यान दिया गया है। शोधार्थियों को फुल टाइम संस्थान में बिताना वस्तुतः आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य हो गया है। टॉपिक रूपरेखा शोध कमेटी द्वारा स्वीकार किया जाने लगा है। शोध प्रबंध तैयार हो जाने पर उसे किसी विषय विद्वान के पास परीक्षार्थ प्रस्तुत किया जाता है। उत्तीर्ण होने पर शोधार्थी की मौखिक परीक्षा भी होती है। उसे उत्तीर्ण करने पर विश्व विद्यालय तंत्र उस पर विचार करता है। इतना सब कुछ करने कराने के उपरांत शोधार्थी को उपाधि से नवाजा जाता है। ये सारे सोपान पार करने के लिए शोधार्थी को पर्याप्त श्रम, समय, स्वाध्याय और प्रभूत द्रव्य की आवश्यकता होती है। अब तो बहुत सारे काम जिसे शोधार्थी स्वयं करने में असमर्थ हो जाता है, उसका सम्पादन दाम व्यय करने पर पूर्ण हो जाता है। शोध निर्देशक द्वारा अन्य अनेक प्रकार से बिचारा शोधार्थी सताया जाता है। अन्ततः वह डाक्टर हो जाता है।

जैन समाज द्वारा अनेक शोध संस्थान खड़े किए गए हैं। इन संस्थानों में यत्र तत्र बिखरी और भण्डारों में लुकी छिपी सामग्री व्यवस्थित की गई है।अनेक संस्थानों में शोध शिविर और विशेष व्याख्यान भी आयोजित किए गए हैं जहां अनुसंधित्सुओं की समस्याओं के समाधन किए जाते हैं।

इधर जैन विषयों पर थोक में शोध कार्य कराया जा रहा है। पर कार्य स्तरीय और सारपूर्ण सम्पंन्न हो इसके लिए इन जैन–जैनेतर शोधार्थियों को जानकारी हेतु इन संस्थानों में सुयोग्य विद्वानों की सेवाऐं लेनी चाहिए। सेमीनार आयोजित हों जिनमें विषय बोध के साथ हस्तलिखित ग्रंथों के वाचने और उन पर वाचना की व्यवस्था कराई जाय तो शोधाथियों को विषय का विद्वान बनाया जा सकता है। उन्हें यथेष्ट सारस्वत शक्ति सामर्थ्य मिल जाने पर अनाहूत शोषण से बचाया जा सकता है।

यदि समाज के अवकाश प्राप्त विद्वानों का पूर्ण नहीं तो अल्प समय को आमंत्रित किया जाए। उनके आवागमन तथा ठहरने आदि की व्यवस्था संस्थानों द्वारा कराई जा सके और उनके कार्यक्रम की समुचित व्यवस्था विज्ञापन हो तो पर्याप्त समाधान प्राप्त किए जा सकते हैं।

❑❑❑

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सार समुच्चय शास्त्र समीक्षा

पं. अभय कुमार शास्त्री एम. ए. साहित्याचार्य

प्रति परिचय – हस्तलिखित ग्रंथभण्डार अनेकांत ज्ञान मंदिर, बीना
ग्रंथ कमांक– 3749, प्राप्ति स्थल – श्री दि० जैन मंदिर अजमेर (राज०),
ग्रंथ – हस्तलिखित, भाषा – संस्कृत, गद्य/पद्य – पद्यबद्ध रचना है।
कुल पद्य संख्या 300+29=329 है। पृष्ठ संख्या – 13×2 = 26 +1= 27 पृष्ठ, पत्र (पन्नों की) संख्या कुल पत्र १५ हैं। प्रथम पन्ने का पृष्ठ १–२ कोरा है तथा अंतिम पन्ने का अंतिम पृष्ठ भी कोरा है। पन्ना क्रं० २ से ग्रंथ का शुभारम्भ हुआ है। पन्ने की लम्बाई – २८ से.मी. चौड़ाई २०.५ से.मी. है। हॉसिया – दोनों बाजुओं में लाल स्याही की ३–३ लाइनें हैं दोनों छोरों पर भी १–१ लाल लाइन ऊपर से नीचे खींची गई है। दोनों बाजुओं में ४–४ से.मी. की बार्डर छोड़ी गई है। ऊपर–नीचे भी ३–३ से.मी. खाली जगह छोड़ी गई है। ग्रंथनाम – 'सार समुच्चय' प्रत्येक पन्ने पर पन्ने की कम संख्या के साथ अंकित है/लिखा है।

पृष्ठ अनुसार पंक्तियाँ एवं पद्यसंख्या का विवरण

पृष्ठ क्र०	पंक्तियाँ	पद्य संख्या	पद्य से .... तक
१	१३	१२	पद्य क्र०१ से १२ तक
२	१३	१२	पद्य क्र० १३ से २४ तक
३	१५	१३	पद्य क्र० २५ से ३७तक
४	१५	१३.५	पद्य क्र० ३८ से ५०.५ तंक
५	१५	१३	पद्य क्र० ५१ से ६३.५ तक
६	१५	१४	पद्य क्र० ६४ से ७७ तक
७	१४	१३	पद्य क्र० ७८ से ६० तक
८	१३	१२.५	पद्य क्र० ६१ से १०२.५ तक
६	१३	१२.५	पद्य क्र० १०३ से ११५ तक
१०	१३	१२	पद्य क्र० ११६ से १२७ तक
११	१३	१२	पद्य क्र० १२८ से १३६ तक
१२	१३	१३	पद्य क्र० १४० से १५२ तक
१३	१३	१३	पद्य क्र० १५३ से १६५ तक
१४	१३	१२	पद्य क्र० १६६ से १७७ तक
१५	१३	१२.५	पद्य क्र० १७८ से १८६.५ तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६	१३	१२	पद्य क्र० १९० से २०१.५ तक
१७	१३	१३	पद्य क्र० २०२ से २१४.५ तक
१८	१३	१२.५	पद्य क्र० २१५ से २२७ तक
१९	१३	१३	पद्य क्र० २२८ से २४० तक
२०	१३	१२	पद्य क्र० २४१ से २५२ तक
२१	१३	१२	पद्य क्र० २५३ से २६४ तक
२२	१३	१२	पद्य क्र० २६५ से २७६ तक
२३	१३	११	पद्य क्र० २७७ से २८७ तक
२४	१३	१२	पद्य क्र० २८८ से २९९ तक
२५	१३	१२	पद्य क्र० ३०० से ३११ तक
२६	१३	११	पद्य क्र० ३१२ से ३२२ तक
२७	८	६+१	पद्य क्र० ३२३ से ३२९ तक

नोट – पद्य क्र० १ से शुरू करके क्रमशः १६६ तक पूरे अंक लिखे गये हैं परन्तु १६७ से प्रारम्भ का १ अंक छोड़कर के ६७,६८,६९ इत्यादि रूप से ८९ तक अंक लिखे गये हैं पुनः १९० से अंक शुरू करके २०२ तक पूरे अंक लिखे गये हैं।२०२ के बाद पुनः २०३ की जगह ३ और आगे बढ़ते क्रम से ९९ तक संख्या लिखी गई है। ३०० क्रमांक के पद्य की संख्या ३०० ही अंकित की गई है। पुनः ३०० के बाद १ से लेकर २९ पद्यों की संख्या दी गई है। इस प्रकार ग्रंथ में कुल ३२९ पद्य है। पद्य क्र. २२८ की एक पंक्ति नहीं है। पद्य क्र. २३० में कुछ शब्द छूटे हुए हैं। पद्य क्र. १३९ नहीं है।

ग्रंथ का नाम – इस ग्रंथ को "सार समुच्चय" नाम से अभिहित किया गया है। इस हस्तलिखित ग्रंथ के प्रत्येक पन्ने पर पन्ने की क्रम संख्या के बायीं ओर ऊपरी छोर पर यह नाम अंकित है तथा ग्रंथान्त में ३२९ वें पद्य की समाप्ति के बाद लाल स्याही से।। "इति श्री सार समुच्चय"समाप्तः।। अंकित है। इसके अलावा पद्य क्रं. ३२६ में **दृष्टो दाल स्वभावेन ग्रंथ सार समुच्चयः** इस नाम का उल्लेख है। पद्य क्रं. ३२८ में **"सार समुच्चय मेतद्धि ये पठन्ति समाहिताः।"** ग्रंथ नाम का उल्लेख है।

नाम की सार्थकता – इस ग्रंथ में ३२९ पद्यों के माध्यम से ग्रंथकार ने जैन धर्म के सारतत्त्व को समाहित किया है। धर्म के सार को एकत्र संकलित करने के कारण इस ग्रंथ के नाम की सार्थकता सिद्ध होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथ का उद्देश्य – चारों गतियों में अत्यन्त दारूण शारीरिक मानसिक दुखों को सहन करने/भोगने वाले मूढ़ संसारी प्राणी को संसार से उदासीन कर आत्मकल्याण की प्रेरणा देने हेतु इस ग्रंथ की रचना ग्रंथकार ने की है।तद्यथा-

ज्ञानभावनया जीवो लभते हितमात्मनः।
विनयाचार–सम्पन्नो विषयेषु पराङ्मुख।।४।।
आत्मानं भावयेन्नित्यं ज्ञानेन विनयेन च।
मा पुन–र्म्रियमाणस्य पश्चातापो भविष्यति।।५।।

ज्ञान ध्यान और तप के आलम्बन से सदा ही आत्मा की रक्षा करें अन्यथा शील रूपी रत्न विलुप्त हो जायेगा। (१५)

ग्रंथ के स्वाध्याय का फल – इस ग्रंथ को पढ़ने का (स्वाध्याय का) फल बताते हुए ग्रंथकार ने ग्रंथ के अंत में पद्य क्रं. ३२८ में कहा है –

सारसमुच्चयमेतद्धि, ये पठन्ति समाहिताः।
ते स्वल्पेनैव कालेन, पदं यास्यन्त्यनामयम्।।३२८।।

जो समाहितं चित्त (एकाग्र चित्त) होकर इस सार–समुच्चय ग्रंथ को पढ़ते हैं, वे स्वल्प = अल्प समय में ही **अनामयं पदं यास्यन्ति** = अनामय = निष्कंटक = निरापद = पद को अर्थात मोक्ष को पा लेते हैं।।३२८।। उन्होंने पद्य क्र. ३२७ में यह भी बतलाया है कि जो संसार के कारणों को नाश करने वाले इस ग्रंथ को भक्ति पूर्वक भाव सहित भाते हैं/ध्याते हैं वे शीघ्र ही शाश्वत सुख को पा लेते हैं – तद्यथा –

ये भक्त्या भावयिष्यन्ति, भवकारण–नाशकम्। (नम्)
तेऽचिरेणैव कालेन सुखं प्राप्स्यन्ति शाश्वतम्।।३२७।।

ग्रंथ का आदिमंगल – ग्रंथारम्भ में ग्रंथकार ने प्रथम पद्य में भवोद्भवविनाशक देवों के देव जिनेन्द्र प्रभु को नमस्कार किया है तथा अपने को हीनमति = अल्पबुद्धि बतलाते हुए भक्तिवश उपदेश कथन की प्रतिज्ञा भी की है।।१।।

देवदेवं जिनंनत्वा भवोद्भवविनाशनम्।
वक्ष्येऽहं देशनां कांचिन्मतिहीनोऽपि भक्तितः।।१।।

ग्रंथ का अन्त्य मंगल – अंत में ग्रंथकार ने २२वें तीर्थंकर भ० अरिष्टनेमि को नमस्कार किया है जो परम ध्यान की सिद्धि करने वाले, विघ्नों/बाधाओं को नाश करने में कारण भूत हैं तथा महाकल्याण रूप सम्पदा को (करने) देने वाले हैं।।३२६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमः परमसद्ध्यान विघ्ननाशनहेतवे।
महाकल्याण–संपत्ति–कारिणेऽरिष्टनेमये।।३२६।।

ग्रंथकार – इस ग्रंथ के रचियता कौन हैं? यह विमर्शनीय और अन्वेषणीय है। इस प्रति में कहीं भी ग्रंथकार का नाम अंकित नहीं है। इस ग्रंथ के पद्य क्र. ३२६ में एक नाम "कुलभद्र" आया है, जिन्होंने इस सार समुच्चय ग्रंथ को देखा था। तद्यथा –

अयं तु कुलभद्रेण भवविच्छित्तिकारकः।
दृष्टो दालस्वभावेन ग्रंथः सारसमुच्चयः।।३२६।।

इस पद्य में संसार विच्छेदकारक ग्रंथ सार समुच्चय दाल स्वाभावीकुल भद्र के द्वारा देखा गया लिखा है। दृष्टः की जगह यदि लिखितः होता तो ग्रंथकार 'श्री कुलभद्र' ही स्पष्टतः चिंहित हो जाते परंतु दृष्टः लिखने से भ्रम की स्थिति बन गई है पर मेरे विचार से श्री कुलभद्र ही इस गंथ के ग्रंथकार हैं क्योंकि ग्रंथकार के अतिरिक्त अन्य कोई यह पद्य रचकर इस ग्रंथ में नहीं जोड़ता। अतएव श्री कुलभद्र ही निःसंदेह इस ग्रंथ के रचियता हैं।

श्री कुलभद्र का अन्य कोई परिचय इस ग्रंथ में नहीं है। अतः उनके बारे में यह कहना शक्य संभव नही है कि वे साधु थे या श्रावक? पर वे जैन धर्म दर्शन के ज्ञाता विद्वान तथा संस्कृत भाषा के जानकार थे।यह उनके द्वारा लिखित इस ग्रंथ से ही प्रमाणित होता है। प्रतिपाद्य विषय से ग्रंथकार साधु ही जान पड़ते हैं।

रचनाकाल – ग्रंथकार और ग्रंथ रचना के काल का (समय का) उल्लेख ग्रंथ में कहीं नहीं है। हाँ ग्रंथांत में सम्भवतः इसके लिपिकार ने श्री संवत् १६७३ का उल्लेख किया है।। तद्यथा –

इति सार समुच्चयः समाप्तः।। छ।। श्री संवत् १६७३

ग्रंथ की भाषा – ग्रंथ की भाषा संस्कृत है। यह सम्पूर्ण रचना पद्यमय है पर यत्र तत्र त्रुटियाँ परिलक्षित होती है। फलतः अनेक स्थलों पर अर्थ की संगति नहीं बनती, मेल नहीं बैठता। अतः भाषा संशोधन (त्रुटि सुधार) होना आवश्यक है।

ग्रंथ में छंद प्रयोग – सारे ग्रंथ में मात्र एक ही छंद का प्रयोग है। सभी पद्य अनुष्टुप् छंद हैं। जिसे श्लोक या पद्य नाम से भी जाना जाता है। यह आठ अक्षरों का छंद होता है। श्लोक को ही विद्वज्जन 'अनुष्टुप्' कहते हैं। श्लोक में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छटवाँ अक्षर गुरू और पांचवाँ अक्षर लघु होता है। द्वितीय चतुर्थ चरण में सातवाँ लघु और प्रथम तृतीय चरणों में सातवाँ अक्षर दीर्घ होता है। तद्यथा–

श्लोके षष्ठं गुरू ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चकम्।
द्वि चतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमंदीर्घमन्ययोः।। छंद कौमुदी

आलंकारिक समीक्षा – सार समुच्चय ग्रंथ में यत्र तत्र अलंकारों का भी समावेश हुआ है। रूपक, अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, समासोक्ति, अर्थान्तरन्यास, कारणमाला आदि अलंकार इस ग्रंथ में दृष्टव्य हैं। अलंकारों के समावेश से विषय रूचिकर व बोधगम्य हुआ है। ये अलंकार ग्रंथ में अनायास समाविष्ट हुए हैं कतिपय अलंकारों के उदा० यहाँ दृष्टव्य हैं –

१. **निःसंगिनोऽपि वृत्ताढया निःस्नेहांश्श्रुतिप्रियाः।**
आभूषापि तपोभूषास्ते पात्रं योगिनः सदा।।२०१।। विरोधाभास अलंकार

२. **संगात् संजायतेगर्द्धि गृद्धेःवाञ्छा संचयम्।**
संचयात् वर्द्धते लोभो, लोभात् संसृतिवर्द्धनम्।।२३२।।कारणमालालंकार
ममत्वाज्जायते लोभो लोभाद्रागश्च जायते।
रागाच्च जायते दोषो द्वेषाद्दुःखपरम्परा।।२३३।। कारणमाला अलंकार
परिग्रह परिष्वंगाद् रागद्वेषश्च जायते।
रागद्वेषौ महाबन्धः कर्मणां भवकारिणम्।। २५४।। कारणमाला अलंकार

३. **मनस्याह्लाादिनी सेव्या सर्वकालं सुखप्रदा।**
उपनेया त्वया भद्र! क्षमानामा कुलांगना।।२६६।। समासोक्ति अलंकार

४. **अहंकारो हि लोकानां विनाशाय न वृद्धये।**
यथा विनाशकाले स्यात् प्रदीपस्य शिखोज्वला।।२५।। दृष्टांतालंकार

५. **अज्ञं हि बाधते दुःखं मानसं न विचक्षणम्।**
पवनैर्नीयते तूलं मेरोः श्रृंगं न जातुचित्।।३०७।। अर्थान्तरन्यास अलंकार

६. **संवेगः परमं कार्यं श्रुतस्य गदितं बुधैः।**
तस्माद् ये धनमिच्छन्ति तेत्विच्छन्त्यमृताद्विषम्।।३०६।। उत्प्रेक्षा अलंकार
चारित्रं तु समादाय ये पुनर्भंगमागताः।
ते साम्राज्यं परित्यज्य दास्यभावं प्रपेदिरे।।२७७।। उत्प्रेक्षा अलंकार
यैः सन्तोषोदकं पीतं निर्ममत्वेन वासितम्।
त्यंक्तं तै र्मानसं दुःखं दुर्जनेनैव सौहृदम्।।२४६।।उत्प्रेक्षा एवं रूपक

७. **दोषाणामाकरो कामो गुणानां च विनाशकृत्।**
पापस्य च निजो बन्धुरापदां चैव संगमः।।१०४।। मालारूपक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसारस्य च बीजानि दुःखानां राशयः पराः।
पापस्य च निधानानि निर्मिताः केन योषितः।।१२१।।मालारूपक
नारकावर्तपातिन्यः स्वर्गमार्गदृढार्गलाः।
अनर्थानां विधायिन्यो योषिता केन निर्मिताः।।१२३।। मालारूपक

८. या चैषा प्रमदा भाति लावण्यजलवाहिनी।
सैषा वैतरिणी घोरा दुःखोर्मिशत–संकुला।।१२०।। उत्प्रेक्षा एवं रूपक

६. संसारध्वंसनं प्राप्य सम्यक्त्वं नाशयंति ये।
वमन्ति तेऽमृतं पीत्वा सर्वव्याधिहरं पुनः।।५२।। उत्प्रेक्षालंकार

१०. त्रजीवितं विद्युतातुल्यं संयोगाः स्वप्नसन्निभाः।
संध्याराग–समः स्नेहः शरीरं तृण–विन्दुवत्।।१५०।।मालोपमा अलंकार
शक्रचापसमः भोगा संपदो जलदोपमाः।
यौवनं जलरेखेव सर्वमेतदशाश्वतम्।।१५१।।मालोपमा अलंकार

११. रूपकालंकार – चेतोरत्नम्(६) ज्ञानसूर्य(१०) शीलरत्न(५) मोहध्वान्त (१६) स्नेहपाशान्–मोहमहार्गलम् (२०) धर्मधनम् (२४) विषयोरग कषाय विषमोहिनः(३१) भवाम्बोधिः (३२) कषायेन्द्रियतस्करैः (६०)धर्मामृतं सदापेयम् (६४) सौख्य महानिधिम् (६६) भोग विषं भुक्तम् (७७) इन्द्रियेच्छारूजम् (८३) स्मरबह्निप्रदग्धानाम्(६२)कामाग्नि हृदये(६४)कामसर्पोऽतिदारूणः(६७) पालयन्ति भवार्णवे (६६) धर्मामृत पराङ्मुखः (१००) स्मरशल्यम्(१०२)मदनज्वाला (१२२) गृह पंकेषु (१३७) भवाम्बोधौ (१३८) तृष्णांधा नैव पश्यन्ति (२३६) सन्तोषांजनम (२३६) संतोषसारसद्रत्नम् (२४०) तृष्णानल प्रदीप्तानाम् (२४१) तृष्णानलोपनाशनम् (२४७) देहं दहति कोपाग्निः (२८६) शीलव्रत जलस्नानेन (३१३) आत्मानं स्नापयेन्नित्यं ज्ञाननीरेण चारूणा (३१५)

कषाय विषयैश्चोरैर्धर्मरत्नं विलुप्यते।
वैराग्य खड्गधाराभिः सूराः कुर्वन्ति रक्षणम्।।३७।।रूपकालंकार
सम्यक्त्वादित्य संभिन्नं कर्म ध्वान्तं विनश्यति।
आसन्नभव्यसत्त्वानां काललब्ध्यादिसन्निधौ।।५०।। रूपकालंकार
पिशाचेनैव कामेन छिन्दितं सकलं जगत्।
वभ्रमीति परीयत्तं भवाब्धौ तन्निरन्तरम्।।१०६।।रूपकालंकार
यावन्न मृत्युवज्रेण दहेशैलो निपात्यते।
नियुज्यतां मनस्तावत् कर्मराति परीक्षयो।।१२८।।रूपकालंकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानस्तम्भं दृढं भंङ्त्वा लोभाद् विप्रविदार्य्य वै।

मायावल्लिं समुत्पाद्य क्रोधशत्रुं निहत्य च।।१६५।। रूपकालंकार

यथाख्यातं हितंप्राप्य चारित्रं ध्यानतत्पराः।

कर्मणां प्रक्षयं कृत्वा प्रयाताः परमं पदम्।।१६६।। रूपकालंकार

<u>रस– विवेचन</u>

सार समुच्चय शास्त्र में आदि से लेकर अंत तक संसार शरीर भोगों की असारता/नश्वरता का बोध कराते हुए आत्म कल्याण की ओर अग्रसर/प्रेरित किया गया है। संसार के दुखों को जानकर संसार से उदासीनता व वैराग्य की भावना बलवती होती है।अतः इसमें **शांतरस** की प्रधानता है। कुछ पद्यों में जहाँ देह की अशुचिता का वर्णन आया है, वहाँ **वीभत्सरस** की भी अनुभूति होती है। तद्यथा–

विण्मूत्र–पूरिते भीमे पति श्लेष्म वसाकुले।

भूयो गर्भगृहे मातु र्देवाद् यातोऽसि संस्थितिम्।।१४५।।

सर्वाशुचिमये काये नश्वरे व्याधिपीड़िते।

को हि विद्वानः रतिं गच्छेद् यस्यास्ति श्रुति–संगमः।।१५३।।

सर्वाशुचिमये काये शुक्र–शोणित–संभवे।

शुचित्वं योऽभिवांछन्ति नष्टास्ते जड़चेतसः।।३१६।।

औदारिक–शरीरेऽस्मिन् सप्तधातुमयेऽशुचौ।

शुचित्वं योऽभिमन्यन्ते पशवस्ते न मानवाः।।३१७।।

सार समुच्चय शास्त्र की शैली –सार समुच्चय शास्त्र की वर्णन शैली पूर्णतः उपदेशात्मक है। जैसे कोई एक संयमी साधक अपने शिष्यों को प्रवचन द्वारा/उपदेशों द्वारा सत्पथ दर्शा रहे हों।शास्त्रकार ने स्वयं ही आद्य मंगल के प्रथम श्लोक के प्रतिज्ञावाक्य में इसे स्वीकार किया है। वे लिखते हैं –

वक्ष्येऽहं देशनां कांचिन्मति–हीनोऽपि भक्तितः।।१।।अर्थात्

मतिहीन होते हुए भी मैं भक्तिवश किसी देशना(उपदेश) को कहूँगा।।१।।

शास्त्र का लिपि वैशिष्टय – वर्तमान में प्रचलित लिपि से कुछ भिन्न है। जैसे अधुना में 'उ' की मात्रा "अधना" नीचे न लगाकर बाजू में लगाना। शब्दों को अलग अलग न लिखकर पूरी पंक्ति में एक साथ लिखना। कुछ संयुक्त अक्षरों का मेल भी वर्तमान से भिन्न है। अतः पंक्तियों का अर्थ करने में कुछ कठिनाई होती है। 'य' को 'प' की तरह लिखना। कई स्थलों पर लिपि बोधगम्य न होने से अर्थ निकालना संभव नहीं हो पाता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्तियों/सद्विचारों के माध्यम से सत्पथ की प्रेरणा

सारसमुच्चयकार ने इस ग्रंथ में सूक्तियों के माध्यम से सत्पथ की प्रेरणा दी है। चूँकि ग्रंथकार का ग्रंथ लिखने का उद्देश्य **भवविच्छित्ति** संसार का उच्छेद करना और कराना रहा है। अतः ग्रंथकार ने संसार के असारता, विषयभोगों की निःसारता, सांसारिक सुखों की क्षणभंगुरता, तथा चतुर्गतियों के भयानक दुःखों को सूक्तियों के माध्यम से पाठकों को हृदयंगम कराया है। ग्रंथ में सूक्तियों की अधिकता है।

प्रतिपाद्य विषय

चारों गतियों की ८४ लाख योनियों में भटकता हुआ यह संसारी प्राणी अत्यन्त दारूण शारीरिक और मानसिक दुःखों को प्राप्त करता है। निरंतर आर्तध्यान में रत रहते हुए यह मूढ़ प्राणी आत्महित नहीं करता है।।३।। ज्ञानभाव से ही आत्महित होता है। ज्ञानाराधना मानव जीवन का सार है। सभी सांसारिक संकल्प विकल्पों का परित्याग कर सदा ही उत्तम ज्ञानामृत का पान करना चाहिए। ज्ञानाभ्यास, तपों का संरक्षण और चारित्र का पालन प्रमाद रहित होकर ही करना चाहिए। जब तक शरीर स्वस्थ है और इन्द्रियों की सम्पदा है तब तक तप करना/चारित्र पालन करना उचित है, श्रेयकर है। क्योंकि (शारीरिक क्षीणता, शैथिल्य के कारण) बुढ़ापे में यह संभव नहीं है।।१७।।

जिसकी शक्ति का उपयोग शुद्ध तपश्चरण् में, ज्ञान का उपयोग कर्मक्षय में और धन का उपयोग योग्य पात्र में होता है, पंडित वही है।।१८।। रागहंता, मोहभंता, सच्चारित्र युक्त प्राणी ही सच्चा शूरवीर है, वही मोक्ष मार्ग में स्थित है।।२०।।

यह सारा जगत मोह से मोहित है। बुद्धिमान भी काम अर्थ, रति में तत्पर हो संसार में रम जाता है। वे धन्य हैं, जो मोह का त्याग कर तप करते हैं।।२१–२२।। काम, क्रोध, लोभ, रागद्वेष, मत्सर, मद, माया, मोह, धन को हरने वाले सब से बड़े दुश्मन हैं, बैरी हैं।। इन्हीं से यह जीव संसार में भटकता है।।२३–२४।।

काम से बड़ी अन्य कोई व्याधि नहीं है, मोह से बड़ा कोई शत्रु नहीं है, और ज्ञान से बड़ा कोई सुख नहीं है।।२८।। विषय कषायों से रक्षा करने वाला एक मात्र संयम ही है।।३१।। राग द्वेष मोह तथा विषय कषायों को संसार भ्रमण का कारण बतलाते हुए वैराग्य, इन्द्रिय–निग्रह और कषाय विजय को हितकारी(कल्याणकारी) बतलाया है। मोक्षमार्ग में सम्यकदर्शन ही उत्तम पथ्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक्त्व सहित नरकवास अच्छा है पर सम्यक्त्व–रहित होकर स्वर्ग में भी रहना ठीक नहीं है।।४०।।सम्यक्त्व संसार के दुःख दारिद्र का नाशक है।।४२।।

''पंडितोऽसौ विनीतोऽसौ धर्मज्ञः प्रियदर्शनः।
यः सदाचार सम्पन्नः सम्यक्त्व दृढ मानसः।।४३।।

जो सम्यक्त्व से दृढ़ मन वाला और सदाचार सम्पन्न है, विनीत हैं, धर्मज्ञ है और प्रियदर्शी है, वही पंडित है।।४३।। जो जरा मरण आदि रोगों का सम्यग्दर्शन ज्ञानरूप औषधियों से शमन करता है, निश्चय से वही (सच्चा) वैद्य है।।४४।। सम्यक्त्व प्राप्तकर संयम धारण की प्रेरणा करते हुए संसार के दुःखो से मुक्त होने की प्रेरणा दी है।

संसार का मूल कारण मिथ्यात्त्व है। मुमुक्षु इसे छोड़े।।५३।। पूर्वोपार्जित कर्मों से पाये दुःखों को मनुष्य सह नहीं सकते हैं। अतः सच्चे धर्म को धारण करना चाहिए, जिससे वे कर्म नष्ट होवें।।५७।। सच्चे धर्म को पाले बिना यह आत्मा कषाय और इन्द्रिय–चोरों के द्वारा लूटी–ठगी जाती है।।६०।। अतः जब तक शरीर स्वस्थ आयु सुदृढ़ है, धर्म कर्म में ही अपनी बुद्धि और शक्ति लगाओ।।६१।। जिनके चित्त में धर्म समाया हुआ होता है, उन्हीं का जीवन सफल/सार्थक होता है।।६२।। जो धर्मधारी हैं, वे ही धर्मात्मा हैं, अमर हैं। पापाचारी तो जीवित रहते हुए भी मृत के समान हैं।६३।। अतः –

धर्मामृतं सदा पेयं दुःखान्तक–विनाशनम्।
यस्मिन्पीते परं सौख्यं जीवानां जायते सदा।।६४।।

दुःखों का अंत करने वाले धर्मामृत का सदा पान करें जिसका पान करने पर जीवो को सदा ही सुख की प्राप्ति होती है।।६४।।

सर्व प्राणी हितकर दयायुक्त धर्म ही संसार सागर से तारने में समर्थ है। यदि तुम्हें दुःख अप्रिय और सुख प्रिय है तो जिनोक्त धर्म को धारण/पालन करो।।७१।।

धर्म एव सदा त्राता, जीवानां दुःख संकटात्।
तस्मात् कुरूत भो! यत्नं, तत्रानंत सुखप्रदे।।७३।।

जीवों को दुःख संकटों से रक्षा करने वाला एक मात्र धर्म ही है। इसलिए अनंत सुख को देने वाले उस धर्म में ही प्रयत्न करो अर्थात् उस अनंत सुखदायी धर्म को धारण/पालन करने हेतु प्रयत्नशील होओ।।७३।। चूंकि प्रसन्न मन से आपने धर्म नही पाला है, इसी से आप दुःखी हैं।।७४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्वजन्मों में विषयान्ध होकर तुमने दारूण कर्मबन्ध किए हैं। उनके उदय में आने पर अब (धर्म के सिवाय) अन्य कोई तुम्हारा रक्षक नही हैं।।७४।। जिसने भोगोपभोग युक्त स्वर्ग में भी तृप्ति/संतोष नहीं पाया, वह इस मनुष्य भव में क्या संतोष पायेगा।।७६।। हलाहल विष पीना अच्छा है पर अनंत भवों तक दुःख देने वाले भोगों को भोगना ठीक नहीं है।।७७।। इन्द्रियोद्भव सुख, सुख नहीं अपितु सुखाभास है, क्षणिक है। कर्मों का बंध कराने वाला है।।७८।।

इन्द्रियाणि वशे यस्य यस्य दुष्टं न मानसम्।
आत्मा धर्मरतो यस्य सफलं तस्य जीवनम्।।

उसी का जीवन सफल है/सार्थक है, जिसकी इन्द्रियाँ वश में हैं, जिसका मन दुष्ट नहीं है और जिसकी आत्मा धर्म में रत है।।८५।।

किंपाकस्यफलं भक्ष्यं कदाचिदपि धीमता।
विषयास्तु न भोक्तव्या अपि स्युः सुपेशलाः।।८६।।

बुद्धिमान द्वारा कदाचित् किंपाकफल का भक्षण कर लेना अच्छा है पर सुमनोहारी विषयों को भोगना कदापि अच्छा नहीं है।।८६।। अर्थात् बुद्धिमान पुरूष किंपाक फल का भक्षण भले ही कभी कर लेवे परन्तु सुपेशल विषयों का भोग/सेवन कदापि न करे।८६।।

स्त्रीजन्य सुख (कामसेवन) तो दुःखों का बीज और संसार–वर्द्धक है। यह दुःखोत्पादक महाव्याधि है। इसके सेवन से कभी तृप्ति नहीं होती। काम मोहित प्राणी सदा संसार में भटकता है। अतः समझदार जन इसे छोड़ते हैं।।६०–६५।।

दुःखानामाकरो यस्तु संसारस्य च वर्द्धनः।
स एव मदनो नाम नराणां स्मृतिसूदनः।।६६।।

मद मदन दुःखों की खान, संसार–वर्द्धक और लोगों की स्मृति का विलोपक है।।६६।। इस कामरूपी सर्प को वश में करना शक्य नहीं है।।६७।।

दुष्टा चेयमनंगेच्छा सेयं संसार–वर्द्धिनीः।
दुःखस्योत्पादने शक्ता, शक्ता वित्तस्य नाशने।।६८।।

यह दुष्टा कामेच्छा संसार को बढ़ाने वाली, दुःखों की उत्पादक और धन की नाशक है।।६८।। उन बुद्धिहीनों को धिक्कार है जो पाप करके अपने को संसार सागर में गिराते हैं।।६६।। हृदय स्थित स्मर–शल्य प्राणियों को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संताप देती है। अतः जिनोक्त मार्ग में सदा लगे रहकर सदाचार पालो, जिससे यह स्मर शल्य खण्ड–खण्ड हो जाए।।१०२।।

यह काम चित्त का दूषक, सद्गति का नाशक, सदाचार विध्वंसक और अनर्थों की परम्परा को बढ़ाने वाला, दोषों की खान, गुणों का विनाशक, पाप बन्धु और आपदाओं का संगम–स्थल है। यह पिशाच सारे जगत को संसार सागर में चक्कर लगवा रहा है।।१०३–१०५।। कामीजन, सदाचार, गुरूवाणी, लज्जा, गुण समूह और चित्त के स्वास्थ्य को भी छोड़ देते हैं। उसी से मोक्षाभिलाषी मुनिश्रेष्ठों द्वारा काम सदा हेय/त्याज्य है।१०७–१०८।। काम और अर्थ विशुद्ध ध्यान के अवरोधक हैं। काम सेवन से पापबंध होता है और नरक में पतन भी होता है। ज्ञानोपयोग के प्रभाव से सुदारूण कामदाह का भी शमन हो जाता है।जैसे मंत्रों के प्रभाव से विष वेदना दूर हो जाती है। उपवास, अवमौदर्य, रास परित्याग, अस्नान, ताम्बूल वर्जन, इच्छा–निरोध और भोगो का स्मरण नही करना, ये मदन–शत्रु की निर्जरा के उपाय है।।११५–११६।।

कामदाहो वरं सोढ्ढुं, न तु शीलस्य खण्डनम्।
शीलखण्डन–शीलानां, नरके पतनं ध्रुवम्।।११०।।

काम–दाह सहना अच्छा है, पर शील का खण्डन अच्छा नहीं। शीलखण्डन करने वालों का नरक में पतन निश्चित है।११०।। कामदाह की पीड़ा अल्प समय ही दुःख देती है, परंतु शील–खण्डन की वेदना को तो भवों भवों तक सहना पड़ता है।११२। सुरक्षित सुदृढ़ ब्रह्मचर्य ही चारित्र का सार है जो देवों द्वारा भी सुपूजित है।।११६।।

प्रमदा/कामिनी – लावण्य–जल–वाहिनी प्रमदा(कामिनी) तो दुःख रूप सैकड़ों भयंकर उर्मियों(लहरों) से परिव्याप्त वैतरिणी नदी ही है संसार की बीज, दुःखों की राशिभूत, पापों की निधान(खान) हैं। ये लोगों के यौवन और धन का हरण करती हैं। ये नरकावर्तों में गिराने वाली, स्वर्ग–मार्ग की अवरोधक सुदृढ़ अर्गला और बड़ी अनर्थकारी हैं।।१२०–१२३।। सैकड़ों कृमि जाल से परिव्याप्त, दुर्गन्धित मल से भरी, चमड़ी मात्र से ढकी स्त्रियों की इस काया में रमणीयता कैसी? अर्थात् ऐसी स्त्री काया रमणीय नहीं हो सकती।।१२४।। कर्मशत्रुओं को जीतने के इच्छुक बुद्धिमन्त जन अपनी श्रेष्ठ बुद्धि से संसार शरीरे भोगों में निर्वेद वैराग्य भावना को भाओ। जब तक मौत न आवे तब तक कर्मों के क्षय करने में मन लगाओ। इस दुर्लभ नर–भव को पाकर स्नेहमयी जाल को छेदो/भेदो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम और अर्थ की संगति छोड़ो और सदा ही धर्मध्यान को ध्याओ–भजो।।१२७–१२६।।

सद्वृत्ताद् भ्रष्टचित्तानां विषयासंग संगिनाम्।
तेषामिहैव दुःखानि, भवन्ति नरकेषु च।।१३१।।

विषयों में लिप्त और सच्चारित्र से भृष्ट जनों को इस लोक में तो दुःख होते ही हैं, नरकों में भी होते है।१३१।। महापुरूषों में भोगों के प्रति गृद्धता नहीं होती। देखो चक्रवर्ती सारे साम्राज्य और भोगों को तृणवत् त्यागकर मुनिदीक्षा ले लेते हैं।।१३६।। आत्मविद् मोक्षाभिलाषियों द्वारा सदा ही ऐसा काम किया जाना चाहिए,जिससे संचित कर्मो का क्षय होवे और नये कर्मो का बंध न होवे।।१४०।। संसार में ऐसा कोई सुख नहीं है जिसे देव, मनुष्य, त्रिर्यंच गतियों में भटकते हुए इस जीव ने अनेक बार न पाया हो।।१४७।। चतुर्गति के नाना प्रकार के भयंकर दुःखों को भोगते हुए तथा संसार को विनश्वर जानते हुए भी तुम वैराग्य को प्राप्त नहीं हुए। तुम्हारे जीवन को धिक्कार है।।१४६।।

जीवितं विद्युतातुल्यं संयोगाः स्वप्नसन्निभाः।
संध्यारागसमः स्नेहः शरीरंतृण–बिन्दुवत्।।१५०।।
शक्रचाप समाःभोगाः सम्पदोजलदोपमाः।
यौवनं जलरेखेव, सर्वमेतदशाश्वतम्।।१५२।।

जीवन बिजली के समान क्षणिक है, संयोग स्वप्नसदृश्य मिथ्या(झूठे) हैं, स्नेह संध्याराग की तरह क्षण–स्थायी है और शरीर तृण और बिन्दु की भांति तुच्छ है।।१५०।। भोग इन्द्रधनुष जैसे, सम्पत्तियाँ मेघ जैसी और यौवन जल की रेखा की भांति अशाश्वत/क्षणिक है।।१५१।। शास्त्राभ्यासी कौन बुद्धिमान जन व्याधि से पीड़ित नश्वर अपवित्र इस देह में रति/प्रेम करेगा? अर्थात् कोई नहीं। चिरकाल से भोजन वस्त्रादि से सुपोषित यह शरीर भी अंत में विकृति को प्राप्त हो जाता है। जो जन्मा है, उसका मरण सुनिश्चित है। अतः बन्धुजन के मरने पर बुधजन शोक न करें। पर कार्यों में संलग्न प्राणी आत्महित से दूर हो जाता है। "सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप के संरक्षण पालन में हीआत्म हित होता है" ऐसा सर्वज्ञदेव ने कहा है।।१५३–१५८।।

रागद्वेषादि मल के त्याग से ही चित्त में निर्मलता आती है। अतः बुधजन सदा ही ऐसा यत्न करें कि विपदाओं में भी चित्त विकृति को प्राप्त न होवे। वे साधु मानस जन धन्य हैं जो बड़ी आपदाओं में भी विकार को प्राप्त नही होते।।१६५–१६६।। संक्लेश दुःख–दायी और कर्मबंध – कारक है। संक्लेश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिणामों से बंधे कर्म करोड़ों भवों तक दुःख देते हैं। अतः संक्लेश नहीं करना चाहिए। पूर्वकर्मों के नियोग से ही आपदाऐं आती हैं। अतः आपदाओं में भी धीरज रखना ही श्रेयकर है/परं त्राण है। महापुरूष सम्पत्ति में विस्मित और विपत्ति में दुखित नहीं होते हैं। विशुद्ध परिणाम से ही शांति मिलती है। संक्लिष्ट चित्त से नहीं। अतः तत्त्ववेत्ता जन सम्पत्ति और विपत्ति में भी समभाव ही रखते हैं।

उन्मार्ग की ओर उन्मुख मन को सदा रोकें। स्वयंकृत तीव्र कर्मो का विपाक होने पर उसका फल मिलता है। अतः संचित बद्ध–कर्मो का क्षय/शोधन करते रहें।

क्षय शोधन न करने से कर्म और उनकी तीव्रता निरंतर बढ़ती जाती है जो बाद में बड़ा दुःख/संताप देती है और करोड़ों जन्मों तक दुःख उठाते हैं।।१७६–१८०।।

दूसरों को ठगने हेतु जो मायाचारी करते हैं, वे इस लोक व परलोक में स्वयं दूसरों से ठगे जाते हैं।।१८१।। नर जन्म पाकर भी जिन्होंने सत्कार्य नहीं किया और मर गये उनका जीवन निष्फल हुआ। करोड़ों भवों में जो विपुल कर्मों का संचय किया है उसे यदि छिन्न करने में तुम समर्थ नहीं होते तो तुम्हारा जन्म निष्फल है।।१८८।। उसी बुद्धिमान महापुरूष का जन्म सफल है जिसने अपने घोर पाप कर्मो को सत्कार्यों से अच्छी तरह पकाया है, निर्जीर्ण किया है।।१९१।। धर्मसंचय और कर्मक्षय में साधु/पुरूषों का चेष्टित मन सदा ही पापनाशक होता है।।१९४।।

सुपात्र – समता में जिनका आग्रह, विषयों में अनासक्ति तथा कर्मशत्रुओं से विग्रह/विरोध है, वे सुपात्र हैं।।२००।। जो परिग्रह रहित होते हुए भी चारित्र से आढ्य(धनी) नहीं हैं, वीतरागी होते हुए भी शास्त्रों(श्रुत) में प्रीति रखते हैं, तथा बाह्यय आभूषणों से रहित होते हुए भी तप से विभूषित हैं वे योगी ही पात्र(सुपात्र) हैं।

निःसंगिनोऽपि वृत्ताढयाः निःस्नेहा श्रुतिप्रियाः।
आभूषापि तपोभूषास्तेपात्रं योगिनः सदा।।

जिन मनीषियों ने स्वकार्यो के प्रति ममता का सदा त्याग किया है और जो सर्व प्राणियों(जीवों) के कल्याण में संलग्न हैं, ऐसे संयतात्मा ही सत्पात्र हैं।।२०२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शूरवीर कौन – **परीषहजये शूराः शूराश्चेन्द्रियनिग्रहे।**
कषायविजये शूराः तेशूराःगदिताः बुधैः।।२१०।।

विद्वानों ने उसे ही शूरवीर कहा है जो परीषहों को जीतने में शूर हैं, जो इन्द्रियों के निग्रह (दमन) करने में शूर हैं जो कषायों को जीतने में शूर हैं।।२१०।। अपने चरित्र में सुदृढ़ मन बुद्धि वाले जो जन नये कर्मों को बांधते है और विशुद्ध ध्यान से पुराने कर्मों को निजीर्ण करते हैं। संसार से निवृत्त हैं, शिवसुख पाने को उत्सुक हैं, सज्जनों ने उन्हें ही **'प्राज्ञ'** कहा है। शेष तो स्वार्थ के वंचक (ठग) हैं।।२११–२१२।। परीषह रूप शत्रु के महासैन्यदल को दलने में समर्थ और कषाय विजयी ही(सच्चे) शूर कहे जाते हैं।।२१५।।

उन्हीं का जीवन श्लाघ्य(प्रशंसनीय) है –जो संसार से भयभीत हैं, अन्तरंग/बाह्य परिग्रह को जिन्होने त्याग दिया है, और जो विषय भोगों से उदसीन हैं, तथा जो शत्रु मित्र में , मानापमान में, लाभ–अलाभ में, लोहा–कंचन में सदा समभाव(समान) रखते हैं। जो सम्यक्त्व भावना से शुद्ध, ज्ञानसेवा(श्रुताभ्यास) में तत्पर, चारित्र पालन में सुदृढ़ और अक्षय–सुख के अभिलाषी हैं।।२१६–२२१।। ऐसे श्रमण को देखकर जो नष्ट–बुद्धि उन्हें मान्यता नहीं देता,वह नर जन्म के फल को सर्वथा नष्ट करता है।।२२२।।

जो महाधिप रागादिवर्द्धक परिग्रह को छोड़कर दृढ़व्रती, धीर और निर्मल–चित्त होकर तप करते हैं, संसार से उद्विग्न चित्त, मोक्ष सुखाभिलाषी और सर्वपरिग्रह से रहित हैं, उनका जीवन भी धन्य है।

निर्ममत्व – "जिसे छोड़कर जाना ही है, वह अपना कैसे हो सकता है" ऐसा सोचकर विद्वान शरीर में भी आशा का परीत्याग करें।।२२६।। शरीर मात्र के संग(परिग्रह) से आरम्भ बढ़ता है। वह अशाश्वत(क्षणिक) है। विद्वान उसमें रति, (प्रेम)करना छोड़ें, क्योंकि संग–परिग्रह से गृद्धता बढ़ती है, गृद्धता से संचयवृत्ति, संचय से लोभ और लोभ से संसारवर्द्धन होता है। (पर पदार्थो में) ममत्व से लोभ, लोभ से राग, राग से द्वेष, और द्वेष से दुःखों की परम्परा बढ़ती है इसीलिए बुद्धिमानों ने निर्ममत्व को परम तत्त्व, परम सुख और मोक्ष का परम बीज कहा है। निर्ममता में ही सदा सुख और संसार का अन्त है।।२३१–२३५।।

सभी अनर्थों की जड़ अर्थ है – अर्थो मूलमनर्थानां, अर्थो निर्वृतिनाशनम्।
कषायोत्पादकश्चार्थो, दुःखानां च विधायकः।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ(धन) सभी अनर्थों की जड़, निवृति(वैराग्य)का नाशक, कषायों का उत्पादक और दुःखों को देने वाला है यह धन(भौतिक सम्पदा) संसारी प्राणी द्वारा अनेकों बार प्राप्त की गई और छोड़ी गई है कोई भी इसे लेकर परलोक नहीं गया अपितु धन की तृष्णाग्नि में संतप्त होकर दारूण कर्मों को बांधा है। तृष्णान्ध जन कभी भी अपने हिताहित को नहीं देखते, परन्तु बुद्धिमान लोग संतोष रूपी अंजन को लगाकर देखते हैं अर्थात चतुर लोग सारभूत संतोषरत्न लेकर मोक्षमार्ग पर चल कर सुखी होते हैं। धन संचय की तृष्णाग्नि में जलते मनुष्यों को सुख कहाँ?वे तो सदा दुःखी ही रहते हैं।

सन्तुष्टाः सुखिनोनित्यं, असन्तुष्टाः सुदुःखिताः।
उभयोरन्तरं ज्ञात्वा संतोषे क्रियतां रतिः ।।

संतोषी प्राणी सदा सुखी रहते हैं और असंतोषी बहुत दुःखी। इस अंतर को भलीभांति जानकर संतोष में ही प्रीति करो,संतोष धारण करो। धनाशा को दूर से ही छोड़कर संतोष धारो नहीं तो दीर्घ संसार में भटकोगे। तृष्णाग्नि के संताप को संतोष रूपी जल के बिना शांत करना संभव नहीं है। जिन्होंने संतोष पा लिया, उन्होंने निर्वाण सुख का साधन पा लिया। देखिए– दि० साधु लोभ के नाश के लिए संतोष को, सुख शांति के लिए धैर्य को और तपो वृद्धि के लिए ज्ञान को धारण् करते हैं।।२४८।।

ज्ञान–दर्शन–सम्पन्न एक ध्रुव आत्मा ही मेरी है शेष सभी बाह्य पदार्थ तो हमें संयोग से ही मिले है। इनके संयोग से ही इस जीव ने दुःख परम्परा पाई है। अतः सभी संयोग सम्बन्धों को मन वचन काय से त्यागो। परिग्रह संग्रह से रागद्वेष होते हैं और ये रागद्वेष ही भव बंधकारी कर्मों का महाबंध करते हैं। रागद्वेष से ही चारों ओर से कर्म आकर आत्मा से बंधते हैं। अपना हित चाहते हो तो संसार से भय, जिनशासन में प्रीति तथा पूर्वकृत पापों के प्रति शोक, पश्चाताप(प्रायश्चित) करो।

कुसंगति सर्वदा ही त्याज्य है, क्योंकि यह दोषकारी है। गुणीजन भी कुसंगति से लघुता को प्राप्त हो जाते हैं। अतः सदा ही सत्संग करना चाहिए जो सुखकारी है और इससे गुणहीन भी गुरूता को प्राप्त होता है।।२७०–२७१।।दुष्टों की संगति से साधु पुरूषों की चेष्टा भी मलिन हो जाती है। लोक में सुगुण ही पूज्य व कल्याणकारी हैं।कुलहीन मानव भी सद्‌गुणों से गुरूता को पा लेता है और सुकुलोत्पन्न व्यक्ति भी निर्गुण होने से लघुता को प्राप्त हो जाता है। सदाचारी देव पूज्य होता है और दुराचारी सर्वत्र लोक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निदिंत होता है।सच्चारित्र को अंगीकार कर उसे भंग करना राज्यपद छोड़कर नौकर बनने जैसा है।।२७७।। शीलधारियों का सम्मान मनुष्य और देव भी इसलोक और परलोक में सदा करते हैं। शीलधारियों की तत्क्षण मौत होना अच्छा है परन्तु शीलहीनों का कल्पांत तक जीवित रहना अच्छा नहीं। धनहीन परन्तु शील(चारित्र) में धनी सारे संसार में पूजा जाता है। तथा धनवान होने पर भी चरित्रहीन व्यक्ति तो स्वजनों द्वारा भी तिरस्कृत किया जाता है। अर्थात् स्वजन भी उसकी अवज्ञा करते हैं।।२८२।।

धनहीन भी सदाचार से निर्वाणपने को पा लेता है पर असदाचारी व्यक्ति चक्रवर्ती होकर भी दुःखों की परम्परा को ही बढ़ाता है।।२८४।। विवाद (कलह,लड़ाई) निश्चय से धर्म काम अर्थ का नाशक है। वे मनुष्य धन्य हैं जो सदा क्षमा से आपूरित रहते हैं और लोभी ठगों द्वारा ठगाये जाने पर भी उनसे विवाद नहीं करते। देखो, बड़े बड़े धनी लोग भी विवाद में पड़कर नष्ट हो गये। अतः धन छोड़ देना/त्याग देना अच्छा है पर खलों के साथ विवाद करना अच्छा नहीं है। अहंकार की विनाशकता और बोधि की दुर्लभता को बतलाते हुए धीमानों को प्रमाद न करने की प्रेरणा दी गई है और कहा है कि विषयलोलुपी, मूर्ख, प्रमादी व्यक्ति चिरकाल तक नरकों में और त्रिर्यंचों में जाकर दुःख भोगते हैं।।२९५–३००।।

आत्माधीन और पराधीन सुख – आत्माधीन के सुख को ही बुधजनों ने सुख माना है। पराधीनसुख सुख तो सुख नहीं, अपितु दुःख ही है। पराधीन सुख तो महाप्रतापी राजाओं के लिए भी कष्ट रूप ही है। अतः आत्मिक(आत्मोत्थ) सुख को ही प्राप्त करो। निःसंगता से मोक्षसुख और संग से संसार दुःख प्राप्त होता है। उत्तम चरित्र का फल ज्ञान ही है, विशिष्ट विभूति नहीं। विभूति से तो कर्म बंधते हैं और सच्चारित्र से कर्म छूटते है खिरते हैं। विद्वानों ने संवेग को ही श्रुत का श्रेष्ठ कार्य कहा है।(श्रुताभ्यास से संवेग जाग्रत होता है) लेकिन जो श्रुतज्ञान से धन चाहते हैं वे तो मानो अमृत से (अमृत के बदले) विष ही चाहते है। श्रुतज्ञान और सच्चारित्र के समान परम दुर्लभ धन जिनके पास हैं वे ही वस्तुतः धनी कहे जाते हैं। शेष जन तो निर्धन ही हैं। देहधारी की शुद्धि शीलव्रत पालन से ही होती है। पृथ्वीतल के सभी तीर्थों में स्नान करने से नहीं। रागादि के त्याग से ही चित्त में निर्मलता आती है,जल में स्नान करने नहीं। ज्ञानजल के स्नान से यह जीव जन्म–जन्मांतरों में भी निर्मलता पाता है। सत्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से वाणी, ज्ञान से मन और गुरू–सुश्रुषा से शरीर शुद्ध होता है। स्वर्ग तथा मोक्ष सुख पाने में ही मनुष्य जन्म की सार्थकता है, परन्तु विषयाभिलाषी मूढ़ संसारी प्राणी अल्प सांसारिक सुख के वास्ते त्रिर्यंच और नरक गति का पात्र बन जाता है। विषय शत्रु की महासेना को जीतने के लिए जो उद्यमशील नहीं है, उनका जन्म निरर्थक है।

निर्दोष प्रिय वचन ही बोलें, जो मधुर हितकारी और अर्थवान्(प्रयोजनभूत) हो तथा प्राणियों के चित्त को आह्लादित करने वाला हो। प्रिय वचन बोलने से सभी संतुष्ट होते हैं। अतः प्रिय वचन बोलने में दरिद्रता कैसी? व्रत,शील तप, दान,संयम, अर्हत्पूजन, ये सब दुःख निवृत्ति के लिए ही कहे गये हैं।।३२३।।

शास्त्र के सम्बंध में अभिमत –

1. सार समुच्चय शास्त्र जन सामान्य के लिए उपयोगी है।
2. यद्यपि भाषा सरल है, परंतु जो संस्कृत के जानकार नहीं है उनके लिए हिन्दी अनुवाद के साथ इस शास्त्र का प्रकाशित किया जाना आवश्यक है।
3. इस हस्तलिखित शास्त्र में त्रुटियों/अशुद्धियों की अधिकता है। कहीं कहीं कुछ शब्द, कुछ पंक्तियाँ, एक श्लोक भी छूटा है। अतः अन्य प्रतियों से मिलान करके पहले इसे पूर्ण शुद्ध किया जाना चाहिए। तत्पश्चात् इसे मुद्रित कराया जाना चाहिए।
4. शास्त्र वैराग्य–वर्द्धक और संसार से उदासीनता बढ़ाने वाला है।
5. इस शास्त्र की अन्य प्रतियाँ यदि किसी शास्त्र भण्डार में हों तो वे कृपया सूचित करने की कृपा करें ताकि उसे प्राप्तकर इसमें संशोधन किया जा सके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक दुर्लभ दि० जैन मुनि – मूर्ति

श्री कुन्दल लाल जैन

प्रस्तुत मुनि मूर्ति जिसका विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं वह विदिशा (म०प्र०) के बड़े मंदिर, (किले भीतर) की बहुमूल्य धरोहर है। विदिशा की ऐतिहासिक एवं प्रागैतिहासिकता के विषय में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाना जैसा होगा। अतः इतना ही संकेत देना पर्याप्त होगा कि गुप्तकाल तक इसका इतिहास प्राचीन है तब यह जैन संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था। यहॉ कि उदयगिरि की कुछ गुफाओं का इतिहास गुप्तकाल से भी प्राचीन है। प्रागैतिहासिक काल में यह १०वें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ की जन्मभूमि भद्दिलपुर के नाम से प्रसिद्ध रही है अतः इसकी प्राचीनता और पुनीतता का विशेष वर्णन न करते हुए यहां के सबसे अधिक प्राचीन शीतलनाथ दि० जैन बड़ा मंदिर के विषय में कुछ चर्चा करूंगा। जहॉ प्रस्तुत अति प्राचीन दुर्लभ मुनि मूर्ति विराजमान है।

प्रस्तुत बड़े मंदिर की प्राचीनता के द्योतक कुछ आलेख यहॉ उत्कीर्णित हैं जो निम्न प्रकार हैं – प्रारम्भ में संवत् १७५६ में यहां एक चैत्यालय की स्थापना की गई थी जो धीरे२ बढ़ते हुए आज इतने विशाल परिसर का इतना बड़ा भारी जिनालय बन गया है जिसमें बहुत सी ऐतिहासिक सम्पदा के साथ२ अनेक बहुमूल्य पाण्डुलिपियों का विस्तृत ग्रंथागार विद्यमान है जो अन्वेषणीय है। समवशरण के दक्षिण द्वार के उपर छोटे आले में उत्कीर्ण निम्न प्राचीन आलेख इस मंदिर की प्राचीनता को प्रदर्शित करता है :–

" आदि जिन सं. १७५६ वर्षे बैसाख सुदी १० शनीचर वासरे श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री सुरेन्द्रकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री चंद्रकीर्ति देवास्तच्छिष्य ब्र. शांतिदास्य सुतं पं. भागीरथेन ३ दम् चैत्यालयं कारापितम्। वधीतं जिनदासेन शुभं भवेत् कल्याणमस्तु श्री गुरू चरण वंदना त्रिकालं पणमति।"

इस आलेख से इस मंदिर की प्राचीनता ३०० वर्ष से कुछ अधिक आंकी जाती है। इसी वर्ष के दूसरे आलेख से इस चैत्यालय में कुछ और भवन निर्माण बंगला आदि बनवाने का उल्लेख है जो निम्न प्रकार है :–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

" श्री आदि जिन प्रशस्ति वंदनारव्यात् चतुर्विंशति सं. १७५६ वर्षे वैसाख सुदी १० शनिचर वासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री धर्मकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री पद्यकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री जगतकीर्ति भ० श्री सकलकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री त्रिभुवनकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री चंद्रकीर्ति देवास्तच्छिष्य ब्र. शांतिदास्य सुतं पं. भागीरथ पं. सभाचंद्र बडकुर नंदलाल भ्राता लाल भगवंतराय बड़कुर गोरेदास श्यामदास सिंघई लालमनि व बंसीदास भैया टोडरमल पटेल हंसराज भैया.........दास बनिए.........बगुला बनाई हंसराज व श्यामदास।"

इसके अतिरिक्त इसी तिथि का एक ओर आलेख है जिसमें भट्टारक नामावली के अतिरिक्त कोई खास सार गर्भित बात का पता नहीं चलता है और बहुत अंश त्रुटित भी है अतः लेख के कलेवर वृद्धि के भय से उसे यहां नही दे रहा हूँ।इन तीन आलेखों के अतिरिक्त एक आलेख सं. १७७० का तथा दूसरा १७६० है जिनसे विदित होता है कि यह स्थान बलात्कर गण की जेरहटशाखा के भट्टारकों के वर्चस्व वाला रहा है। इस मंदिर की प्राचीनता के बाद अब हम अपने मूल विषय मुनि मूर्ति की चर्चा करेंगे।

जैन शास्त्रों में आगम परम्परा के अनुसार केवल तीर्थंकर प्रतिमाऐं ही निर्मित होती हैं। कलापक्ष की दृष्टि से यक्ष यक्षिणी नैगमेष आदि की मूर्तियां भी निर्मित होती हुई इतिहास और पुरातत्त्व में उपलब्ध होती हैं पर ऐसी मूर्तियां अपवाद स्वरूप ही उपलब्ध होती हैं अतः इन्हें दुर्लभ कहा जाता है। इसी तरह की एक अष्टमुखी चन्द्रप्रभु भगवान की मूर्ति प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम लंदन में है।

प्रस्तुत मुनि मूर्ति कृष्ण पाषाण की निर्मित है जिसकी ऊंचाई लगभग दो फुट तथा चौड़ाई लगभग एक फुट है। यह मूर्ति नंदीदेव के शिष्य मुनि महाकीर्ति की है। जिन्होंने सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण किया था संभवतः इसी उपलक्ष्य में इस मूर्ति का निर्माण हुआ हो। इस मूर्ति के सिर पर एक तीर्थंकर प्रतिमा विराजित है, मूर्ति के एक कंधे से दूसरे कंधे तक अर्धचन्द्राकार रूप में तीन पंक्तियों का महत्त्व पूर्ण आलेख है इससे कुछ तथ्य उजागर होते है। इसका निर्माण चैत वदी ४ सं. १२४४ में हुआ था पर तिथि का अंकन संलग्न चित्र में पता नहीं चलता है संभवतः तिथि का अंकन पृष्ठ भाग में हो। मूर्ति दिगम्बर अवस्था में खड़ी हुई अंकित है तथा हाथ सामने अंजलि मुद्रा में जुड़े हुए हैं। दोनों हाथों पर पिच्छी झूल रही है जो मयूर पिच्छिका जैसी नही लगती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपितु धनुर्राकार जैसी लग रही है इस पिच्छी से अनुमानित होता है कि मुनि श्री संभवतः यापनीय संघ से संबंधित रहे हैं। बायें पार्श्व में एक गोल प्रस्तर खण्ड पर कमण्डलु रखा है जिसका ढक्कन स्पष्ट दिखाई दे रहा है। नीचे दोनों पिण्डलियों के पार्श्व में दो नागधारी पुरूषाकृतियां चित्रित की गई हैं जो संभवतः नाग देवता के रूप में रूपायित किया गया हो। नाग देवता नागों को हाथों में लेकर आधे खड़े और आधे बैठे स्थिति में दिखाये गये हैं। चरणों की अंगुलियां स्पष्ठ रूप से दिखाई दे रही हैं। मूर्ति के चारों ओर कलापूर्ण पुष्प अंकित हैं। दोनों ओर चार चार पुष्प हैं और उपर पांच पुष्प अंकित हैं पुष्पों के नीचे आधे आधे दर्पण स्टेण्ड पर रखे दिखाई देते हैं।

मूर्ति के पाषाण से ऐसा अनुमान किया जाता है कि इसका निर्माण महोबा के आस पास के किसी स्थान पर हुआ हो और वहां से लाकर इस मंदिर में स्थापित की गई हो अथवा विदिशा में किसी स्थान विशेष की खुदाई में प्राप्त हुई हो इस मूर्ति के तथा तीर्थंकर प्रतिमा के एवं नाग देवता के कानों की लम्बाई निश्चित ही किसी स्थान विशेष की कला द्योतित करती है। मुनि महाकीर्ति को जैन इतिहास में कोई भी कहीं भी स्थान प्राप्त नहीं है पर इस मूर्ति ने जैन पुरातत्त्व में अपना महतीय स्थान बना लिया है। मनीषी पाठकों से नम्र अनुरोध है कि इस मूर्ति के इस आलेख को गम्भीरता पूर्वक पढ़े और इसमें कुछ और गूढ़ रहस्य ढूंढ़ सके तो जैन पुरातत्त्व की कुछ महतीय उपलब्धियां प्राप्त हो सकेंगी। यह आलेख मेगनी फाईंग ग्लास की मदद से बड़ी सरलता पूर्वक पढ़ा जा सकता है। मैं जो कुछ पढ़ सका हूँ उसे जिज्ञासुओं की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ जो अलमारी वाली वेदी में विराजमान है :—

"संवत् १२४४ वर्षे चैत्र वदी ४ स्वस्ति श्री सी.३. सो नंदिदेवस्य शिष्यो महाकीर्ति मुनि तेन देवतावादि संप्राप्य गुण पु. नि. द्वादस वियेत तपसा नं यसा सल्लेखना कृत्वा आराधना क्रमाग सन्यासं विकाय आनाय कोऊ। तः ततः गुण पुत्रस्ति तस्य गुरू निहपन म सुप्रयोतक्रनु नागेन मूर्ति नि........नापिति महाकीर्तिमुनिः" ।

इस लेख की प्रथम पंक्ति क सी. ३. सो. शब्दों का विस्तृत शब्द क्या हो सकता है कुछ समझ नहीं आया। द्वितीय पंक्ति के 'देवतावादि' शब्द का भी रहस्य ढूंढ़ना है।उसी के आगे "गुण पु. नि. द्वादस वियेत" चौथी पंक्ति में गुण किसी व्यक्ति विशेष का नाम ज्ञात होता है ओर उन के गुरू का नाम निहपन का आभास लगता है अंतिम पंक्ति में "नि.........नापिति" में जो रिक्त स्थान है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह या तो मूर्तिकार का नाम हो सकता है या फिर नागधारी पुरूषाकृतियों से संबंधित कुछ रहस्य छिपा प्रतीत होता है अतः मनीषी विद्वज्जन इस आलेख को अवश्य ही गम्भीरता पूर्वक चिंतन करें और यदि कुछ त्रुटि ज्ञात हो तो मुझे सूचित करें या फिर कुछ गूढ़ रहस्य ज्ञात होते हों तो पत्रिकाओं में उनका विशद विवेचन कर ऐसी दुर्लभ अति प्राचीन मूर्ति के गूढ़ रहस्यों को जन साधारण तक पहुँचाने का कष्ट करें।

अंत में विदिशा के निम्न तीन महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने महत्त्वपूर्ण सहयोग देकर भूली बिसरी महत्त्वपूर्ण सामग्री को प्रकाश में लाने में भरपूर योगदान किया वे हैं वयोवृद्ध विद्वान श्री गुलाब चंद्र जी राजकमल स्टोर्स, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री लक्ष्मीचंद्र जी रसिक और श्री बाबूलाल जी जैन पूर्व रजिस्ट्रार।

सधन्यवाद

❑❑❑

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन शोध संस्थानों की समस्याऐं एवं समाधान

डॉ. अनुपम जैन

'शोध संस्थान' शब्द में चुम्बकीय शक्ति है। यही कारण है कि इस शक्ति से आकर्षित हो हमारे समाजसेवियों एवं विद्वत्‌गणों ने दर्जनों शोध संस्थानों की श्रृंखला सम्पूर्ण देश में स्थापित की है। मैं यहॉ स्वयं को जैन समाज के शोध संस्थानों तक सीमित कर रहा हूॅ। देश के अनेक विश्वविद्यालयों ने भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाणोत्सव के पावन प्रसंग पर जैन चेयर, अध्ययन केन्द्र आदि की स्थापना की।कुछ अन्य विश्वविद्यालयों में पूर्व से ही ऐसे केन्द्र पाली–प्राकृत विभाग, जैन विद्या विभाग या जैन धर्म दर्शन विभाग कार्यरत हैं। इन विभागों एवं चेयर्स ने विगत वर्षों में अनेक महत्वपूर्ण शोधों को सफलता पूर्वक संचालित किया है। अनेक विद्याथियों को प्राकृत भाषा, जैन दर्शन एवं जैन विद्याओं का विधिवत प्रशिक्षण दिया है किंतु अधिकांश जगहों पर स्थिति दयनीय है। सुविधाऐं तो जैंसी – तैंसी हैं ही छात्रों का अभाव है। यह रूझान चिंता का विषय है।तेरापंथ श्वेताम्बर जैन धर्म संघ के आचार्य श्री तुलसी जी की प्रेरणा एवं उनकी सतत्‌ सकियता से राजस्थान प्रांत के लाडनूॅ(जि.नागौर) में स्थापित जैन विश्व भारती संस्थान एक उत्कृष्ट शोधकेंद्र के रूप में कार्यरत है जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मानित विश्वविद्यालय(Deemed University) का दर्जा प्राप्त किंतु छात्रों का अभाव यहॉ भी समस्या है। इस धर्म संघ के श्रमण, श्रमणी एवं साधुगण छात्रों के लगभग अभाव की आंशिक पूर्ति करते हैं। किंतु हम इसके विकास के प्रति आशान्वित हैं। पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान जो अब पार्श्वनाथ विद्यापीठ बन गया है यद्यपि मानित विश्वविद्यालय नहीं बन सका किन्तु प्रो. डॉ० सागरमल के कुशल नेतृत्त्व ने इसने लगभग २ दशक तक अच्छे मानदंड स्थापित किए हैं। स्थानकवासी जैन समाज द्वारा इस विद्यापीठ ने अतीत में जैन–जैनेतर बंधुओं को वाराणसी में अच्छी शोध सुविधाऐं उपलब्ध करायीं हैं। भोगीलाल लहेरचंद जैन प्राच्य विद्या अध्ययन केन्द्र दिल्ली की कार्यशैली भी प्रशंसनीय है। डॉ० विमल प्रकाश जैन के नेतृत्त्व में यह निरंतर प्रगति कर रहा है।

इन प्रारम्भिक चर्चाओं के उपरान्त जैन समाज विशेषतः दि० जैन समाज द्वारा स्थापित शोध संस्थानों की चर्चा करूंगा। अर्हत्‌ वचन के जून ९० एवं सितम्बर ९० के अंकों में मैंने इन शोध संस्थानों की चर्चा की थी। तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत महासंघ द्वारा सद्यः प्रकाशित डाइरेक्टरी *'सम्पर्क'* के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय संस्करण के खण्ड ४ में शोध संस्थान सूचीबद्ध है। इनमें से ३४ दिगम्बर जैन समाज के हैं। सूची निम्नवत है –

1. जैन शोध अकादमी अलीगढ़
2. श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध केन्द आरा
3. प्राकृत ज्ञान भारती एजुकेशन ट्रस्ट बेंगलौर
4. धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान बड़ौत/जयपुर/उदयपुर
6. मुनि विद्यापीठ शोध संस्थान बड़ौत
6. डॉ.महेन्द्र कुमार जैन अध्ययन केंद्र पो. – भगवॉ, जिला– छतरपुर(म०प्र०)
7. अनेकांत ज्ञान मंदिर(शोध संस्थान) बीना जिला – सागर (म०प्र)
8. कुन्दकुन्द भारती शोध संस्थान नई दिल्ली
9. प्राणावाय शोध संस्थान दिल्ली
10. प्राकृत अध्ययन केन्द्र कुन्दकुन्द भारती नई दिल्ली
11. सहजानंद इंस्टीट्यूट फॉर परफेक्सन दिल्ली
12. वीर सेवा मंदिर नई दिल्ली
13. निर्मल ज्ञान केंद्र पो. गिरनार जि. जूनागढ़(गुज.)
14. दिग० जैन त्रिलोक शोध संस्थान जम्बूद्वीप हस्तिनापुर जि० मेरठ (उ०प्र०) 250404
15. गणिनी ज्ञानमति शोधपीठ दि० जैन त्रिलोक शोध संस्थान जम्बूद्वीप हस्तिनापुर जि० मेरठ (उ०प्र०) 250404
16. कुन्दकुन्द ज्ञानीठ (शोध संस्थान) इन्दौर
17. उपाध्याय गुप्तिसागरसाहित्य संस्था इन्दौर
18. आचार्य विद्यासागर शोध संस्थान जबलपुर
19. अपभ्रंश साहित्य अकादमी जयपुर
20. महावीर ग्रंथ अकादमी जयपुर
21. साहू जैन रिसर्च इंस्ट्रीट्यूट कोल्हापुर जिला – नागौर (राज.)
22. तीर्थंकर महावीर स्मृति केन्द्र (शोध केंद्र) लखनऊ
23. उत्तरप्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान लखनऊ
24. रमारानी जैन शोध संस्थान जैन मठ मूढ़बद्री जिला हासन (कर्नाटक)
25. सन्मति शोध संस्थान नागपुर
26. जैन केन्द्र रीवा (म०प्र०)
27. सिं. पं० फूलचंद शास्त्री फाउण्डेशन रूड़की
28. पारस शोध संस्थान सागर (म०प्र)
29. National institute of prakrit studies and research shri Dhaval tirtham, jain math **SHRAVANBELAGOLA 573135** Dist- Hassan (Karnataka)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

30. jain Adhyana samsthan
(institute of jain studies)
SHRAVANBELAGOLA-573135
Dist-hassan (karnataka)

31. स्याद्वाद शोध संस्थान
सोनागिर जिला– दतिया (म०प्र०)

32. प्राकृत अध्ययन प्रसार केन्द्र
उदयपुर (राज.)

33. प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोधसंस्थान
वैशाली–844128जि०–मुजफ्फरनगर
(बिहार शासन द्वारा स्थापित)

34.श्री गणेशवर्णी दि. जैन संस्थान (शोध)
वाराणसी – 221 005 (उ०प्र०)

इस सूची को पढ़कर आपका मस्तकं गर्व से ऊंचा उंठ जायेगा किन्तु यदि आप इन शोध संस्थानों में. से अनेकों की वास्तविकताओं को जानते होंगे या जानोगे तो निश्चय ही आपको दुख होगा। कई शोध संस्थानों को तो उनका पड़ोसी भी नहीं जानता क्योंकि उनका कोई कार्यालय भवन नहीं है। कोई बोर्ड भी नही है। यहॉ तक की उस नगर में रहने वाले विद्वान भी नहीं जानते। बस वहॉ रहने वाले स्वाध्यायी श्रावक या विद्वान की इच्छा बनी और उसने लैटर पैड छपवा लिया। भेंट में प्राप्त २००–४०० पुस्तकों एवं स्वयं की रूचि के कारण क्रय की गई पुस्तकें ही उस शोध संस्थान (?) की सम्पत्ति हैं। किसी मुनिराज की प्रेरणा से एवं उनके भक्त द्वारा प्रदत्त राशि से प्रकाशित होने वाली पुस्तक में उस शोध संस्थान का नाम चल गया बस इतना ही काफी है। सम्बद्ध विद्वान उसके निदेशक तो रहेंगे ही। देश के कुछ प्रसिद्ध शोध संस्थान वर्ष में एक बार आयोजित होने वाली संगोष्ठी एवं कतिपय कुछ भव्य भवनों के निर्माण को ही शोध संस्थान की उपलब्धि बताते हैं। कुछ अन्य केवल कुछ पुरस्कार बॉटकर या प्रकाशनों को लेकर शोध संस्थान का प्रोपेगंडा कर रहे हैं। उसका कार्यालय कहॉ है? कुछ पता नहीं। कुछ शोध संस्थान मंदिरों के निर्माण एवं सेमिनारों के आयोजन मात्र से ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान रहे है। कुछ भव्य भवनों के निर्माण को ही शोध संस्थान की उपलब्धि बताते हैं। कुछ अन्य केवल कुछ पुरस्कार वितरित कर ही संस्थान चला रहे हैं। मित्रों! मैं न तो नकारात्मक सोच का व्यक्ति हूँ और न केवल उसके आदर्श की काल्पनिक दुनिया में जीता हूँ अत: कोई काल्पनिक बात भी नही लिख रहा। लेकिन इसका निदान क्या है? निदान है, सर्वप्रथम तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1. शोध संस्थान की स्थापना एवं संचालन किसी औषधालय, धर्मशाला, गौशाला, विशाल मंदिर निर्माण से बहुत अधिक कठिन श्रम, समय एवं व्यय साध्य कार्य है।

2. इसमें विपुल प्रारम्भिक एवं तदुपरांत नियंत्रित आवर्ती निवेश की जरूरत होती है।

3. केवल निवेश ही नहीं एवं श्रेष्ठ मानव संसाधन की तलाश में प्रबंधन को सतत् सचेष्ठ रहना पड़ता है एतदर्थ विद्वानों, शोधार्थियों, उच्च अध्ययन केन्द्रों, विश्वविद्यालयों से निकट सम्पर्क रखना होता है।

4. अनेकशः शोध संस्थान के स्थापना कर्त्ता श्रेष्ठी को व्यापारिक हित की अपेक्षा शोध संस्थान के कार्य को वरीयता देनी होती है। संस्थान के काम में समय देने से व्यापारिक कार्य प्रभावित होते ही हैं।

5. शोध संस्थान को १–२ साल में पूर्णतः गति नहीं दी जा सकती, हम चाहे जितना भी निवेश क्यों न कर दें। समय के साथ इसकी पहचान बनती है। विद्वानों की आत्मीयता बनती है। उनका विश्वास जमता है, तब काम आगे बढ़ता है।

6. शोध संस्थान चलाने के लिए एतद् विषयक दृष्टि सम्पन्न, आर्थिक एवं मानसिक दृष्टि से संतुष्ट, समर्पित संचालक भी जरूरी है वह कल्पनाशील तो हो पर यथार्थवादी भी । सामाजिक झंझावातों,आरोपों–प्रत्यारोपों को झेलने, षडयंत्रों को विफल करने, जातिवाद समीकरणों से स्वयं को मुक्त रखकर विनम्र भाव से लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला संचालक ही सफल हो सकता है। यदि वह अभिमानी, लोभी या प्रमादी होगा तो मंजिल तक पहुँचना मुश्किल है। एतदर्थ श्रेष्ठ प्रबंध कौशल भी अपेक्षित है।

जो जैन बंधु संस्कृति, धर्म, दर्शन, के अध्ययन अनुसंधान के क्षेत्र में अपने द्रव्य का सदुपयोग करना चाहते हैं उनसे मेरा निवेदन है कि पहले से ही चल रहे तथा आधारभूत सुविधायों से युक्त संस्थानों को अपना सहयोग विशिष्ट परियोजनाओं / शोधवृत्तियों के माध्यम से देवें। वे प्रकाशन योजनाओं में भी सहयोग दे सकते हैं। विद्वानों से भी मेरा विनम्र निवेदन है कि वे अपनी प्राथमिकताओं को तय कर एक – एक संस्थान को चुन कर अपना नियमित मार्गदर्शन / संरक्षण उसे उपलब्ध करावे, उसके विकास की दिशा तय करें।

आज दि. जैन समाज में देव कुमार जैन ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (जैन सिद्धांत भवन) –आरा, वीर सेवा मंदिर – दिल्ली, जैसी संस्थाओं के माध्यम से डॉ० नेमीचंद जैन शास्त्री, पं० जुगलकिशोर 'मुख्तार', पं० नाथूराम प्रेमी, सदृश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्वानों द्वारा दिये गये योगदान को कौन भुला सकता है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर के कला एवं विज्ञान संकाय में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर से शोध केन्द्र की मान्यता प्राप्त कर मानक स्थापित किए हैं। इसका अपना आधुनिक सुविधायों से परिपूर्ण और सम्पन्न पुस्तकालय है, १२ वर्षों से नियमित प्रकाशित त्रैमासिक शोध पत्रिका अर्हत् वचन है, स्वयं का अतिथिगृह एवं विद्वानों को शोध हेतु अकादमिक आर्थिक सहयोग की योजनाऐं हैं। ज्ञानपीठ से ही सम्बद्ध अमर ग्रंथालय में १०००से अधिक पाण्डुलिपियों का सुन्दर व्यवस्थित संकलन है। इसकी सूची का भी प्रकाशन हो चुका है। अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना में ७००० पाण्डुलिपियों का दुर्लभ संकलन है। शोध ग्रंथालय में लगभग ५००० मुद्रित ग्रंथ हैं। शोध संस्थान् का स्वयं का भवन एवं शोधार्थियों के लिए शोधाध्ययन हेतु अपेक्षित संसाधन उपलब्ध हैं। कुंदकुंद भारती दिल्ली में राष्ट्रसंत आचार्य श्री १०८ विद्यानंद जी की प्रेरणा से प्राकृत अध्ययन केन्द्र का व्यवस्थित विकास किया गया है। वहॉ से त्रैमासिक शोध पत्रिका प्राकृत विद्या का नियमित प्रकाशन सुंदर ढंग से हो रहा है। पूज्य आचार्य श्री की डायरियों में दुर्लभ सामग्री निहित है। दिग. जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर में संचालित जम्बूद्वीप पुस्तकालय में १०,००० से अधिक ग्रंथो का सुन्दर एवं व्यवस्थित संकलन है। पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमति माता जी के हस्तिनापुर प्रवास के समय शोधार्थियों को उनके परिपक्व, गहन, गम्भीर ज्ञान का लाभ मिलता है। प्राकृत अध्ययन एवं समाशोधन केन्द्र श्रवणवेलगोला एवं जैन विद्या संस्थान जयपुर/ श्री महावीर जी में भी अच्छा काम हो रहा है। मैं अब यहॉ किसी शोध संस्थान हेतु न्यूनतम आवश्यकताओं/सुविधायों को सूचीबद्ध कर रहा हूँ–

1. संस्थान का अपना एक भवन होना चाहिए। वह निजी, लीज पर लिया गया या किसी प्रतिष्ठित/समृद्ध संस्था द्वारा उपलब्ध किया गया होना चाहिए।

2. संस्था का अपना व्यवस्थित पुस्तकालय एवं पूर्णकालिक स्टाफ होना चाहिए। एक निदेशक (पूर्णकालिक/अंशकालिक) एक पुस्तकालयाध्यक्ष, कार्यालय प्रभारी एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी होना चाहिए। कार्य की मात्रा के आधार पर पुस्तकालयाध्यक्ष एवं कार्यालय प्रभारी के पद पर या अलग अलग रखे जा सकते हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष को किसी प्रसिद्ध जैन पुस्तकालय में व्यावहरिक प्रशिक्षण दिलाना आवश्यक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3. संस्थान की स्थापना के साथ ही एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में चयन करना अनिवार्य है। वह सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया पर नजर रख कर उसको गति देने एवं समन्वय हेतु उत्तरदायी हो।
4. जैन विद्या के विशेषज्ञ विद्वानों का एक दल संस्थान से सम्बद्ध करना चाहिए यह निदेशक मण्डल के रूप में अन्य रूप में जोड़ा जाना चाहिए।
5. संस्थान का अपना मुख पत्र होना चाहिए जो कम से कम वर्ष में २ बार प्रकाशित हो जिससे संस्थान की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को सम्यक् रूप में प्रचारित किया जा सके।
6. संस्थान का अपना वार्षिकोत्सव होना चाहिए जिसमें संस्थान के शुभचिंतक, निदेशक आदि एक साथ बैठकर इसके विकास की योजनायें बना सके। संस्थान के समर्पित कार्यकर्ताओं का सम्मान भी इस अवसर पर होना चाहिए जिससे वर्ष भर में जो परेशानियॉ/प्रताड़नाऐं कार्यकर्ताओं को उठानी पड़ी उनको विस्मृत कर नये उत्साह से कार्यकर्ता संस्थान के विकास में जुट जाए।
7. संस्थान का अपना अतिथि भवन हो जिससे आने वाले अतिथि निराकुलता से रहें एवं अध्ययन कर सकें।
8. संस्थान का परिसर स्वच्छ, सुंदर, हरा भरा सभी प्रकार के प्रदूषण से यथासंभव मुक्त हो, हरितिमा चित्त को प्रसन्न करती है। संस्थान का पहुॅच मार्ग भी सुगम एवं साफ सुथरा हो।
9. संस्थान का आय व्यय का विवरण पारदर्शी होना चाहिए। क्योंकि किसी भी प्रकार की अनियमितता प्रतिष्ठा को गम्भीर क्षति पहुॅचाती है।

ये कतिपय सुझाव हैं इस सूची को बढ़ाया जा सकता है। किन्तु संस्थान की उक्त बातें अनिवार्य है। मुझे विश्वास है कि नई सहस्राब्दी में दि. जैन समाज को सही अर्थों में कुछ शोध संस्थान उपलब्ध हों। कुछ में ऐसी क्षमताऐं मौजूद हैं जरूरत है उनको विकसित करने की।

❑❑❑

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रुत के प्रचार–प्रसार में जैन समाज के कर्तव्य

(डॉ० कस्तूरचंद जैन 'सुमन' प्रभारी जैन विद्या संस्थान)

जैन संस्कृति में जैन आचार्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसे आचार्यों ने जैन समाज को अपने धर्मोपदेशों में तीन आराध्य बताये हैं– देव, शास्त्र और गुरू। आचार्य समंतभद्र ने देव उसे माना है जो नियम से वीतराग, सर्वज्ञ,आगम का ईश और दोषों से रहित होता है। वे अपनी रचना रत्नकाण्डश्रावकाचार में लिखते हैं–

आप्तेनोच्छिन्नदोषेण सर्वज्ञेनागमेशिना।
भवितव्यं नियोगेन नान्यथा ह्याप्ता भवेत्।।५।।

आचार्य समंतभद्र ने ऐसे आप्त द्वारा कथित, वादी प्रतिवादी द्वारा अखण्डनीय,प्रत्यक्ष अनुमानादि प्रमाणों से विरोध रहित, वस्तु स्वरूप के उपदेशक, मिथ्यामार्ग के खण्डक और सर्व जीव हितकर को शास्त्र संज्ञा दी है –

आप्तोपज्ञमनुल्लङ्घ्यमदृष्टेष्ट विरोधकम।
तत्त्वोपदेश कृत्सार्वं शास्त्रं कापथघट्टनम्।।६।।

आचार्य की दृष्टि में वही तपस्वी गुरू है जो विषयों की आशाओं के वश में नहीं होता, चौबीस प्रकार के परिग्रहों में जिसके कोई परिग्रह नहीं होता, जो सदा ज्ञान, ध्यान और तंप में लीन रहता है –

विषयाशांवशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रहः।
ज्ञानध्यानतपोरक्तस्तपस्वी स प्रशस्यते।।१०।।

दूबकुण्ड प्रशस्ति सम्वत् ११४५ में शास्त्र को श्रुत देवता कहकर उसे पंकज वासिनी कहा गया है तथा उसका उद्गम जिनेन्द्र का मुख कमल बताया गयां है–

श्रीमज्जिनाधिपति सदूदनारविंदमुद्गच्छदच्छतरवोधसमृद्धगंधम्।
अध्यास्य जा जगति पंकजवासिनीति ख्यातिं जगामजयतुश्रुतदेवता सा।।

आचार्य समंतभद्र ने अपने ग्रंथ रत्नकाण्डश्रावकाचार में तीनों आराध्य देवों का कम देव, शास्त्र और गुरू स्वीकार किया है। उनके इस अनुक्रम में शास्त्र का वही स्थान ज्ञात होता है जो स्थान सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र में सम्यक्ज्ञान का है। तीनों में जैसे सम्यक्ज्ञान मध्यदीपक है ऐसे ही शास्त्र – देव और का मध्य दीपक है। आप्त का स्वरूप क्या है? आज शास्त्र ही तो समझाते हैं। इसी प्रकार गुरू की स्थिति है। लोक में कहा जाता है– पानी पीजे छानकर, गुरू कीजे जानकर। अर्थात् हर किसी साधु को गुरू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नही बनाना चाहि। गुरू की क्या विशेषताऐं हैं इसका उल्लेख शास्त्र ही तो करते हैं। अतः वर्तमान में शास्त्र निश्चित ही मध्य दीपक प्रतीत होता है। आप्त वचनों को जिनवाणी संज्ञा दी गयी है।यह जिनवाणी कैसी होती है? इस सन्दर्भ में कवि मंगतराय लिखते हैं –

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन श्री जिन की वाणी।
सप्त तत्त्व का वर्णन जामें सबको सुखदानी।।
इसका चिंतन बार बार कर श्रद्धा उर धरना।
'मंगत' इसी जतन में इक दिन भवसागर तरना।।

इससे यही सार प्रकट होता है कि जिनवाणी नौका के समान है। भवसागर से पार लगाने में यही नौका समर्थ है, अन्य नहीं। जो जीव संसार सागर से पार, होने के इच्छुक हैं, संसार सागर के दुखों से मुक्त होना चाहते हैं, उन्हें चाहिए की श्रुतदेवता की आराधना करें, नित्य स्वाध्याय करें और शास्त्र के अनुसार आचरण भी करें।

शास्त्र सुरक्षित रहेंगे तो कभी न कभी उनके स्वाध्याय का अवसर भी प्राप्त होगा तथा शास्त्र के अनुसार आचरण की प्रवृत्ति भी होगी। अतः आवश्यक है शास्त्र सुरक्षा। जैन समाज का परम कर्तव्य है कि वह प्रथम तो स्वयं स्वाध्याय करे, दूसरे दूसरों को स्वाध्याय के साधन प्रदान करे।

बल ज्ञान और धन ये तीनों शक्तियॉ दुर्जन और सज्जन दोनों को ही उपलब्ध है। दुर्जन इनका उपयोग दूसरों को सताने में करता है और सज्जन सुख पहुॅचाने में। जो दूसरों को सुख देने में शक्तियॉ व्यय करते हैं वे सुखी होते हैं।

इन शक्तियों के सुव्यय के लिए जैन धर्म में चार प्रकार के दान कहे हैं – "औषधि शास्त्र अभय आहारा" अर्थात् औषधिदान, शास्त्रदान, अभयदान और आहारदान। इन चारों में शास्त्रदान महान है। आचार्य कुंदकुंद को इस पर्याय में जो आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ वह पूर्व पर्याय में दिये गये शास्त्रदान का प्रतिफल ही प्रतीत होता है। अतः वे सज्जन हैं और ज्ञानी हैं जो वर्तमान में शास्त्रों के संरक्षण – संवर्द्धन तथा प्रचार प्रसार में अपनी शक्तियों का सदुपयोग करते हैं।

सद्ज्ञानी अपने ज्ञान को उपयोग में लगाते हैं। वे शास्त्रों के संरक्षण – संवर्द्धन तथा प्रचार प्रसार के लिए का सम्पादन कर उनके महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं। देश में अनेक ऐसी पाण्डुलिपियॉ हैं जो इकलौती हैं। यदि समय पर सम्पादित होकर उनका प्रकाशन नहीं हुआ तो सुरक्षा के अभाव में उनसे हाथ धोना पडेगें। अतः ज्ञानियों का इस संदर्भ में योगदान सराहनीय है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार ज्ञानी पाण्डुलिपियों के संरक्षण संवर्द्धन तथा प्रचार प्रसार में सहयोग करते हैं फिर भी संरक्षण जैसा जितना अपेक्षित है वह धन अभाव के कारण हो नही पाता। अतः धनिकों से निवेदन है कि संरक्षण के लिए वे यथाशक्ति सहयोग करें। जिन संस्थाओं ने आगे आकर शास्त्र संरक्षण का कार्य हाथ में लिया है उन्हें हम शास्त्र बांधने के लिए बेष्टन और शास्त्र सुरक्षित रखने के लिए अलमारियॉं दान में दें।

जहॉं तक प्रचार प्रसार का सवाल है इसके लिए भी सामाजिक उदारता की आवश्यकता है। प्रकाशित ग्रंथों के अध्ययन की ओर आकर्षित करने के लिए आज अतीव आवश्यकता है – ग्रंथों को कम मूल्य में उपलब्ध कराने की। इसके लिए उदार हृदय से धन दान देना होगा।

श्रीमंत और धीमंत श्रुत सुरक्षा एवं प्रचार प्रसार रूपी रथ के चक्र हैं। रथ एक चक्र से नहीं चल सकेगा। अतः आज आवश्यकता है दोनों के यथाशक्ति त्याग की और उनके त्याग के प्रचार प्रसार की भी। त्याग में अनुकरण की प्रवृत्ति देखी जाती है। यदि दातारों को यथासमय जानकारी मिलती रहेगी तो प्रेरित होकर वे भी सहयोग करने आगे बढ़ेगे।

जैन धर्म और जैन संस्कृति को बचाना है तो आज श्रुत संरक्षा, संवर्द्धन तथा प्रचार प्रसार में सम्पूर्ण समाज को आगे आना होगा और उदार हृदय से आर्थिक सहयोग देना होगा। वे धन्य हैं जो ऐसा करके अपना जीवन सफल बनातें हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकांत ज्ञान मंदिर में कतिपय विशिष्ट अप्रकाशित ग्रंथ

ब्र. संदीप 'सरल'

सर्वविदित है कि समूचे भारतवर्ष में हमारे शास्त्र भण्डार जैनागम से समृद्ध हैं। आज मुद्रण युग में हस्तलिखित ग्रंथों की घोर उपेक्षा हो रही है, सैकड़ों ग्रंथ तो असूर्यम्पश्य हैं और काल कोठियों में बंद होकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर रहे हैं, ऐसे विक्रम संक्रांति के क्षणों में प्राचीन विलुप्त पाण्डुलिपियों के संकलन, संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रचार प्रसार की दृष्टि से अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना को केन्द्र बनाकर अनेक आचार्यों मुनिराजों के पावन आशीष से एवं अनेक जिनवाणी सपूतों के परम सहयोग से २४ मार्च १६६५ की पावन सुप्रभात की मंगल बेला में "शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान" का प्रणयन किया गया है।

अभियान के अन्तर्गत देश के लगभग दस प्रांतों के लगभग ४०० शास्त्र भण्डारों में ग्रंथ सर्वेक्षण का कार्य सम्पन्न किया गया। जनवरी २००० तक अभियान के ८७ दौरों के माध्यम से ७००० हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को संकलित किया जा चुका है। इन बहुमूल्य पाण्डुलिपियों में अनेक पाण्डुलिपियां अप्रकाशित हैं, जिनका प्रस्तावना सहित संपादन, प्रकाशन ज्ञान अन्वेषण का महत् कार्य अपेक्षित है। प्रस्तुत लेख में अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की सूची संलग्न की जा रही है। विद्वानों से यह अपेक्षा की जाती है कि इन पाण्डुलिपियों के संपादन हेतु अपना मानस बनायें। अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना में विद्वानों के आवास प्रवास हेतु, भोजन आदि का समुचित प्रबंध किया गया। हम विद्वानों से यह अपेक्षा करेंगे कि जो भी विद्वान अप्रकाशित ग्रंथों के सम्पादन, अनुवाद आदि का कार्य करने के इच्छुक हैं वे संस्था से सम्पर्क स्थापित करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रकाशित ग्रंथों की सूची

कं	ग्रन्थ भण्डार क्रं.	ग्रन्थ का नाम	लेखक का नाम	भाषा
१.	३५०८	प्रायश्चित समुच्चय	नंदिगुरू	संस्कृत
२.	३५३४	मंत्र महोदधि	महीधर	संस्कृत
३.	३६०५	सिंहासन द्वात्रिंशतिका		संस्कृत
४.	३६६१	जैनतत्वादर्श	पं. चिमनलाल	संस्कृत
५.	३६७२	प्रतिष्ठायंत्र सचित्र		संस्कृत
६.	३७३५	भुवन दीपक	हेमप्रभसूरि	संस्कृत
७.	३९६०	मनमोहन पंचशति	आनंदघन	हिन्दी
८.	४०३४	सार चतुर्विंशतिका	– –	संस्कृत
९.	४०३६	सुख निधान	पं. जगन्नाथ	संस्कृत
१०.	४०८१	चन्द्रोन्मीलन	– –	संस्कृत
११.	४०८२	मरकत विलास	मरकत कवि	हिन्दी
१२.	४०८४	जिन संहिता	एक संधि आचार्य	संस्कृत
१३.	४१५६	अरिष्टाध्याय	"	प्राकृत
१४.	४१६८	अध्यात्म तरंगनि	आचार्य सोमदेव	संस्कृत
१५.	४२४७	सभा तरंग	– – –	संस्कृत
१६.	४२४६	जिन मुखावलोकन		संस्कृत
१७.	४२५५	व्रत कथाकोश	भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति	संस्कृत
१८.	४२६३	व्रतसार		प्राकृत
१९.	४२७६	होलीधूलिपर्व चरित्र	पं. जिनदास	संस्कृत
२०.	४२८१	ऋषभनाथ पुराण	भट्टा. सकलकीर्ति	संस्कृत
२१.	४२८४	शीलविलास	शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत
२२.	४३००	सप्तव्यसन कथासार	आचार्य. सोमकीर्ति	संस्कृत
२३.	४३६२	सम्मेदाचल मार्ग गमन कथा	पं. गिरधारी लाल	हिन्दी
२४.	४३६६	जयपुर मंदिर जिनयात्रा वर्णन	पं. गिरधारी लाल	हिन्दी
२५.	४३६६	शांति पुराण	असग कवि	संस्कृत
२६.	४४२६	भाव संग्रह	वामदेव	प्राकृत
२७.	४४८८	प्रीतंकर चरित्र	ब्र. नेमीदत्त	संस्कृत
२८.	३५१८.	विद्यानुशसन	– – –	संस्कृत
२९.	३५१६	सम्यक्त्वप्रकाश	पं. डालूराम	हिन्दी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिपिकाल सम्वत्	प्राप्ति स्थल का नाम	पृष्ठ	आकार ल.×चौ.	पूर्ण/अपूर्ण
	श्री सहस्कूट चैत्यालय अजमेर	६०	२३×१४.१३	पूर्ण
१६४१	... ...	१७२	३०×१०.१२	....
१७६२	... ...	५३		....
— —	... ...	१६	२३×१४.१३	....
१६२६	... ...	३८	१६×३०	....
१६८६	... ...	४३	२३×१२.१३	....
१६५६	... ...	६५	२२×१३.१३	....
१६१०	... ...	१६२	१८×१०.११	....
१८७०	"	४६	२०×११.१२	.....
— —	....	२७	२३×१३.१३	....
१६८८	....	२०५	२२×१४.१४	....
१६८८	... .	११५	२३×१४.१३	....
१६८८	....	२४	२२×१५.८	....
१६८८	... .	४६	२१×१३.१३	....
१६८८	... .	४१	२२×१०.१३	....
१८३१	... .	२४१	२१×८.१०	....
१८६३	....	८६	२६×१०.१३	...
— —	... ... "	८६	१८×८.७	....
१८०२	... ...	२४	२५×१०.१५	....
१८०७	... .	१६६	२३×११.१३	...
— —	... .	३६	१६×८.१०	...
१५२६	... ...	७६	२६×६.११	...
१६०७	... .	६	२६×११.१३	...
१६००	... .	२	२६×११.१३	...
१८६२	... .	७५	२६×६.११	....
१७६०	... .	१६	२५×६.१५	...
१७१०	... .	२५	२०×११.११	...
१७१०	... .	३१२	२३×१५.१३	...
१६४६		१५२	२४×६.१२	....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०.	३५३०	बाजीकरण		हिन्दी
३१.	३५५१	चम्पाशतक	पं. चम्पालाल	हिन्दी
३२.	३६००	श्रावककर्म	– – – –	संस्कृत
३३	३६२६	दर्शनसार वचनिका	पं. शिवजीलाल	हिन्दी
३४.	३६५२	पाक्षिक श्रावक चंद्रिका	मरकत रक्त	हिन्दी
३५.	३७२४	माणिकविलास	माणिकलाल	हिन्दी
३६.	३७६०	आनंद वर्द्धन	पं. जौहरीलाल	हिन्दी
३७	३७६४	सूर्यप्रज्ञप्ति		प्राकृत
३८.	३७६५	चंद्रप्रज्ञप्ति	मलयागिरी	प्राकृत
३६.	३८५४	जैनागार शुद्धाम्नाय प्रक्रिया	पं दुलीचंद जैन	हिन्दी
४०.	४०११	पूजासार समुच्चय	इन्द्रनंदी	संस्कृत
४१.	६३	सम्यक्त्व लीला विलास	कवि विनोदी लाल	हिन्दी
४२.	१३३	ज्ञानश्रोदय	चरनदास	हिन्दी
४३.	१६८	उपासकाचार	आचार्य पूज्यपाद	संस्कृत
४४.	२१२	रत्नकरण्डोपासकाचार	ललित कीर्ति	संस्कृत
४५.	२३२	रूपचंद्र शतक	कवि रूपचंद जी	हिन्दी
४६.	६६८	उपदेश शतक	कवि द्यानतरायजी	हिन्दी
४७.	५८१	श्री जी का परिवार		हिन्दी
४८.	८५३	जैन प्रबोध श्रावकाचार		हिन्दी
४६.	६७७	नंद विलास		हिन्दी
५०.	११०२	सुभाषितावली वचनिका	पं. पन्नालाल चौधरी	हिन्दी
५१.	११६४	विद्वज्जन बोंधक		हिन्दी
५२.	१५५१	जीवक्षमावाणी	जयराज	हिन्दी
५३.	१७८८	वचनकोश	पं. बुलाकीदास	हिन्दी
५४.	१८०६	सप्त पदार्थी		संस्कृत
५५.	१८१०	तत्त्वार्थरत्नाप्रभाकर	गणि प्रभाचंद्र	संस्कृत
५६.	१८५५	लङ्घनपथ्य निर्णय		संस्कृत
५७.	१८६७	दृष्टांत शतक		संस्कृत
५८.	१८७२	परमहंसराम		हिन्दी
५६.	१८८१	वीरभाण उदयभाण चरित्र		हिन्दी
६०.	१८६१	रत्नपाल श्रेष्टीरास	ब्र. शांतिदास	
६१.	१६००	आत्मावलोकन स्तोत्र		संस्कृत
६२.	१६०५	आठ कर्म प्रकृति	ब्र. गोकुल जी	हिन्दी
६३.	१६०६	अध्यात्म कल्पद्रुम	मुनि सुन्दर सूरी	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

— —	... .	१०	२४×६.१२	...
— —	....	३६		...
— —	....	८३	१७×८.१२	...
१६२३	... .	६४		...
१६८७	... .	७८	२५×१३.१३	...
१६८३	... .	२६	२३×१५.१३	...
— —	... .	२७	२१×६.८	...
१६३२	... .	३५	२१×७.११	...
१६३२	....	२००	१६×६.१२	...
१६६६	... .	७२	२२×१३.१३	...
१६३३	... .	१०३	२०×६.१०	...
	बसारी से प्राप्त हुई।	१६८	२३×१०.१०	...
	बसारी से प्राप्त।	१४	२०×११.१२	...
	बसारी से प्राप्त।	७	२८×१०.१३	...
१६४६	गौना से प्राप्त।	४२	२३× ६.१२	...
	गौना से प्राप्त।	६	१२× १६.१७	...
१६५५	अन्तौरा से प्राप्त।	२८	१०× १४.१०	...
	नैकोरा से प्राप्त।	८४	१७× १३.१२	...
	बन्ट से प्राप्त।	१०१		...
१६७५	अन्तौरा से प्राप्त।	७७	१४× २७.१३	...
१६५०	भुसावल से प्राप्त।	७५	१५× २८.१२	...
	ब्मराना से प्राप्त।	२५८	१३× २७.१३	...
१६३८	अशोकनगर से प्राप्त।	६	६× १४.१२	
१८४७	महाना से प्राप्त।	१७७	६× २६.११	...
१८४८	भानपुरा से प्राप्त।	७६	८.५× २२.११	...
१७५६	सिरोंज से प्राप्त।	८४	६.३× २१.१३	...
१८६५	भानपुरा से प्राप्त।	१३	१२× २८.५–१४	...
१७६०	भानपुरा से प्राप्त।	१६	६× २०	...
१६३५	भानपुरा से प्राप्त।	३५	१३× २२–११	...
	भानपुरा से प्राप्त।	५१	८× २०–१३	...
१८११	भानपुरा से प्राप्त।	६१	१०.५× १६–१०	...
१८२५	भानपुरा से प्राप्त।	७७	६× २०.५–११	...
	भानपुरा से प्राप्त।	६	६× २२–११	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१६	८.५× २०–१२	...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४.	१६११	धर्मचर्या हुण्डी	पं. गुलाब चंद्र	हिन्दी
६५.	१६४०	अध्यात्म बारहखड़ी		हिन्दी
६६.	१६५४	रस संकेत कलिका	श्री चावुण्ड	हिन्दी
६७.	१६६६	समकित अष्टांग कथा	ब्र. जिनदास	संस्कृत
६८.	१६६६	धर्मोपदेश	रत्न भूषण	संस्कृत
६६.	२०००	भाव त्रिभंगी		प्राकृत
७०.	२०७४	कर्म प्रकृति	नेमिचंद्र सिद्धांतिदेव	प्राकृत
७१.	२०८७	वैद्य महोत्सव	पं. केशवदास	हिन्दी
७२.	२१४६	कर्म विपाक विचार	भट्टा. धर्मचंद जी	हिन्दी
७३.	२१४६	पदमनाथ चरित्र		संस्कृत
७४	१७७६	मंत्र महोदधि	श्री महीधर	संस्कृत
७५.	२१७६	सीताशील विलास	श्री धर्मचंद्र	हिन्दी
७६.	२२०८	बुद्धिप्रकाश		हिन्दी
७७.	२२४१	महादण्डक	भट्टा. विजयकीर्ति	संस्कृत
७८.	२४१२	बीस ठाणा		प्राकृत
७६.	२४१७	प्रबोध सार	भट्टा. यशकीर्ति	संस्कृत
८०.	२६३५	त्रिलोक दर्पण विलास		हिन्दी
८१.	३०५६	सुधारस सार		संस्कृत
८२.	८५६	प्रमाण परीक्षा वचनिका	पं. भागचंद जी	हिन्दी
८३.	४६४४	नरवर्म चरित्र		संस्कृत
८४.	४६६६	ब्रम्हगुलाल चरित्र		हिन्दी
८५.	५२६५	कुलभूषण देशभूषण केवली कथा		हिन्दी
८६.	५३१३	चरित्र सार वचनिका		हिन्दी
८७.	५३२२	गौतम चरित्र	पन्नालाल चौधरी	हिन्दी
८८.	५३६७	महीपाल चरित्र वचनिका		हिन्दी
८६.	५७२६	चतुर्विंशति जिनस्तुति		प्राकृत
६०.	५७३३	षट्कारक	विनश्वरनंदी	संस्कृत
६१.	५७५७	जीवविचार प्रकरण		प्राकृत
६२.	५८७४	ज्ञानांकुश		संस्कृत
६३.	५८७५	यति भावनाष्टक	पंकजनंदी	संस्कृत
६४.	५६३३	आत्म स्तुति		संस्कृत
६५.	५६४०	सप्त तत्व गीत		हिन्दी
६६.	६०६३	ध्यान बत्तीसी		हिन्दी
६७.	६१०४	नव तत्व		प्राकृत / हिन्दी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७८६	भानपुरा से प्राप्त।	२०	१०×२३–१४	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१२७	११.५×२६–१२	...
	भानपुरा से प्राप्त।	२५	६×१६.५–१४	...
	भानपुरा से प्राप्त।	५६	६×१६.६–११	...
१६०१	भानपुरा से प्राप्त।	१४६	१०×१७.५–१३	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१५१	१३×२०–११	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१३	१२×२१.५–१३	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१६	८×२३.११	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१६६	६×२१.१०	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१०५	१०×२३.११	...
	भानपुरा से प्राप्त!	६१	७.५×२३–११	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१५०	६×१८–६	...
	भानपुरा से प्राप्त।	१२३	७×२०.५–७	...
	भानपुरा से प्राप्त।	८२	११×२६–१३	...
	भानपुरा से प्राप्त।	५०	१२×१८–२३	...
		१८	१०×२५–१२	...
		१७८		...
		१८७		...
१६२६		१३		...
१४१२	अजमेर से प्राप्त।	१५	२२×८–१४	...
१६८५	फिरोजाबाद	२४	२८×१५–१४	...
	दि०जैन मंदिर	२०	१२×१५–१०	...
	अजनास			
१६२८	जौला	१७८	७.५×२६–६	...
	पुरवाल्यान	७१	११.५×२१–११	...
१६४३	कवाल	१००	८×२४–८	...
१४६५	टोड़ारायसिंह	१	६.३×२.३–११	...
	टोड़ारायसिंह	१७	६×१८–१४	...
१६६५	टोड़ारायसिंह	४	६×२३–११	...
१६६८	टोड़ारायसिंह	५	१२×६–१०	...
१६६८	टोड़ारायसिंह	३	१२×६–१०	...
१६३८	टोड़ारायसिंह	७४-७७	११.५×८.५–१५	...
	टोड़ारायसिंह	२१	१२×१४–१४	...
	बरकोटी	७७	२४×१२–२५	...
	अजमेर	२७	७.५×२०.५–११	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाण्डुलिपियों की प्रशस्तियाँ और प्रशस्तिवाचन

–डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज'

प्राचीन पाण्डुलिपियों तथा उनकी प्रशस्तियों का वाचन और सम्पादन एक कला ही नही अपितु विज्ञान भी है। पाण्डुलिपियों के वाचन के लिए सबसे प्रथम अनिवार्यता होती है उसकी लिपि के ज्ञान की। फिर वाचनकर्ता को लेखन की विधि, लेखन के आधार और शब्द प्रयोग के प्रकार से भिज्ञ होना चाहिए।

हमें यहाँ विचार करना है कि पाण्डुलिपियों में प्रशस्तियाँ किस –किस ढंग से लिखीं जाती हैं तथा उनमें से विशेषतौर से संवत् कैसे पढ़ा जाय। यहाँ हम केवल पाण्डुलिपि–गत प्रशस्तियों का अध्ययन करेंगे, टंकित प्रशस्तियों का नहीं।

1. सामान्य विधि का प्रयोग–

सामान्य विधि सर्वगम्य है। प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी की पाण्डुलिपियों की प्रशंस्तियों में संवत् के लिए समान अंकों का प्रयोग किया गया है। जैसे–

१. इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धांत सम्पूर्ण। संवत् १७३५ वर्षेमाघंसुदि ८ वृहस्पतिवासरे साहिजहानाबाद मध्ये पातिशाह श्री अवरंगजेबराज्ये। श्रीमालज्ञाति श्रृंगार

–समयसारनाटक, पाण्डु, ग१०६/२ जैन सि.भवन, आरा

२. इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाम नाटक की वचनिका सम्पूर्ण ।।छ।। मिति जेठ शुक्ल द्वितीया २ वार शनिवार संवत् १६२६ का नै पूरण कीई।। मिति भादवा सुदी १४ मुकंदराम जी बड़जात्या की मा नै की त तिव में मंदिर जी चढ़ाया भीमराज की काकी गुलाब नैं संवत् १६५० का में निछावर का लाग्या ५)१० आना।

–ज्ञानसूर्योदय नाटक वचनिका, पाण्डु., दिग. जैन मंदिर ठोलियान, जयपुर

३. इति तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय की तत्त्वार्थसूत्र नाम भाषा टीका समाप्ता। संवत् १६७० शकः १८३५ चैत्र शुक्ला ५ भृगुवासरे लिपिकृतम् पं० सीताराम शास्त्री निज करेण संशोधिताः।

– तत्त्वार्थसूत्र टीका, पाण्डु १३६ग., जैन सिद्धां. भवन, आरा

उक्त तीनों प्रशस्तियों में संवत् के लिए समान विधि से अंको का प्रयोग किया गया है। विक्रम संवत् अधिक लोकप्रिय रहा है। अतः जहाँ मात्र "संवत्" लिखा गया है वहाँ विक्रम संवत् से तात्पर्य रखा गया है। शक संवत् या वीर निर्वाण संवत् के लिए संवत् के अंको के साथ शक, शाके या वीर नि. संकेत भी दिए गए हैं। यथा उपरोक्त प्रशस्ति क्रम – ३ में शकः १८३५ दिया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. अंको को शब्दों में लेखन विधि का प्रयोग

इस विधि में रचना कला या प्रतिलिपि काल के संवत् के अंको को शब्दों में लिखा गया है। जिन रचनाओं की प्रशस्तियाँ पद्य में हैं, उनमें इसी विधि का प्रयोग किया गया है। हिन्दी "निर्वाणकाण्ड" का अंतिम पद्य देखें –

१. **संवत् सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल।**
भैया वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल।।

इसमें निर्वाणकाण्ड हिन्दी का रचना काल संवत् १७४१, आश्विन सुदी १०वीं सामान्य, केवल अंको शब्दों में दिया है।

२. **भूलचूक जो कथा मँझारा, लै भविजन सब सुजन सँवारा।**
शुभ संवत् उन्नीस पचासा, अषाढ़ शुक्ल तृतीया मलोमासा।
वार शुक्र शशि कथा प्रकाशा, वाचक ह्वदय हर्ष की आशा।
जैन इन्द्र किशोर सुनाई, जय–जय ध्वनि चतुर्दिक छाई।।

–रोटतीज व्रत कथा,पाण्डु. जैन सिद्धां. भवन, आरा।

इस कथा (मेरे द्वारा रोटतीज कथा) में भूलचूक रह गई हो उसे सत्पुरूष स्वयं सँवार लें, सुधार लें। यह निर्मल कथा इन्द्रकिशोर जैन ने शुभ संवत् १६५० मलमास (अधिक मास) में आषाढ़ शुक्ल तृतीया, शुक्रवार को रची है। यह वाचक के द्रव्य में हर्ष की आशा उत्पन्न करने वाली है। चारों ओर जय जय की ध्वनि छाई हुई है।

इसमें संवत् १६५० लेखन काल दिया है।

३. **विक्रम नृप के उगणीसै पर तीस पाँच सत चीना है।**
मंगसिर शुक्ला नवमीं शशि दिन ग्रंथ सम्पूरन कीना।।

–न्यायदीपिका भाषा, पाण्डु., वेष्टन सं. ३६८ दि.जैन मंदिर वधीचंद, जयपुर

इसमें विक्रम संवत् १६३५, मृगसिर शुक्ल नवमी दिन शशि (सोमवार) दिया है।और भी –

४. **इक नौ जुगपर जुग धरे संवत्सर यह जान।**
भादौं धवत सुदीज गुन, पूरन कियो विधान।।

–समाधिशतक, पाण्डु., वे.नं.१०८ दि.जैन बड़ा बाबाजी का मंदिर, अजमेर

इसमें एक, नौ, जुग= २, जुग= २ अर्थात् संवत् १९२२ दिया है।

५. **संवत् ओणसि दस साल में सुद फागुणना सुभमास।**
दशमि दिन पूरण भया चरचा वासठ मास।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढ़े गुणे जे भाव थी भविजन को सुखकर्ण।
लाल कहे मुझ भव भव द्यो प्रभु हो जो तुम चरण।।

–चरचावासटि गुटका, पाण्डु., वे. सं. २२६, संभवनाथ दि.जैन मंदिर उदयपुर।

इसमें संवत् १६१० दिया है।

६. संवत्सर विक्रम तणूँ अष्टादश शत जानि।
त्रैसठि सावन तीज वदि पूरण भयौ सुमानि।।

–स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा पाण्डु., संख्या ५८, आ.कुन्द श्रुतभण्डार, खजुराहो।

संख्या सूचक शब्द लेखन विधि –

पद्यवंध रचनाओं की प्रशस्तियो में संवत् लिखने के लिए ऐसे शब्द लिखे जाते हैं जिनका अर्थ संख्यात्मक हो अथवा जिनके कुछ भेद हों, उन भेदों की संख्या को अंक माना गया है। विद्वान् रचनाकारों को संख्या सूचक शब्द प्रयोग करना संक्षिप्त, लालित्यपूर्ण, पद्यरचना कौशल में प्रवीणता का द्योतक और शब्द गुम्फन में नैपुण्य दर्शाने का उपयुक्त माध्यम प्रतीत हुआ। इस विधि का प्रयोग गद्यात्मक प्रशस्तियों में भी किया गया, और संस्कृत प्राकृत में ही नहीं अपितु हिन्दी की प्रशस्तियों में भी संवत् लेखन के लिए संख्या सूचक शब्दों का प्रयोग किया गया। लगभग २००० ऐसे रूढ़ शब्द हैं, जिनको इस विधि में प्रयुक्त किया गया है। इस विधि से लिखी गई पाण्डुलिपि की प्रशस्ति में संवत् का शुद्ध वाचन करने के लिए उन शब्दों के रूढ़ तात्पर्य का ज्ञान होना या वह शब्दकोष वाचक के पास होना आवश्यक है।

संख्या सूचक शब्द-गर्भित कुछ प्रशस्तियाँ इस प्रकार है -

१. चंद्रवाण संवच्छर कीजि। पंचाणु पुण्य पासि रख दीजि।
माघ सुदि पंचमी भणीजि रे। गुरूवारि सिद्ध योग उवीजि रे।
जुवा धनुष रज्जणि जाजीइ रे। तीर्थंकर वली कहीई सार रे।
शांतिनाथ तिहाँ सोलमु रे। कव्वराम तेह भवण मझारे रे।

इति श्री नेमिनाथराम आचार्य जिनसेन कृत समाप्तः।

–नेमिनाथरास, पाण्डु. सरस्वती भवन बड़ा मंदिर, जयपुर

इस प्रशस्ति में संवत्सर को चन्द्र, बाण, पंचाणु और पुण्य लिखा है यहाँ अंक निकाले चंद्र =१, बाण = ५, पुण्य = १, अर्थात् संवत् १५५१ हुआ। इस विधि में अंकों को"अंकानांवामतो गतिः" अंको के रखने की प्रक्रिया उल्टी होती है। किंतु यहाँ लेखक ने लिखा है – 'चन्द्रबाण कीजि' पहले संवत् के लिए चन्द्रबाण के अंक रखें १५, "पंचाणु पुण्य पासि रख दीजि" तदन्तर उनके पास पंचाणु – पुण्य के अंक रखे हैं ५१, इस तरह निर्देशों का पालन करते हुए रचनाकाल संवत १५५१ मान्य करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२. संवत् मास तिथिवार कौ.....................
जीवसमासी तक गण। जिन अतिशय की साल।
पौष भमर की चतुरदशी। बुध लिख पुरन हाल।।

—धर्मसार ग्रंथ, पाण्डु., संख्या ७४, शास्त्र भण्डार खजुराहो

जीव समास = १४ सौ, जिनेन्द्र के अतिशय = ३४ वर्ष, पौषमाह, भमर(भ्रमर = भौरें का रंग काला) = कृष्ण पक्ष, चतुर्दशी तिथि, बुधवार को ग्रंथ पूर्ण हुआ। इसमें संवत् = १४३४ निकला। इसमें भी अंक उल्टी तरफ से नहीं रखे जा सकते थे, क्योंकि रचनाकार में ''सप्तक'' और ''साल'' लिख कर स्पष्ट निर्देश दिए हैं।

३. इति श्री भट्टारक शुभचंद्र शिष्याचार्य श्री सकलभूषण विरचितायामुपदेशरत्नमालायां पुण्यषट्कर्म प्रकाशिकायां तपोदान माहात्म्य वर्णनौ नामाष्टदशः परिच्छेदः।।१८।। समाप्तः।। श्री साहिजहानावादे पृथ्वीपति मुहम्मदशाह शुभराज्ये संवत् वेदनभगजशशि वैशाख शुक्ल सप्तम्यां।।

— उपदेश रत्नमाला, पाण्डु. संख्या १२६ख, जैन सिद्धां भवन, आरा

इस प्रशस्ति में संवत् वेद नभ गज शशि दिया है। इनमें वेद = ४,नभ = ०, गज = ८, शशि = १, अंक हुए। अंको को बाई ओर से रखा तो संवत् १८०४ निकला। यह उपदेशरत्नमाला का लेखन संवत् १८०४ है।

४. वास्वष्ट युक्त सप्तेन्द्र युते वर्षे मनोहरे।
शुक्ले भाद्रपदे मासे चतुर्दश्यां शुभे तिथौ।।
ईसरदेति सद्ग्रामे टीकेयं, पूर्णतामिता।
भट्टारक जगत्कीर्ति पट्टे देवेन्द्र कीर्तिना।।
दुः कर्म्म हानये शिष्यमनोहर गिराकृता।
टीका समयसारस्य सुगमा तत्त्वबोधिनी।।
बुद्धिमद्भिः बुधैः हास्यं कर्त्तव्यं नो विवेकभिः।
शोधनीयं प्रयत्नेन यतो विस्तारतां वृजेत्।।
बुधैः संपाट्यमानं च वाच्यमानं श्रुतं सदा।
शास्त्रमेछुम कारि चिरं संतिष्टतांभुवि।।
पूज्य देवेन्द्रकीर्ति संशिष्येण स्वातं हारिणा।
नाम्नेयं लिखिता स्वहस्तेन स्वबुद्धये।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संवत्सरे वसु–नाग मुनींद्र मिते भाद्रमासे शुक्ल पक्ष चतुर्दशी तिथौ इसरदा नगरे श्री राजि श्री अजीतसिंहजी राज्य प्रवर्तमाने श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये.......... । भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिनेयं समयसार टीका स्वशिष्य मनोहर कमनाद् पठनाय तत्त्वबोधिनी सुगमा निज बुद्धया पूर्व टीकामवलोक्य निहिताबुद्धिमद्भि शोधनीया प्रमादाद्वा अल्पबुद्धया यत्र हीनाधिकं भवेत् तद्बोधनीयं संभोभवीत् श्री जिन प्रत्यसत्ते।

संवत् सरेन्द्र वसु शून्य वेद युते वर्षे वैशाख्र मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां चन्द्रवारे चन्द्रप्रभ चैत्यालये पंडितोत्तमपंडित चोखचंदजी तत् शिष्य रामचन्द्रेण टीका लिखितेयं स्वपठनार्थं दिलडीनगरे वाचकानां पाठकानां मलावली संवोभवतु।।

—समयसार टीका भ.देवेन्द्रकीर्ति, पाण्डु.वे. सं३१८, भट्टारकीय दि.जैन मंदिर,अजमेर

उपरोक्त प्रशस्ति में तीन स्थानों पर संवत् के लिये संख्या शब्दों का प्रयोग किया गया है। पद्यात्मक प्रशस्ति के प्रारम्भ में – वास्वष्ट युक्त सत्येन्द्र युते वर्षे लिखा है। वसु = ८, अष्ट = ८, सप्त = ७, इन्द्र = १, अर्थात् ८८७१ अंक हुए। इसे उल्टी तरफ से लिखा तो संवत् १७८८ हुआ।

इसकी गद्यात्मक प्रशस्ति में भी संवत्सरे वसुनाग मुनींद्र द्रमिते दिया है। वसु वसु = ८, नाग = ८, मुनि = ७, इन्द्र = १ आया इन्हें उल्टे क्रम से लिखा तो इसमें भी संवत् १७८८ आया।

शास्त्रप्रतिलिपिकारों ने भी इसी रीति का उपयोग किया। उक्त प्रशस्ति क्रम ४ की प्रतिलिपिकार की प्रशस्ति में – संवत् सरेन्द्र वसु शून्य वेद युते वर्षे दिया है। शरेन्द्र = १, वसु = ८,शून्य = ०, वेद = ४, अर्थात् प्रतिलिपि काल संवत् १८०४ है। इसमें उलटे अंक स्थापना का ध्यान नहीं रखा गया गया है।

संस्कृत के पद्यों के निर्माण में अंकों को शब्दों में लिखने से स्थ... अधिक लगता है, इसलिए भी प्रायः संस्कृत पद्यों में संख्या सूचक शब्दों का प्रयोग किया गया। यह ज्योतिष के ग्रंथों में अधिक पाई जाती है। यथा –

शक्रेन्द्रकालः पृथगाकृतिघ्नः शशाङ्कनन्दाश्वियुगैः समेतः।
शराद्रिवस्विन्दु ह्वतः सलब्धः षष्टयाप्त शेषे प्रभवादयोऽब्दाः।।

—मानसागरी, पृष्ठ११, प्र. वाराणसी,सं. १२१५/१३३.०५ कुन्दकुन्द ज्ञा. इन्दौर

इसके पद्य में संख्या ४२६१ के लिए शशाङ्क–नन्दाश्वि–युगैः और संख्या १८७५के लिए शराद्रिवस्विन्दु का प्रयोग किया गया है।शशाङ्क = १,अश्वी = २, युग = ४ को उल्टा लिखकर संख्या ४२६१ हुई और शर = ५ आदि = ७, वसु = ८, इन्दु = १, को वाम से लिखकर संख्या १८७५ हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संवत्, मास, पक्ष, तिथि, वार आदि ज्योतिष से ही सम्बद्ध है। अतः इन्हें प्रशस्तियों में लिखते समय ज्योतिष की पद्धति अपनाई गई।

कुछ शब्द एकाधिक संख्या वाचक होते है। जैसे – वेद = ३,४, वसु = ८,७, रत्न = ३,५,६, १४,१३, यति = ६,७, लब्धि = ६,२८, हय = ७,८, व्यय = १२,२०, उदधि = १,१४,२४,१०००, काल = ३,६, इत्यादि। किस शब्द का कौन सा अंक ग्राह्य है, यह प्रशस्ति की लिपि, कागज, समय की सम्बद्धता, अन्य उल्लेखों से मेल, लेखक का प्रकार अंकों से संवत् की प्रासंगिकता आदि विचार कर ही निर्णीत होता है।

प्राचीन रचनाओं की प्रशस्तियों में, अधिकांशतः तीसरे प्रकार की विधि का प्रयोग किया गया है। दूसरे प्रकार की विधि का प्रयोग हिन्दी पद्य एवं बाद की पाण्डुलिपि–प्रशस्तियों में किया गया है। और पहले प्रकार की विधि का अवलम्बन सर्वत्र विशेषकर गद्यात्मक प्रशस्तियों में लिया गया है। ''पाण्डुलिपियों की प्रशस्तियों में समय का उल्लेख'' शीर्षक से एक आलेख हमने अलग से लिखा है जो कि प्रशस्तिगत संवत् आदि की जानकारी के लिये द्रष्टव्य है। इति शुभम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'

(धर्म दिवाकर पं० लालचंद जैन 'राकेश')

जिसकी है माता जिनवाणी, जिसके हैं आराध्य जिनेन्द्र,।
समता जिसकी सखी सहेली, ज्ञान ध्यान ही जिसका केन्द्र।।
इन्द्रिय के विषयों को जिसने, समझ लिया है महा गरल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।१।।

तन तो जिसका दुबला पतला, पर मन में दृढ़ता का वास ।
महल मकान रूचे न जिसको, किया संत कुटियाँ में वास।।
बीना में वीणा को लेकर, जिसने छेड़ी तान तरल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।२।।

जन्म जरा मृतु रोग बहुत से, देते दुख भव – प्राणी को ।
इन से बचने की धुन मन में, रहती हरदम ज्ञानी को ।।
जिन–वच की संजीवन औषध, जो करते रहते सदा खरल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।३।।

मिथ्यात्व मोह अरू रागद्वेष का, घना अंधेरा छाया है।
इनके वशीभूत हो चेतन , भव वन में भरमाया है ।।
अनेकांत का दीप जलाकर, किया है जिसने मार्ग सरल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।४।।

कुंडल है कानों की शोभा, धारण करते सब नर–नार।
जो न पहने पछताते हैं, उनका जीवन है बेकार।।
जिन वच कुंडल की रक्षा में, लगा हुआ है जो अविरल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।५।।

जिनवाणी गंगा सी पावन , सब के मल धो देती है ।
मोह महाचल भेदन करके, जड़तातप खो देती है।।
उसके रक्षण – संवर्धन में, अर्पित है जीवन प्रतिपल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगर नही होता ये दीपक, देता कौन उजाला।
बोलो कौन उपेक्षित माँ को, देता भुजा सहारा।।
डूब रही नैया को जिसने, दिया पूर्ण है संबल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।७।।

नगर गांव के हर मंदिर में, दीप जलाया जाकर।
देखा, मूत्र कर रहे चूहे, नष्ट कर रहे खाकर।।
मां की देख दुर्दशा ऐसी, जिसके बहा नयन से जल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।८।।

मां को चाट रही है दीमक, अंग – अंग हैं घायल ।
हार मुकुट की बात न पूछो, नहीं वस्त्र, न पायल।।
देख पड़ी कूड़े में मां को, हृदय फटा ज्यों बिम्बा फल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।९।।

चरण छुऐ जिनवाणी मां के, अंग – अंग सहलाया।
मरहम पट्टी, लेमीनेशन, नया वस्त्र पहनाया।।
दिया उच्च्च सिंहासन लाकर, पूजे मां के चरण कमल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।१०।।

नियमित स्वाध्याय के द्वारा, प्रतिदिन करते पूजा।
ऐसा दीपक मिला न हमको, इस धरती पर दूजा।।
जिसने मातृ समर्पित होकर, किया है अपना जन्म सफल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।११।।

ज्ञान साधना त्याग तपस्या, नहीं उम्र की है मुहताज ।
दूर न जाओ कुन्द–कुन्द तक, हैं प्रमाण 'भैया जी' आज।।
'अनेकांत ज्ञान का मंदिर' उनसे ही है प्राप्त सुफल।
उसी भारती के दीपक को, हम कहते संदीप 'सरल'।।१२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द पुरातत्त्व का गौरव पाण्डुलिपि संग्रहालय बीना संक्षिप्त झलक

ब्र.संदीप जैन 'सरल'

मूर्ति पुरातत्त्व की तरह शब्द पुरातत्त्व का एक अति महत्त्वपूर्ण स्थान इतिहास में है। बल्कि मनीषियों ने तो यह भी कहा कि मूर्ति पुरातत्त्व का ज्ञान ही शब्द पुरातत्त्व से हुआ है। हमारे आचार्यों, मनीषियों ने अपनी चिंतन शैली के आधार पर जो नवनीत निकाला और दूसरों तक पहुँचाने के लिए शब्द लिपि का रूप देकर सुरक्षित करते आये हैं। श्रुत संरक्षण की पवित्र भावनाओं से प्रेरित होकर आप्त उपदिष्ट आगम (ज्ञान) को ही जो आर्ष परम्परा से अविरल धारा से चला आ रहा था उसे स्थायित्व देने के लिए अपने अपने समय में प्रचलित भाषा एवं शैली में अंकित किया है। जिस समय न कागज था और न कलम थी न स्याही, लेकिन श्रुत रक्षा की पुनीत भावना से सर्वप्रथम ताड़पत्र पर नुकीले कांटों से शब्द उकेरे गए। ताड़पत्र से भोजपत्र एवं कर्गल पत्र आये और कलापूर्ण सुन्दर लिपियों में ग्रंथों को गूँथा गया। हमारे पूर्वाचार्यों ने सिद्धांत, अध्यात्म, इतिहास, भूगोल, आयुर्वेद, ज्योतिष, संगीत, मंत्र तंत्र आदि अनेकानेक विषयों पर लेखन कर माँ भारती के भण्डार में अभूतपूर्व रत्नों को समर्पित करते रहे हैं। भौतिक सुख सुविधा एवं साधन सम्पन्न पीढ़ी ने उस अद्वितीय संपदा को संरक्षित करने के ठोस उपाय नहीं उठाये और उसी का परिणाम रहा कि हजारों महत्त्वपूर्ण इकलोती पाण्डुलिपियाँ चूहों और दीमकों के द्वारा समाप्त कर दी गईं। सम्पूर्ण भारतवर्ष के कोने२ में स्थित मंदिरों में शास्त्र भण्डारों में पाण्डुलिपियाँ आज भी उपेक्षित पड़ी हुई हैं लेकिन हमारी भारतवर्षीय जैन समाज ने अभी तक ऐसा ठोस कदम नहीं उठाया कि उन पाण्डुलिपियों का संकलन, सूचीकरण, संरक्षण और प्रकाशन का कार्य हो।

विद्वानों की नगरी बीना में २० फर० १९९२ को बालपीढ़ी एवं युवापीढ़ी के सदाचार एवं ज्ञान वृद्धि हेतु एक लघु ग्रंथालय की स्थापना के रूप में माँ भारती की सेवा का अवसर मुझे प्राप्त हुआ और इसी ग्रंथालय ने अल्प समय में अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान का रूप ले लिया। सदैव मेरे मन में ये विचार उथल पुथल होते रहते हैं कि हमारी समाज क्रिया काण्ड, बाह्य आडम्बर एवं प्रदर्शन के नाम पर करोड़ों रूपये खर्च कर गौरव पूर्ण धर्म प्रभावना का नाम दे रही है। पाण्डुलिपियाँ (प्राचीन ग्रंथ सम्पदा) के प्रकाशन हेतु कोई महत्त्वपूर्ण कदम नहीं उठाया जा रहा है। हाँ यह अवश्य हो रहा है कि आगम प्रभावना के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

<u>पाण्डुलिपि संग्रहालय की साकार कल्पना –</u> उठो! माता तुम्हें बुलाती है, कुछ सार्थक पहल करो, वरन् कल्पना मात्र से कुछ होने वाला नहीं है। मस्तिष्क में इस प्रकार के विचारों ने ही मार्च १९९५ में "शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान" का रूप दे दिया। हर प्रकार से साधन विहीन, शिशुवत् अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना को केन्द्र बनाकर बुन्देलखण्ड में अनदेखी पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण हेतु सर्वप्रथम कदम २४ मार्च १९९५ को प्रातः ब्रम्हमुहूर्त की बेला में प्रारम्भ किया। अभियान के प्रथम दौरे में दि० जैन मंदिर सनाई से १५–२० ग्रंथ प्राप्त किए। प्रथम कदम में ही अनेक जटिल समस्याऐं सामने थीं कि समाज बिना विश्वास किए इन ग्रंथों को दिखलाने के लिए तैयार भी नहीं होती थी, मंदिरों में पूर्ण व्यवस्थित न होने पर भी उनकी संरक्षा नहीं करना चाहती थी। कुछेक स्थानों से यह सुनने को मिला कि आपके पास क्या प्रमाण है कि बीना में यह कार्य हो रहा है तो कोई कहता कि आप इन ग्रंथों को विदेश भेजकर करोंड़ो रूपया कमायेंगे कोई कहता कि आपको यह करने की क्या आवश्यकता है यह कार्य तो विद्वानों से करवाया जावे।इस प्रकार की संकीर्ण विचारधारा समाज की मेरे सामने पग२ पर आ रही थी फिर भी उठो, श्रुत सेवा करो' इन शब्दों ने दृढ़ विश्वास के साथ पुरूषार्थ को अनवरत् चालू रखा।

<u>पाण्डुलिपियों का संकलन कैसे हुआ</u> – "जननी माँ से प्यारी–माँ जिनवाणी हमारी" जिनवाणी जयवंत हो' 'ग्रंथो का विनाश – संस्कृति का विनाश' 'जिनवाणी की रक्षा कौन करेगा हम करेंगे' की आवाज अनेक धर्म सभाओं के मध्य अनेक बार उठाई गई।फलस्वरूप सर्वप्रथम बीना के अनेक कर्मठ नवयुवको ने इस अभियान में प्राण पण से सहयोग किया और न देखी सर्दी गर्मी और न देखा आंधी तूफान और भूख प्यास आदि बातों को भूलकर ग्रंथो के संकलन हेतु पद यात्रायें, साइकिल, स्कूटर, मोटर साइकिल, बस, रेलगाड़ी आदि की यात्राओं में नवयुवको ने पूर्ण साथ निभाया। फिर तो यह अभियान जंगल में लगी आग की तरह व्यापक होकर फैला और अनेक स्थलों के जिनवाणी सपूतों ने इस ज्ञान यज्ञ में सहयोग प्रदान किया। जनवरी २००१ तक म०प्र०, उ०प्र०, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा, गुजरात, पंजाब, बिहार, दिल्ली, बंगाल, आसाम, मणिपुर, नागालैण्ड, आदि डेढ़ दशक प्रांतों, लगभग चार शतक(४००) ग्रामों, शहरों, नगरों,के भण्डारों से प्राप्त सप्तसहस्र (७०००) हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का संकलन किया गया है। कुछ आचार्य संघों ने, मुनिराजों ने एवं व्रतियों ने इसके महत्त्व को समझते हुए स्वतः ग्रंथ भिजवाने की प्रेरणा समाज को दी और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेक स्थानों विशाल भण्डार बीना आए। कतिपय स्थानों के नाम यहाँ पर दे रहा हूँ जहाँ से विपुल मात्रा में ग्रंथ सम्पदा प्राप्त हुई है – (१) श्री सहस्रकूट चैत्यालय अजमेर – १३०० ग्रंथ (२) श्री दि० जैन मंदिर भानपुरा ११०० ग्रंथ (३) श्री दि० जैन मंदिर टोड़ारायसिंह – ४०० ग्रंथ (४) श्री दि० जैन मंदिर भुसावल – १२५ ग्रंथ (५) श्री दि० जैन मंदिर सारोला – १५० ग्रंथ (६) मड़ावरा के जैन मंदिरों से २०० ग्रंथ (७)श्री शिवलाल रामचंद्र वाचनालय माढ़ा २०० ग्रंथ (८)मुजफ्फरनगर जनपद से ३०० ग्रंथ। ऐसे स्थानों की सूची बहुत लम्बी है जहाँ से ५० से १०० ग्रंथों की प्राप्ति हुई है। इस ग्रंथ सम्पदा के अतिरिक्त लगभग ५० ताड़पत्रीय ग्रंथ भी महाराष्ट्र प्रांत एवं राजस्थान से प्राप्त हुए हैं। जिन स्थानों से ग्रंथ प्राप्त नहीं हुए है उन स्थानों पर ग्रंथ सुरक्षित करवा दिए हैं और ग्रंथों की सूची बनाकर ले आये हैं।

<u>पाण्डुलिपि संग्रहालय में विशिष्ट सामग्री</u> – पाण्डुलिपि स्वयं एक पुरातात्त्विक ऐतिहासिक सम्पदा है। कुछ पाण्डुलिपि ऐतिहासिक सामग्री से भरपूर हैं। कुछ लेखन कला एवं प्राचीनता की दृष्टि से गौरवपूर्ण हैं। संग्रहालय में स्थित सचित्र पाण्डुलिपियाँ हस्तकला की बेजोड़ सम्पदा हैं। स्वर्ण लिखित पाण्डुलिपियाँ, काष्टफलक, आमंत्रणपाती, हस्तकला युक्त यंत्र मंत्र ग्रंथ, पोस्टकार्ड साइज कागज पर अंकित तत्त्वार्थ सूत्र एवं भक्तामर स्तोत्र दर्शकों के लिए आकर्षण का केन्द्र होते हुए इस संग्रहालय की अद्वितीय थाती हैं। इसके अतिरिक्त कन्नड़, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी भाषा में रचित सैकड़ों अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ हैं जिनके उचित सम्पादन प्रकाशन के लिए संस्थान सचेष्ट है। संस्थान में ३०० वर्षों से लेकर १००० वर्ष तक की प्राचीन पाण्डुलिपियाँ भी स्थित हैं।

<u>पाण्डुलिपियों का संरक्षण एवं सूचीकरण</u> – पाण्डुलिपियों को जिन स्थानों से जीर्ण शीर्ण या अव्यवस्थित हालत में लाया गया उन सभी के पत्रों को क्रमबद्ध लगाकर, कार्ड लगाकर बेष्टन (वस्त्रों) में रखकर गोदरेज की कॉच वाली अलमारियों में रखा गया है। समय२ पर इस बात का पूर्ण ध्यान रखा जाता है कि ग्रंथों को नष्ट करने वाली जीवराशि पैदा न हो। वैज्ञानिक रीति से सम्पूर्ण पाण्डुलिपियों का सूचीकरण किया जा चुका है। अनेकांत भवन ग्रंथ रत्नावली भाग १,२ का प्रकाशन भी इस वर्ष किया जा चुका है। शेष भागों का प्रकाशन भी शीघ्र होगा। पाण्डुलिपियों के उपर कार्य करने वाले शोधार्थियों एवं मनीषियों के लिए संस्थान में आवास आदि का समुचित प्रबंध है। शोध अध्ययन हेतु ६००० मुद्रित पुस्तकों से युक्त शोध ग्रंथालय भी है। वाचनालय में लगभग ८०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाचार पत्र पत्रिकायें प्रतिमाह आ रहीं है। ग्रंथों के संरक्षण हेतु फोटोकॉपी मशीन एवं कम्प्यूटर का प्रबंध भी है। हस्तलिखित ग्रंथों को बाहर से लाने के लिए संस्था के पास स्वतंत्र की वाहन व्यवस्था भी है। संस्थान की शोध परक गतिविधियों की एवं संचालित गतिविधियों की जानकारी जन जन तक पहुँचाने के लिए अनेकांत दर्पण (शोध वार्षिक पत्रिका) संस्थान समाचार (द्विमासिक पत्र) का प्रकाशन भी नियमित रूप से किया जा रहा है।

आगामी रूप क्या होगा – संस्थान ने अल्पावधि में सम्पूर्ण भारतवर्ष में जो कीर्तिमान स्थापित किए हैं उसके अनुरूप आगामी समय में संस्थान की उन्नति में संलग्न अखिल भारतवर्षीय जैन समाज के सहयोग से पाण्डुलिपियों के संकलन, संरक्षण, सम्वर्द्धन, सूचीकरण एवं महत्त्वपूर्ण अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के साथ साथ पाण्डुलिपि संग्रहालय भवन, शोध संस्थान का विशाल भवन, अनेकांत प्रज्ञाश्रम(वृद्धाश्रम), वर्णी संग्रहालय, पाण्डुलिपि प्रदर्शनी हॉल आदि के रूप में इसका विकास किया जावेगा।

मैं सम्पूर्ण दिगम्बराचार्यों, मुनिराजों के चरणों में विनम्र नमोस्तु निवेदित करता हूँ कि उनके आशीर्वाद एवं प्रेरणा से इस दुरूह कार्य को भी सभी के सहयोग से करने का साहस किया है। सभी विद्वत् मनीषियों के लिए धन्यवाद प्रस्तुत करता हूँ कि जिनका सहयोग, परामर्श प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से संस्थान को मिल रहा है। प्राचीन संस्कृति के प्रति असीम स्नेह रखने वाले श्रीमंत, दानवीर, लक्ष्मीपुत्रों के सहयोग को भी भुला नही सकता हूँ जिनके आर्थिक सहयोग से इस संस्थान की गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। अंत में उन परम सहयोगियों को जब तक नही भुला सकता जब तक कि इस संग्रहालय की कीर्ति ध्वजा अमर रहेगी। वे सहयोगी हैं कंधे से कंधा लगाकर इन पाण्डुलिपियों के प्रदान कराने में एवं संकलन कराने में जिनका योगदान रहा है। समस्त पाठकों के लिए यह विश्वास दिलाता हूँ कि आप सभी की सद्भावनाऐं एवं सहयोग रहा तो आगामी दशाब्धि में यह संग्रहालय न सिर्फ बुन्देलखण्ड में, न सिर्फ भारत वर्ष में अपितु विश्व स्तर पर अपना नाम अंकित करायेगा।

❑❑❑

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नेमीचन्द्र कृत श्री शिखर जी पूजन एवं स्तोत्र. संग्रह

पं० अभय कुमार शास्त्री

<u>प्रति परिचय</u> – श्री अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना (म०प्र०) के हस्तलिखित ग्रंथ भण्डार में सुरक्षित यह एक अपूर्ण कृति है। इस कृति के कुल प्राप्त पानों में केवल १३ पाना ही उपलब्ध है। क्र०१ से लेकर १५ तक के पानों में ७ वॉ और १३ वॉ अनुपलब्ध है तथा १५ वें पाना के बाद के पाना भी इसमें नहीं है।

प्रत्येक पाने की लम्बाई १२.५ से.मी. और चौड़ाई ८.५ से.मी. है। दाईं बाईं ओर (आजू–बाजू में) दो दो लाल लाइनें खींचकर २–१.५ से.मी स्थान खाली छोड़ा गया है। ऊपर नीचे की ओर भी प्रत्येक पाने पर १.५ – १.५ से.मी. स्थान छोड़कर लिखा गया है। पाना क्र०८,६एवं १४ में आजू–बाजू एवं ऊपर नीचे चारों ओर विशेष खानों वाली बार्डर बनी हुई है।

मध्य में लिखित पंक्तियों की संख्या पाना अनुसार इस प्रकार है –

पाना क्र०	प्र०प्रष्ठ में पंक्तियॉ	द्वि० प्रष्ठ में पंक्तियॉ	पाना क्र०	प्र०प्रष्ठ में पंक्तियॉ	द्वि० प्रष्ठ में पंक्तियॉ
1.	७	८	9.	७	६
2.	७	८	10.	७	७
3.	७	७	11.	७	७
4.	७	८	12.	७	७
5.	७	७	13.	अनुपलब्ध	
6.	७	७	14.	७	६
7.	अनुपलब्ध		15.	७	७
8.	७	७	इसके	आगे के पाने	उपलब्ध नहीं हैं

<u>प्रतिपाद्य विषय</u> – उपलब्ध उल्लिखित १३ पानों में एक श्री शिखर जी की पूजा तथा ५ स्तोत्र पाठ हैं, स्तवन हैं। ७वॉ पाना न होने से सुपार्श्वनाथ स्तवन के मध्य के सात पद्य नहीं हैं। १३ वॉ पाना न होने श्री चिमत्कार जिनेन्द्र स्तवन के भी बीच के ७.५ पद्य नहीं हैं तथा अंतिम सीमंधर जिनेन्द्र स्तवन के प्रारम्भ के ५.५ पद्य ही उपलब्ध हैं क्योंकि आगे के पाना उसमें नहीं हैं। आगे के पानों की अनुपलब्धता से यह भी ज्ञात होना संभव नही है कि उसमें और कितने स्तोत्र–पाठ/स्तवन है/होंगे। अस्तु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) श्री सम्मेद शिखर जी पूजा – स्थापना छंद –१, जल से लेकर अर्घ पर्यन्त ६ पद्य, जयमाला के १२ पद्य और १३ वें घत्ता छंद में पूजा की समाप्ति है। इसके आगे ५ पद्य और हैं जिनमें क्रमशः (१) त्रिलोक संबंधि जिनेन्द्रों को अर्घ निर्वाण क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए २२वें श्री नेमिनाथ १२वें श्री वासुपूज्य, २४ वें श्री वीर प्रभु और आदि तीर्थकर भगवान ऋषभदेव के अर्घ समर्पित किया गया है। इसके आगे के दो पद्यों में श्री सिद्धाचल के दर्शन का फल/लाभ बतलाया है। उन्होंने लिखा है कि इसके दर्शन से गतिद्वय (नरक एवं त्रिर्यंचगति) का बंध नही होता तथा एकोन पंचाशत = ४६ भवों के भीतर जीव को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। इस प्रकार इस पूजा में कुल 1+9+13+5+2=30 पद्य हैं। यह पूजा पाना क्रं० १ से ४ तक में समाहित है।

(२) श्री चन्द्रप्रभ स्तवन – आठवें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभ जी का स्तवन पाना क्रं० ५ व ६ में ६ पद्यों में दिया है। १०वें ११वें पद्य में इस स्तवन का फल दर्शाया है।११वें पद्य में रचनाकार श्री नेमिचंद्र ने अपनी लघुता भी प्रकट की है।

(३) श्री पार्श्वनाथ स्तवन – २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जी का यह स्तवन पाना क्रं० ६ से ही शुरू हो जाता है जो ११वें पाना तक ३३ पद्यों में समाहित है। ७वॉ पाना अनुपलब्ध होने से तीसरे पद्य के उत्तरार्ध से लेकर १०वें पद्य के पूवार्ध तक के पद्य इसमें नहीं है, शेष पद्यों में से २३वां पद्य भी इसमें नहीं है परन्तु आठवें पाने पर बाजू में बार्डर पर एक अतिरिक्त पद्य अंकित है जिस पर १४ संख्या लिखी है जबकि १४वॉ पद्य रचना में पहले से ही है। २६वें पद्य में स्तोत्रपाठ का फल दर्शातें हुए ३३वें पद्य में रचनाकार ने अपनी लघुता दर्शायी है।

(४) श्री नेमिनाथ स्तवन – ११वें १२वें पानों में ६ पद्यों में २२ वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का यह स्तवन अंकित है। ५वें पद्य में इस स्तोत्रपाठ का फल दर्शाते हुए छठे पद्य में श्री नेमिनाथ ने कहा है कि बुद्धि समाधि के लाभार्थ उन्होने इस स्तवन की रचना की है।

(५) श्री चिमत्कार जिनेन्द्र स्तवन – १२वें पाने से प्रारम्भ होकर १५वें पाने तक १५ पद्यों में यह स्तवन रचित है। १३वॉ पाना अनुपलब्ध है। अतः तीसरे पद्य से लेकर ६वें पद्य के पूवार्ध तक के पद्य इसमें नही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभी मंगलो की प्राप्ति हेतु तथा पापों को क्षय करने के लिए मैं (नेमिचंद्र) अल्हणपुर के बाहर तीर्थ सहस सत्क्षेत्र में धरातल को भेदकर प्रकट हुए श्री चिमत्कार जिनेन्द्र का स्तवन करता हूँ। १–२ तीनों संध्याओं में श्री चिमत्कार जिनेन्द्र की वंदना तथा स्तोत्र पाठ करने से शरीर में दुखोत्पादक आतंक उत्पन्न/पैदा नहीं होते। नेमिचंद्र द्वारा रचित इस स्तवन को हे भव्यों ! शुद्ध भाव से पढ़ो। यह पापों का क्षय करने में समर्थ हैं।

(६) श्री सीमंधर जिनेन्द्र स्तवन – १५वें पाने पर ही इस स्तवन की शुरूआत है। इसके ५.५ पद्य ही है। आगे के पाना अनुपलब्ध हैं। अतः यह स्तवन कितने पद्यों में पूर्ण हुआ है? यह अज्ञात है।

रचनाकार कौन?

पूजा तथा स्तवनों में आये कुछ पद्यों से रचनाकार का नाम नेमिचंद्र प्रकट होता है। तद्यथा–

1. कृतंचोन्मत्तबुद्धेन बुद्धिबोधाय केवलम्।
   नेमींदुना सदाभव्या पठंतु स्तवनं त्रिधा।।११।। श्री चन्द्रप्रभ स्तवन ।।
2. कृतं श्री पार्श्वनाथस्य स्तवं नेमींदुना बुधा।
   तुच्छबोध प्रदीपेन पठंतु सर्वसिद्धये।।३३।। श्री पार्श्वनाथ स्तवन।।
3. नेमींदुनाकृतं चेतत् नेमिनाथजिनस्य वै।
   बुद्धिसमाधिलाभायअस्तु मे च भवे भवे।।६।। श्री नेमिनाथ स्तवन।।
4. यः सैलराजस्य करोति नाथैः पूजां विधानेन लभंति मोक्षम्।
   अगण्यता यत्र गता मुनिन्द्रा नेमींदु नित्यं प्रणमंति नित्यम्।।१३।।श्री शिखर जी जयमाल।।

रचनाकार की लघुता – रचनाकार श्री नेमीचंद्र ने अपने स्तोत्रों में यत्र तत्र अपनी अल्प बुद्धिमत्ता का प्रकट कर अपनी लघुता/विनम्रता दर्शायी है। जैसे –

1. बुद्धया लवेन किंचिच्च तस्यस्तोत्रं करोम्यहम्।।३।।
   श्री चन्द्रप्रभ स्तवन ।।
2. कृतं चोन्मत्त बुद्धेन बुद्धिबोधाय केवलम्।।
   नेमींदुना सदाभव्या पठंतु स्तवनं त्रिधा।।११।। श्री चन्द्रप्रभ स्तवन ।।
3. किंचित बुद्धिबलेनात्र कृतं ते स्तवनं विभो।।११।। श्री चिमत्कार स्तवनम्।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. यस्य स्तोत्रं क्षमो नास्ति कर्तुंधिष्णोदपि भो बुधा।
मादृशा तुच्छबुद्धेन करिष्यामि कथं च तत्।।३।। श्री सीमंधर जिनेन्द्र स्तवन।।

5. तुच्छबोधा प्रदीपेन नेमींदुना श्री पार्श्वनाथस्यस्तवं कृतम्।।३३।। श्री पार्श्वनाथ स्तवन।।

भाषा– पूजा एवं स्तोत्रों की भाषा संस्कृत है।

पद्य – सम्पूर्ण कृति जो उपलब्ध है पद्यमय है। श्लोक/अनुष्टुप छंदों में रचित है। केवल एक पद्य शिखर जी पूजन का १३वॉ पद्य घत्तानंद है।

(क) श एवं स का भेद कई स्थानों पर नहीं किया गया है। शकार को सकार रूप में ही लिखा गया है। (ख) श्लोक के दूसरे चौथे चरण के अंत में म् न करके शब्द के उपर बिंदु ही रखा गया है। जैसे– बुद्धि बोधाय केवलं। (ग) 'ब' को 'व' के रूप में ही लिखा गया है जैसे वोध आदि शब्दों में। (घ) क्रियाओं में जैसे–पठंतु में ठ के उपर बिन्दु रखी गई है जबकि पठन्तु 'न' होना चाहिए। ऐसे अनेक उदा० हैं। (ड.) विसर्गों और रेफों का यथोचित उपयोग नहीं किया गया है। (च) 'अपि' जैसे शब्दों की संधि में 'अ' का ऽ खंडाकार नहीं बनाया गया है।

कुछ उदा० उपर्युक्त कमियों/त्रुटियों के यहॉ दृष्टव्य हैं

सिद्धसैलस्य (शैलस्य), औषधीस(धीश), पदेश्चर(पदेश्वरः), सरणार्थिना(शर), भवनेचरः(नेश्वरः), केसान् (केशान) प्रवेसनं(प्रवेशन्), स्याम् (श्याम), ग्रहात्(गृहात), नासं(नाशं), परीसह(परीषह), वहिना (बहिना), वोध(बोध), प्रगटतां (प्रकटतां), पठंतु(पठन्तु), पठस्यंति(पठिष्यन्ति), उत्पद्यंते (उत्पद्यन्ते) कुर्वंति(कुर्वन्ति), प्रजायंते(प्रजायन्ते)।

नामकरण – कृति का कोई आवरण पृष्ठ/पाना नहीं है जिसमें नाम अंकित हो। अतः इसमें संगृहीत पूजा एवं स्तवनों के संग्रह के आधार पर इसे "श्री शिखर जी पूजा एवं स्तवन संग्रह" नाम दे दिया है।

❑❑❑

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुन्देलखंडी कवि नवलशाह का पद साहित्य

(डॉ. गंगाराम गर्ग, पूर्व प्राचार्य भरतपुर)

बुन्देलखंड के यशस्वी, अध्यात्मी और भक्त कवि देवीदास से पूर्व आविर्भाव भक्त कवि नवलशाह ने वर्धमान पुराण नामक हिन्दी रचना तो की ही शताधिक पद लिखकर बूचाराज, गंगादास रतनकीर्ति, बनारसीदास आदि पद रचिताओं की परम्परा में भी अपना स्थान बनाया। कान्हड़ा, कैदारो, धनाश्री, परज, अड़ानौ, सोरठ, विहागड़ो,कालिंगड़ो, जैजैवन्ती आदि रागों में लिखित उनके ८० पद भरतपुर और टोंक (राज.) के दि० जैन मंदिरों में उपलब्ध हुए हैं। अधिक पद होने की पर्याप्त संभावना है।

'वर्धमान पुराण' काव्य की प्रशस्ति के अनुसार नवलशाह के पूर्वज ··नसी जिला टीकमगढ़ के निवासी थे। बाद में वे जिला छतरपुर के ग्राम खटोला में रहने लगे। इनके पिता का नाम हेताराम और माता का नाम प्रसमति था। नवलशाह के तीन छोटे भाइयों के नाम तुलाराम, घासीराम और खुमानसिंह थे। कवि की वर्धमान पुराण और पदों के अलावा एक लघु रचना 'दोहा पच्चीसी' बीस पंथी दि० जैन मंदिर टोंक में गुटका नं० १०२ ब के पृष्ठ ६ पर उपलब्ध है।

पद साहित्य

'राजुल विरह' 'नीति तत्व' 'जैन सिद्धांत' से सम्बंधित कतिपय पदों को छोड़कर नवलशाह के अधिकांश पद भक्तिपरक हैं। सभी जैन भक्तिकाव्य की परम्परा में नवलशाह की भक्ति भी दास्यभावी है। दास्यभावी भक्ति में आराध्य का गुण कथन, स्वदोष निरूपण, उद्धार की भावना, समर्पण, अनन्यता, आदि विशेषताएं नवलशाह के पदों में पर्याप्त उपलब्ध होती हैं। नवलशाह के आराध्य अठारह दोषों से रहित, चौतीस अतिशय धारी, आठ प्रातिहार्य युक्त हैं। वह अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सुख, और अनंत वीर्य के धारक हैं। नवल के प्रभु इन्द्रादिक देवों द्वारा सेवित और शरणागत वंसल हैं।

उन सों नेह लगाय, तोहि बार बार समझावूँ।
याही ते टेरी कहत हौं, वे हैं सरनासरन सहाय।
निराभरण तन सुंदर सोहै आतम सौ लौं लाय ।
तप करि के सब कर्म खिपाये, केवलग्यांन उपाय।
मनः क्षुधया तृषादिक दोष अठारह जाके हुं नहीं पाय।
च्यारि तीस अतिसै को धारैं प्रातहार्ज्य वसु थाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरसन ग्यांन बहुरि सुख जाके वीरज अनंत कहाय।
निस दिन सेवा करे इन्द्रादिक, भक्ति हेतु गुन गाय।
जाको नाम लीया सुख उपजे सब दुख जाय नसाय।
'नवल' कहै ऐसे प्रभु जाकौ नित प्रति सीस नवाय।

जैन सिद्धांत की परम्परा में तीर्थंकरों में प्रेरणाजन्य कतृर्त्त्व स्वीकार कर लिए जाने के कारण भक्तों के लिए तीर्थंकर भक्त वत्सल और दीन दयालु रहे हैं। विभिन्न कषायों से युक्त भक्त का अज्ञानी मन तीर्थंकर की शरण में ही अपना कल्याण देखता है। नवल का यह पद तुलसी सूर आदि भक्त कवियों की परम्परा से उन्हें अलग नहीं कर पाता –

देव दीन को दयाल, जान चरन सरन आयौ।
भक्तन को कष्ट देसि , ढील हू न लाओ ।
है समस्त दुष भार, एक षिनक में मिटाओ।
कृपासिंधु नाम तेरो , वेदन में गायो।
हेय उपादेय सब, मारग दरसायो।
मैं तो काय अंध तोहि, भेद नही पायो।
क्रोध, मान, माया, लोभ, मोह में फसायो।
ऊंच और नीच कछु, भेद न करायो।
नवल गही सरन ताको, सबै में नसायो।

सांसारिक कष्टों से घिरे रहने के कारण व किसी धर्मसाधना की अनुपालना न कर सकने के कारण भक्त का मन आराध्य के समक्ष अधिक द्रवित हो जाता है। भक्त नवल भी प्रभु से दुराव न रखते हुए स्पष्ट कह देते हैं कि वह क्रोध, लोभ, मोह, असत्य वचन आदि दुर्गुणों से निरंतर पीड़ित रहे। परिजनों ने दान, पूजा, नाम स्मरण आदि किसी धर्म साधन को नही अपनाने दिया बुद्धि के अभाव में मिथ्यात्व का अधिक सेवन किया। यह सब जान भी प्रभु को भक्त का उद्धार करना है। 'प्रभु तकसीर माफ करिऐ' पंक्ति में भक्त की दीनता उल्लेखनीय है।

प्रभु तकसीर माफ करिऐ,
समझि बिन पाप मिथ्यात्व बहु सेइयो,
ताहि लषि तनक हू चित्त न धरिऐ,
तात मात सुत भ्रात फुन कामिनि ,
इन संगि राचि निज गुन बिसरिये,
मन मायाचारी क्रोध नही तजि सक्यो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीय समता रस न मोह हरिये ,
दान पूजादि विधि सौंज नही बनी,
सुथिर चित्त बिना तुम ध्यान धरिये,
लोभ लागो पथ अपथ नही जोइये,
असति वचन हूं बोलि उदर भरिये,
दोस अनेक विधि लगति को लौं,
येक जिन नाम तैं सुख विथुरिये,
नवल हूं विनती करत जननाथ
काटि जम फांसि ज्यौं, भव जल तिरिये,

इंद्रिय शैथिल्य की कल्पना और संयम, भक्ति, तप, व्रत आदि धार्मिक साधनों में व्यवधान पाकर भक्त प्रभु की दया के लिए ही तरसता है। 'क्यों न दया घट आवे' कथन भक्त की तीव्र पीड़ा का व्यंजक है –

अहौ मोरी पीर को पावे, निस दिन जरा दबावै।
ज्यौं ज्यौं शिथिल होत प्रान मेरे, त्यौं त्यौ अधिक बढ़ाबै।
जैहैं दसन सबै सोरे हैं, लोचन दृष्टि दूर नही जावै।
श्रवनन बैन सुनत हूं थोरे, दुरबल अंग करावै ।
पूजा, संयम, भक्ति, गान, नृत तप, व्रत आदि किया न वय पावै।
नवल दीन की दस देषि प्रभु क्यों न दया घट आवे।

जैन भक्त कवियों में द्यानतराय ने द्रोपति, सीता, सेठ सुदर्शन, दौलतराम ने बाराह और मर्कट, पार्श्वदास ने अजंन चोर और चाण्डाल के उदाहरण देकर तीर्थंकर के उद्धार करने की प्रवृत्ति को उसके विरह के रूप में चित्रित किया है। भक्त कवि नवल भी तीर्थंकर और अपना सम्बंध 'साहिबि सेवर' का मानते हुए 'अधम उधारक के विरद का स्मरण भक्तिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्ति के अनुरूप ही कराते हैं –

संकट दूरि करो प्रभु मेरो।
दुष हरता कोउ और न दीसे, यातें सरनो पकरयो है तेरो।
निश्चै सीषि सुनि ग्रंथनि में, अधम उधारक विरद भलेरौ।
जब ही कष्ट पर्‌यो भक्तन मैं तब ही आय कीयो उपदेरो।
तुम सरधान बिना त्रभुवनपति, कीनौ भव भव फेरौ।
अब तो यह परततीति भई है परौ रहो जिन चरनन नेरौ।
प्रभु गुन याद करत हैं जब ही, उपजत है उर हरष घनेरौ।
नवल कहे अब ढील न कीजे, साहिब सेवक को यहां बेरो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरणों से सिद्ध क्षेत्र जाने, हाथों से पूजा–अर्चना करने, श्रवनों से वीतरागियों के उपदेश सुनने, रसना से नवकार का जाप जपने, आखों से प्रभु दर्शन करने, मस्तक से प्रभु प्रतिमा को प्रणाम करने, एवं हृदय से पंच परमेष्ठी का ध्यान धरने का व्रत लेने में ही नवल ने मानव जीवन की सार्थकता समझी हैं। आराध्य के प्रति ऐसा पूर्ण समर्पण भाव भक्त हृदय की श्रेष्ठता का परिचायकहै –

नहिं ऐसों जनम बारंबार।
सत संगति उँतिम नर को भव, कुल श्रावक आचार।
चरन लेह बंधन सिध सेतर, कर निज पूजा सार ।
श्रवन सुनत उपदेस लहे है, रसन पढ़त नवकार ।
मस्तक जिनि पद के नमिवे को चष प्रभु वदन निहार।
पंच परम गुरू ध्यान निमित्त उर, प्रक्कम पर उपगार।
ऐसी सोंज पाय करि भजिये, धरम दया सिरदार ।
जनम सफल है नवल करो भवि, समकित अंगिकार।

भक्त हृदय की विह्लता और अनन्यता नवलशाह ने चंद चकोरी के उदाहरण से अभिव्यंक्त की है –

तुमको लाज मोरी प्रभुजी, तुमको लाज मोरी मोकूँ पार उतार्‌यो चहिए।
कल न परत प्रभु तुम बिन मोकूं, जैसे चंद चकोरी

भक्त नवल की भक्ति किन्हीं लौकिक उपलब्धियों की दृष्टि से नहीं, भव जल से मुक्त होने के लिए है। वह आराध्य से यही याचना करते हैं कि मुख से प्रभु का गान, तथा कानों से यश–श्रवण करते रहे। प्रभु चरणो में सिर नवाते हुए उसके गुणो को हृदय में धारण करते रहें –

तेई धन्य भविक जन प्रानी, जे नावत प्रभु चरनन भाल।
मुख करि गान श्रवन जस सुनिवो, उर धारत गुनमाल।
मैं इह जाचत हों करूना निधि, मो विनती सुनिये दरहाल।
नवल तणी अभिलाषा पूरो , काटो भव फंद जाल ।

नंवधा भक्ति के श्रवण, कीर्तन, पाद सेवन, अर्चन, वंदन आदि सभी साधनों में निष्ठा रखते हुए भी नवलशाह नें सर्वाधिक महत्त्व नाम स्मरण को दिया। नाम स्मरण की साधना को सरल और सुखद मानते हुए भी संत कवियों के समान उसमें मन की स्थिरता और निर्विकल्प भाव की विद्यमानता भक्त नवलराम ने अनिवार्य समझी है –

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिन नाम सहाइ सदा मोहि
सविकल्प तजि प्रीति धारि उर जपि मन करि थिर ताइ।
जे गुन गावत वांछित पावत, महिमा कही न जाइ ।
जाको जपि जपि अधम तरे, अर मुकत तणी रिध पाइ।
खेद न होत नेंक हूं जामैं, कारज्ज सहज सुभाइ ।
'नवल' कहें कछु विगरत नाहीं, जिन जिन कहता माइ।

जैन पद साहित्य में 'श्रुत भक्ति' 'श्रुत देवी' अथवा 'श्रुतधरों' की वंदना की अपेक्षा जैन शास्त्रों के प्रति पूज्य भाव के रूप में ही होती रही है। मध्यकाल में प्रादुर्भूत 'तारण पंथ' नामक आम्नाय ने शास्त्रों की पूजा को अधिक महत्त्व दिया। तेरह पंथ आम्नाय में अर्हन्त और शास्त्रों की भक्ति भी समानांतर होकर चलीं। श्रुत भक्त नवलशाह ने भी जिनवाणी को पाप और दुर्गति को नष्ट कर के कल्याण देने वाली कहा है –

यहै जिनवाणी, यहै जिनवाणी
अति ही सुहानी, पाप हरनि सुखदानी।
जा सुनियत सुख संपत्ति आवे, दुर्गति जाति बषानी।
या बानि तें बहु उधरे हैं, तिनकी कथा सुहानी ।

दास्यभक्ति प्रतिपादिक अधिकांश पदों के अतिरिक्त नवलशाह ने कुछ पद राजुल विरह से सम्बंधित भी लिखे हैं। राजुल विरह की लड़ी में मार्मिक भावों के मुक्ता बड़े काव्य कौशल से पिरोये गये हैं। राजुल नेमिनाथ के विरह प्रसंग में श्रंगार का विरक्ति में परिवर्तित होने का भाव बड़ा ही अनुभूतिमय है। आभूषणों से सुसज्जित राजुल के मन में यकायक विरक्ति भाव उदय बड़ा ही प्रभावोत्पादक है –

मेरो मन लाग्यो प्रभु लार री, मोहि शीघ्र आज्ञा दीजे ।
सुनि जननि ये अरज हमारी, छिन हू ढील न कीजे।
इत दुख उत सुख भासत मोकों, पै निश्चै सुनि लीजे।
ऐसी उत्तम दाव पाय करि, अबको कूप परीजे ।
ये सिंगार उतार पियारी इन तें मो दिल छीजे ।
वै सिंगार बनाय हमारो, ताते पीय मन रीझे ।
मेरे तो उर माहिं बसी इम, भव वनवास दईजे।
'नवल' नेम जादों कुल मंडन, जिनवर पाय गहीजे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संत कबीर के समान बाह्याचार के प्रति तीखे तेवर दिखलाने वाले बुंदेलखंड़ी कवि ने अपने पदों में दास्यभक्ति, राजुल विरह, नीति तत्त्व तथा जैन सिद्धांत को अभिव्यक्ति प्रदान की किन्तु नवलशाह सिद्धांत विवेचन एवं खंडनात्मक प्रवृत्ति की उपेक्षा कर मूलतः भक्त ही बने रहे। उन्होने इन्द्रिय निग्रह, दया, वचन दया, भवितव्यता, पाप परिणाम, काल की भयावहता आदि नीति विषयों को अवश्य छुआ, किन्तु अभिव्यक्ति शैली उपदेशात्मक ही रही। नीति प्रतिपादन में देवीदास की वाणी जहॉ बड़ी प्रभावोत्तेजक और प्रखर रही वहां नलवशाह की सरल और व्याख्यात्मक। कवि दया,अदया के परिणाम को 'कित सुमेर कित तूल' की लोकोत्ति के माध्यम से व्यक्त करते हैं –

दया किया ते सब सुख पैहैं, अदया ते दुख सूल ।
नवल तफावत बड़ा दुहुन मैं, कित सुमेर कित सूल।

सभी प्राणियों के प्रति समता भाव और हितकारी तथा मधुर वचन कहना कवि नवलशाह का निर्देश है –

दुष काहू नहिं दीजे भाई।
जीव जंत जग में है तिन सों, समता भाव करीजे।
मन वच काय दया पाल्या ते, सुरग विभूति लहीजे।
नाहक पर पीड़ा उपजाया, नरक निगोद परीजे ।
मरम छेदि कहिवो नहिं करिये, हित मित वचन कहीजे।

अभिव्यक्ति पक्ष

नवलशाह सूर, तुलसी, रत्नकीर्ति द्वारा प्रवाहित भक्ति परम्परा के श्रेष्ठ कवि हैं। गीति काव्य की श्रेष्ठता के अनुरूप उनके पदों में गेयता व लालित्य विद्यमान है। भाषा को मधुर बनाये रखने के लिए उन्होंने वारिधि, सलिल, तुषार जैसे मधुर तत्सम शब्दों को ही लिया।तिसना, सुसरसा, तिरजच, समकित, चस, मस्तग, उछाह, असति, दरब आदि तद्भव शब्दावलि उनके पदों में अधिक प्रयुक्त हुई। भगरूर, दरहाल, बकसि, रवलक, खुशहाल, अरदासि, आदि अरबी,

फारसी शब्दों से परहेज न कर भाषा की व्यवहारिकता को अधिक महत्त्व दिया। राजस्थानी ड़ी प्रत्यय के अतिरिक्त क्रिया रूपों में 'यो' प्रत्यय का निरन्तर उपयोग भाषा की माधुर्य वृद्धि में बड़ा सहयोग प्रद रहा है –

मन अटक्यो नाभिनंदन सौं,
इक टक लागि रह्यो वन ही सों,
और कहीं नही भटक्यो।
उपज्यो पुनि लख्यो मूरति के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जनम जनम अघ सटक्यो।
'नवल' कहै जिन पद पंकज रस
प्रेम मगन होय गटक्यो।

प्रयत्नज अतंकारों के भार से भाषा को बोझिल न बनाने का ध्यान रखते हुए भी नवल की भाषा में उपमा, व्यतिरेक, उदाहरण, दृष्टांत आदि अलंकार सहजता से आए हैं। सत्संगति के महत्त्व को प्रतिपादित करने में एक साथ ही शुक, चंद्रकांतमणि, भ्रमर, कमल, लोहा, पुष्प, लारव आदि अनेक दृष्टांत कवि दृष्टि की व्यापकता को व्यंजित करते हैं। 'समुद्र' के सांग रूप के माध्यम से सांसारिक स्थिति का सटीक चित्रण अनुपम है –

अरे ऐसा भव वारिधि जिन ही पार करे।
लोभ, सलिल दारघ जा मांहि, विषै तरंग उछरै।
कोध लहरि तृष्णा बडवानल, भ्रम को भोर परे।
आसा ग्राह भयानक ताको, देषत जीय डरै।
दुष की पाज अंत नही जाको, सो कैसे उतरै।
'नवल' नाम जिन नाम पकरि के, समता भाव धरौ।

हिन्दी भक्ति काव्य परम्परा में आविर्भूत रीतिकालीन जैन कवि द्यानतराय, भूधरदास, बुधजन, पार्श्वदास, हरिसिंह, नथमल बिलाला के समान नवलसिंह भी श्रेष्ठ भक्त कवि हैं।

OOO

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना की वर्ष २००० की एक संक्षिप्त झलक

ब्र. संदीप "सरल"

जनवरी 2000

अजमेर से प्राप्त लगभग १३०० हस्तलिखित ग्रंथों की वैज्ञानिक रीति से सूचीकरण कराने का कार्य चलता रहा। जैन न्यायाचार्य डॉ. दरबारीलाल जी कोठिया बीना के समाधिमरण पर ६ जनवरी को समाधिमरणोत्साह सभा का आयोजन रखा गया।

फरवरी 2000

4 फरवरी को ज्ञान मंदिर के प्रांगढ़ में भगवान आदिनाथ निर्वाणोत्सव का कार्यक्रम मनाया गया। संस्थान का 8वॉ वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन एवं २० फरवरी को बुन्देलखण्ड में जैन संस्कृति का उन्नयन एवं विकास विषयक संगोष्ठी का भव्य आयोजन श्री लक्ष्मीनारायण एडवोकेट की अध्यक्षता, ड़ॉ भागचंद्रजी भागेन्दु के मुख्य आतिथ्य में अनेकों विद्वानों के मध्य सम्पन्न हुआ। अनेक विद्वानों के सारगर्भित आलेख पठित किये गये।

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान का 70 वॉ दौरा 28 फरवरी को महरोनी,कैलगुवॉ,गुढ़ा आदि का किया। लगभग 50 हस्तलिखित ग्रंथ कैलगुवॉ से प्राप्त हुए।

मार्च –2000

4मार्च को अ.भा. महिला परिषद की प्रांतिय अध्यक्षता डॉ. विमला चौधरी सहित एक 7-8 सदस्यीय दल का जबलपुर से ज्ञान मंदिर में पदार्पण हुआ। सभी ने भूरी–भूरी प्रशंसा एक धर्मसभा के मध्य की। 11 मार्च से 30 मार्च तक शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान का ७१ वॉ दौरा कलकत्ता, इम्फाल, डीमापुर, नलवाड़ी, रंगिया, गुवाहाटी आदि स्थानों पर आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। जिनवाणी की वर्तमान दयनीय दशा पर धर्मसभाएं एवं पाण्डुलिपी प्रदर्शनी ने सर्वत्र एक अनूठी छाप बनाई है। हमारी इस यात्रा में ब्र. अनिल जैन भोपाल एवं पं. अजित कुमार शास्त्री अशोकनगर ने अच्छा सहयोग प्रदान किया।

डीमापुर, इम्फाल एवं गुवाहाटी के श्रावक बंधुओं ने जिनवाणी संरक्षण के प्रति अभूतपूर्व समर्पण भाव प्रकट किया। ३० मार्च को कटनी में मुनि श्री १०८ कुलंकरनंदी जी महाराज को अनेकांत दर्पण भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रैल 2000

9 अप्रेल को इम्फाल (मणिपुर)समाज की ओर से पं.धर्मचंद्र जी शास्त्री शोध संस्थान का निरीक्षण करने के लिए आए। इधर की गतिविधियों से प्रभावित होकर पं. जी ने कहा की समर्पित होकर संस्थान के लिए कार्य करवाता रहूँगा ।

१५ अप्रेल को शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के अंतर्गत बबीना पहुँचे। इधर से भी ग्रंथ प्राप्त हुए। १६ को फिरोजाबाद में हस्तलिखित ग्रंथ प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

'महाकवि रइधू पुरस्कार का भव्य आयोजन'

17-7-2000 को पं. श्यामसुंदर लाल जैन शास्त्री न्यास फिरोजाबाद द्वारा अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना द्वारा की जा रही श्रुत संरक्षण संवर्द्धन सेवा के उपलक्ष में महाकवि रइधू पुरस्कार प्रदान किया। पं. नरेन्द्र प्रकाश जी प्राचार्य ने ज्ञान मंदिर को टॉप टेन की श्रेणी में सम्मिलित कर देश का दुर्लभ केन्द्र बतलाया। फिरोजाबाद की समस्त गणमान्य जनता ने ज्ञान मंदिर के कार्य की खुले ह्रदय से सराहना की। पू. मुनि श्री १०८ निर्णयसागर जी महाराज ने भी धर्मसभा के मध्य कहा कि ज्ञान मंदिर के ठोस रचनात्मक कार्य देश के लिए एक अद्वितीय मिशाल है। ऐत्मादपुर में आचार्य श्री १०८ नेमिसागर जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। १८ अप्रेल को दिल्ली में पं. कुन्दनलालजी से मिले। आपने कुछ बहुमूल्य सामग्री प्रदान की। १९ अप्रेल को मथुरा में पू. मुनि श्री १०८ऊर्जयंत सागरजी महाराज के दर्शनकर ज्ञान मंदिर का परिचय दिया।

मई 2000

१ मई से ३० मई तक अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना के संयोजकत्व में सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया। शिविर दिग. जैन बड़ा मंदिर इटावा में सम्पन्न हुआ । अच्छी संख्या में शिविरार्थी उपस्थित हुए। मई के माह में अनेकांत ग्रंथ रत्नावली का कार्य प्रगति पर होता रहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जून 2000

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के ७३ वें दौरे के अन्तर्गत बबीना में मुनि श्री १०८ चन्द्रप्रभ सागर जी एवं ऐलक १०५ आदर्शसागर के दर्शन किए। आगरा में आर्यिका १०५ बाहुबलीमति माताजी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। आगरा के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. राजकुमार जी साहित्याचार्य के निजी शास्त्र भण्डार से अति महत्वपूर्ण लगभग ३०० मुद्रित ग्रंथ एवं पुस्तकें उनके सुपुत्र अरविन्द जैन एवं राजेश जैन के सौजन्य से प्राप्त हुईं। इस ग्रंथ भण्डार की प्राप्ति में जिनका सहयोग रहा वे हैं– श्री निवास जैन बड़ौत, पं. कुन्दनलाल जैन दिल्ली, डॉ. राजकुमार जैन दिल्ली, श्री सुरेश चन्द्र बारौलिया आगरा।

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के ७४ वें दौरे के अन्तर्गत २३ जून को बाबई पहुँचे। मंदिर छोटा सा है। १०–१२ जैन परिवार है। हस्तलिखित ग्रंथ मंदिर में नहीं हैं। २४जून् को बानापुरा के शास्त्र भण्डार का अवलोकन किया। लगभग ४०–४५ ग्रंथ सुरक्षित दशा में हैं। सिवनी मालवा का शास्त्र भण्डार समृद्ध है। लगभग १०० ग्रंथ हैं। इधर से ७ ग्रंथ प्राप्त हुए। हरदा के मंदिर जी में ग्रंथो का अच्छा भण्डार है। ताड़पत्र पर लिखित त्रिलोकसार ग्रंथ विशेष दर्शनीय हैं। नेमावर होते हुए अजनास पहुँचें। २५ जून को हस्तलिखित ग्रंथ प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। २६जून को खातेगॉव में ग्रंथ प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अजनास के शास्त्र भ्ण्डार से ५० हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुए।

"अनेकांत वाचनालय अजनास की स्थापना"

२७ जून२००० को समस्त समाज का उत्साह देखते हुए अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना की प्रथम शाखा अनेकांत वाचनालय की स्थापना एक भव्य कार्यक्रम के मध्य की गई। २७ को बाड़ी आए,हस्तलिखित ग्रंथ नहीं हैं। २८जून को बरेली में ग्रंथ प्रदर्शनी का भव्य आयोजन एवं धर्मसभा का समायोजन किया गया।

"श्रुतधाम बीना में श्रुत पंचमी महोत्सव सम्पन्न"

६जून २००० को अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना में श्रुत पंचमी महोत्सव का आयोजन डॉ. भागचंद्र जी 'भागेन्दु' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। २५ मंगल कलशों सै मॉ जिनवाणी की आरंती की गई।हस्तकला ग्रंथ संरक्षण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जुलाई 2000

15 जुलाई को पिपरई नगर में एक धर्मसभा का भव्यायोजन किया गया एवं जिनवाणी संरक्षण पर प्रकाश डाला गया। श्री सुरेश जैन मारोरा शिवपुरी से आये, ज्ञान मंदिर की सुव्यवस्था से काफी प्रभावित हुए।

अगस्त 2000

1 अगस्त को इन्दौर से डॉ. अनुपम जैन, डॉ. महेश कुमार "मनुज" श्री हीरालाल जैन भावनगर पधारे, ज्ञान मंदिर का अवलोकन कर अत्यन्त प्रभावित हुए। शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के ७५ वें दौरे के अन्तर्गत ८ अगस्त को सोनागिर पहुँचे। यहाँ पर मुनि श्री१०८ कीर्तिसागर जी महाराज, मुनि श्री १०८ सुतपसागरजी एवं परम पूज्य तपस्वी १०८ कैलाशसागर जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मुरैना में पं. बालमुकुन्दजी शास्त्री एवं डॉ. हरिशचंद्र जी से देर तक चर्चा होती रही।

९अगस्त को प्रातः राजाखेड़ा पहुँचें। पूज्य मुनि श्री १०८ पुण्यसागर जी महाराज के सानिध्य में हस्तलिखित ग्रंथ प्रदर्शनी का भव्य समायोजन किया गया। मुनि श्री ने अनेकांत ज्ञान मंदिर के सृजनात्मक कार्यों की अनुशंसा की। टूण्डला में पूज्य मुनि श्री १०८ निर्णय सागर जी महाराज के दर्शन कर कार्य की जानकारी दी। जालोर के ग्रंथों का अवलोकन किया, ३०–४०ग्रंथ अव्यवस्थित दशा में हैं। अवागढ में ब्र. राकेश जी, ब्र.प्रकाशचंद्र जी के सानिध्य में पाण्डुलिपी प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया।ब्र. राकेश जी ने कहा कि ज्ञान मंदिर बीना से प्रेरणा लेकर अनेक स्थलों पर जिनवाणी संरक्षण का कार्य भी मैने प्रारंभ कराया है। १०अगस्त को एटा में आर्यिकारत्न १०५ विशुद्धमति माता जी ससंघ के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया एवं अनेकांत ज्ञान मंदिर की संचालित गतिविधियों से परिचित कराया। ११–१२ अगस्त को अलीगढ़ में इन्द्रध्वज मण्डल विधान के अवसर पर ग्रंथ प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। मंदिर जी के ग्रंथों का अवलोकन किया गया। सासनी में भी मंदिर के सर्वेक्षण का कार्य किया। दिल्ली से पाण्डुलिपी विज्ञ पं. कुन्दन लाल जी दिल्ली का आगमन हुआ। ३दिन तक प्रवास बना रहा । ज्ञान मंदिर परिवार की ओर से एक धर्मसभा में उनका सम्मान किया गया। धर्मसभा के मध्य पं. जी ने कहा कि अनेकांत ज्ञान मंदिर का नाम एक राष्ट्रीय स्तर पर आ चुका है, इसके मुकाबले की कोई भी संस्था भारत वर्ष में दिखाई नही देती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सितम्बर 2000

१ सितम्बर को शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के ७६वें दौरे के अन्तर्गत खतौली पहुँचे। खतौली के सभी मंदिरों के ग्रंथों का सर्वेक्षण एवं सूचीकरण का कार्य किया। रात्रि में ग्रंथ प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया। २ सित. से १२ सित. तक दशलक्षण पर्व पर मुजफ्फरनगर में रहकर जिनवाणी प्रभावना का कार्य वृहद् स्तर पर होता रहा। मुजफ्फरनगर में ग्रंथ प्रदर्शनी के माध्यम से अच्छी प्रभावना हुई। २ सित. को ७७वें दौरे अन्तर्गत बिहारी एवं मन्सूरपुर के मंदिरों का सर्वेक्षण किया। ५ सित. को ७८वें दौरे के अन्तर्गत कवाल, बइसूमा, मीरापुर, हस्तिनापुर, जानसट का दौरा किया। इस दौरे में लगभग ५० ग्रंथ प्राप्त हुए। १० सित. को ७६वें दौरे के अन्तर्गत जौला एवं शाहपुर का सर्वे किया। जौला मंदिर से लगभग ४० ग्रंथ प्राप्त हुए। शाहपुर से एक काष्ट फलक की प्राप्ति हुई। शाहपुर मंदिर में लगभग १५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। १३ सित. को अभियान के ८०वें दौरे के अन्तर्गत सरधना में परम पूज्य आचार्य श्री १०८ धर्मभूषणजी महाराज के पुनीत सानिध्य में पाण्डुलिपि प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया। आचार्य श्री ने भी जिनवाणी की महिमा पर अपना सारभूत प्रवचन दिया। सरधना के बड़े मंदिर में हस्तलिखित ग्रंथों का अच्छा भण्डार है लेकिन प्रयास करने पर भी देखने का सौभाग्य नहीं मिल सका। मोदीनगर में पूज्य मुनि श्री १०८ ज्ञानसागर जी महाराज के सानिध्य में प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयेजन किया गया। १४–१५ सित. को अभियान के ८१वें दौरे के अन्तर्गत दिग. जैन मंदिर तीरगराना एवं सदर बाजार में ग्रंथ प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया। १७–१८ सित. को गाजियाबाद में परम पूज्य मुनि श्री १०८ सौरभ सागरजी महाराज एवं मुनि श्री १०८ प्रबल सागर जी महाराज के सानिध्य में पाण्डुलिपि प्रदर्शनी एवं जिनवाणी संरक्षण पर धर्मसभा का आयोजन किया गया। मुनि द्वय ने मुक्त कंठ से ज्ञान मंदिर के स्रजनात्मक कार्यों की अनुशंसा की।

३०सित. को अभियान के ८२वें दौरे अन्तर्गत कोठिया परिवार बीना के यहाँ से लगभग ६० ग्रंथराज अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना के लिए श्री विभव कुमार जी कोठ़िया एवं समस्त कोठिया परिवार ने भेंट स्वरूप प्रदान किए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्टूबर 2000

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के ८३वें दौरे के अन्तर्गत ८–१० को तालेड़ा (कोटा) में आचार्य श्री १०८ कर्मविजय नंदीजी महाराज के दर्शन कर संस्थान की गतिविधियों का परिचय देकर आशीर्वाद ग्रहण किया। ६–१० को बूंदी के मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य किया। श्री आदिनाथ जिनालय बूंदी से लगभग ४० पाण्डुलिपियां जीर्ण–शीर्ण अवस्था में प्राप्त हुईं। इधर से बड़ा नयॉ गॉव पहुॅचे, १०–१२ जैन परिवार हैं। १०–१० को देवली में परम पूज्य आचार्य श्री १०८ चन्द्रसागर जी महाराज के सानिध्य म पाण्डुलिपि प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया। ११–१० को निवाई में परम पूज्य उपाध्याय श्री १०८ ज्ञानसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में ग्रंथ प्रदर्शनी का शुभारम्भ श्री सोहनलाल डीमापुर ने किया। धर्मसभा में उपाध्याय श्री एवं पं. निर्मल जी सतना ने अच्छा उद्‌बोधन दिया। इधर से महेन्द्रवास अतिशय क्षेत्र के दर्शन करते हुए टोड़ारायसिंह पहुॅचे।

१२–१० को टोड़ा. में परम पूज्य आचार्य श्री १०८ वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया। आचार्य श्री ने खुले ह्रदय से ज्ञान मंदिर के कार्यों की सराहना करते हुए, देश का ही नहीं अपितु विश्व का अद्वितीय कार्य कहा। मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज ने भी अच्छा प्रकाश डाला। १४–१५ अक्टूबर को भीलवाड़ा में परम पूज्य मुनि श्री १०८ ब्रम्हानंद सागरजी महाराज एवं मुनि श्री १०८ सूर्यसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में हस्तलिखित ग्रंथ प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया। मुनिद्वय ने जिनवाणी संरक्षण पर श्रावकों का ध्यान आकर्षित किया। भीलवाड़ा में श्री बड़ीलाल जी स्वर्णकार द्वारा दुर्लभ ताड़पत्र ग्रंथ प्राप्त हुआ।

१५ को चम्बलेश्वर के दर्शन करते हुए,रोपॉ पहुॅचे। यहॉ पूज्य मुनि श्री १०८ पार्श्वसागर जी महाराज के दर्शन प्राप्त हुए। ग्रंथ प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। १६–१० को झालरापाटन के ग्रंथ भण्डार का अवलोकन किया। भण्डार के संरक्षण की महती आवश्यकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नबम्वर 2000

"अनेकांत वाचनालय पिपरई की स्थापना" अनेकांत ज्ञान मदिर शोध संस्थान बीना की द्वितीय शाखा अनेकांत वाचनालय पिपराई की स्थापना १ नबम्वर को प्रातः परम पूज्य मुनि श्री १०८ सरलसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में एक धर्म सभा के मध्य हुई। उद्घाटन श्री अशोक जैन ने किया। उद्घाटन के अवसर पर लगभग २००लोंगो ने स्वाध्याय करने का नियम लिया।इस अवसर पर अनेकांत ज्ञान मंदिर द्वारा प्रकाशित परम पूज्य गुरूवर श्री १०८ सरल सागर जी महाराज द्वारा रचित कृति पंच कल्याण गजरथ समीक्षा का विमोचन डॉ. अशोक जैन पिपरई ने किया। संस्थान समाचार का विमोचन श्री सुबोध कुमार जैन मजिस्ट्रेट खुरई ने किया। ३.११.२००० को आर्यिका १०५ प्रशांतमति माता जी के संघ का ज्ञान मंदिर में पदार्पण हुआ। आर्यिका संघ ज्ञान मंदिर के दर्शन कर आश्चर्य चकित रह गया। आर्यिका संघ के लिए शास्त्र भेंट किए गए। आर्यिका संघ ने प्रवचन सभा के मध्य ज्ञान मंदिर के कार्य की अनुशंसा करते हुए सम्पूर्ण विश्व की अद्वितीय संस्था कहा। ११–१२ नबम्वर को शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के ८५वें दौरे के अन्तर्गत कुरवाई में हस्तलिखित ग्रंथ प्रदर्शनी का आयोजन इन्द्रध्वज विधान के मध्य किया गया।

"अनेकांत वाचनालय मुगॉवली की स्थापना"

अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना की तृतीय शाखा की स्थापना १६–११–२००० को मुगॉवली में एक धर्मसभा के मध्य की गई। परम पूज्य गुरूदेव मुनि श्री १०८ सरल सागर जी महाराज ससंघ का पावन सानिध्य रहा।२५.११.२००० को शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के ८६वें दौरे के अन्तर्गत द्रोणगिरि जी पहुँचे। प्रशिक्षण संस्थान में अध्ययनरत छात्रों के लिए अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान के सम्बन्ध में भाषण प्रस्तुत किया।-२६.११ को छतरपुर में आचार्य श्री १०८ सन्मति सागर जी महाराज ससंघ आचार्य श्री १०८ कुशाग्रनंदी जी ससंघ एवं आर्यिका १०५ विजयामति माता जी के सानिध्य में ग्रंथ प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। लगभग ६० पिच्छिका धारी साधक गण उपस्थित थे। प्रवचन सभा के मध्य संस्थान का परिचय भी दिया।छतरपुर से बल्देवगढ़ भी आए। ज्ञात हुआ कि यहॉ पर ग्रंथ नहीं हैं। अतिशय क्षेत्र अहार जी के सरस्वती भण्डार का अवलोकन किया। ६०–७० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो व्यवस्थित हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिसम्बर 2000

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के ८७वें दौरे के अन्तर्गत जरूवाखेड़ा पहुँचें। पिठोरिया मंदिर के हस्तलिखित ग्रंथों का अवलोकन कर सूचीकरण का कार्य किया। पिडरूवा मंदिर के ग्रंथों का भी अवलोकन किया। रात्रि में जरूवाखेड़ा में ग्रंथ प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया। प्रवचन के मध्य ही अनेकांत वाचनालय स्थापना जरूवाखेड़ा की रूपरेखा तैयार की गई। १५.१२ को बरकोटी से ग्रंथों को प्राप्त कर टड़ा पहुँचे, यहॉ पर २ धर्मसभाओं का आयोजन एवं प्रदर्शनी का आयोजन भव्य रूप में किया गया। १६.१२ को सहजपुर में परम पूज्य मुनि श्री १०८ चिन्मय सागर जी एवं मुनि श्री १०८ पावन सागर जी के दर्शन कर संचालित गतिविधियों का परिचय देकर आशीर्वाद प्राप्त किया। मंदिर जी में प्रवचन सभा का भी आयोजन किया गया जो कि बहुत ही सफल रहा। १७.१२ को बीना (बारहा) में संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज ससंघ के दर्शन किए, संघस्थ अनेक साधुओं से ज्ञान मंदिर के सम्बंध में चर्चा भी होती रही। १८.१२ को मानक चौक, पड़ा, पीपरा का दौरा किया। पड़ा से लगभग ३० हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुए।

उपरोक्त समस्त उपलब्धियों को प्राप्त कर शोध संस्थान बीना ने वर्ष २००० को अलविदा कर नई उपलब्धियों के साथ नई सहस्त्राब्दी के प्रथम वर्ष में प्रवेश किया।........

पृष्ठ ८० का शेष

	9.10.2k	बून्दी	52	....	संस्कृत भाषा में ४१, प्राकृत में ६, हिन्दी में ५,
	10.9.2k	देवली	-	....	
	11.10.2k	निवाई	-	....	
		महेन्द्रवास	-	....	
	12.10.2k	टोड़ाराय सिंह	400	....	संस्कृत में २५०,प्राकृत में ४०, हिन्दी में ११०,
	13.10.2k	भीलवाड़ा	1	....	दुर्लभ ताड़ पत्र प्राप्त हुआ।
	15.10.2k	रोपॉ	-	....	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

84.	22.10.2k	उज्जैन	-	पं. सनत कुमार जैन खिमलासा	
		इन्दौर	-	....	
		कटनी	2	श्री मति चन्द्र सिंघई बीना	रांधेलिया परिवार कटनी ने पद्मपुराण वच.एवं हरिवंश पुराण स्वतः प्रेषित किए।
85.	11.11.2k	कुरवाई		श्री रमेशचन्द्र जैन भानगढ़	
86.	25.11.2k	द्रोणगिरि जी		श्री प्रदीप जैन,सुकुमाल जैन, रमेशचन्द्र जैन भानगढ़	
	26.11.2k	छतरपुर		राहुल जैन बीना	
	27.11.2k	अहार जी		... ...	
87.	14.12.2k	पिठौरिया	-	श्री प्रदीप जैन सुकुमाल जैन	लगभग७० ग्रंथ हैं लिस्ट बनाकर लाए,
		पिड़रूवा	-	....	लगभग १००ग्रंथ हैं सुरक्षित दशा में।
	15.12.2k	बरकोटी	38	....	संस्कृत भाषा में३०, हिन्दी भाषा में ८,
		टड़ा		....	
	18.12.2k	मानक चौक		....	
		पड़ा	24	....	संस्कृत भाषा में६, हिन्दी भाषा में १८,
		पीपरा	-	....	
		सुल्तानगंज	11	श्री प्रवीण जैन सुल्तानगंज ने स्वयं आकर ग्रंथ प्रदान किए।	संस्कृत भाषा में२, हिन्दी भाषा में ६,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान एक सर्वेक्षण रिपोर्ट वर्ष 2000

दौरा कं.	दिनांक	स्थान का नाम	प्राप्त ग्रंथ	अभियान में सहयोगी	ग्रंथों का विवरण
70.	28.2.2k	कैलगुवॉ	43	सचिन जैन एवं निवेश जैन	हिन्दी भाषा में३० ग्रंथ संस्कृत में ११, प्राकृत में २,
71.	10.3.2k	कलकत्ता		ब्र. अनिल जैन भोपाल, पं. अजित कुमार शास्त्री अशोकनगर	धर्मसभाओं एवं ग्रंथ प्रदर्शनी के माध्यम से जिनवाणी की प्रभावना की गई।
	13.3.2k	इम्फाल		....	....
	18.3.2k	डीमापुर		....	....
	23.3.2k	नलवाड़ी		....	....
	25.3.2k	रंगिया		....	....
	26.3.2k	गुवाहाटी		....	....
	27.3.2k	चौरंगी मंदिर कलकत्ता		....	....
72.	15.4.2k	बबीना(उ.प्र.)	96	ब्र. सुशीलजी, श्री रमेश कुमार जैन, श्री प्रदीप जैन जरूवाखेड़ा	हिन्दी भाषा में ७८, संस्कृत में १५, प्राकृत में ३,
	16.4.2k	फिरोजाबाद	87	....	हिन्दी भाषा में ६६, संस्कृत में १५, प्राकृत में ३.
	18.4.2k	विश्वासनगर दिल्ली		....	दिल्ली ग्रंथ रत्नाकर की बहुमूल्य सामग्री प्राप्त हुई।
	20.4.2k	बांसी (उ.प्र.)	40	....	हिन्दी में ३४,संस्कृत में ५, प्राकृत में १,
73.	19.6.2k	आगरा	300	डॉ. राजकुमार जैन दिल्ली, राहुल जैन, राकेश माली बीना	मुद्रित लगभग ३०० ग्रंथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

74.	23.6.2k	बाबई		रोमिल जैन नितिन जैन	
	24.6.2k	बानापुरा		....	
		सिवनी मालवा	7	....	हिन्दी भाषा में ५, संस्कृत में २
		हरदा	-	....	
		अजनास	60	....	हिन्दी में ५१, संस्कृत में ६,
	26.6.2k	खातेगांव			
	27.6.2k	बाड़ी			
	28.6.2k	बरेली			
75.	9.8.2k	राजाखेड़ा	-	प. सनतकुमार जैन खिमलासा सौरभ जैन बीना	
		जलेसर	-	....	लगभग ५० हस्त. ग्रंथ मंदिर जी में हैं।
		टूण्डला	-	....	
		अवागढ़	-	....	
	10.8.2k	एटा	-	....	
		अलीगढ़	-	....	
	12.8.2k	सासनी	-	....	
76.	31.8.2k	मुजफ्फरनगर	6	श्री सुकुमाल जैन जरूवाखेड़ा	हिन्दी भाषा में ६,
	1.9.2k	खतौली	-	श्री सुबोध जैन, श्री शीतल प्रसाद जैन मुजफ्फरनगर	
77.	2.9.2k	बिहारी	4	....	हिन्दी भाषा में ४,
		मंसूरपुर	3	....	हिन्दी भाषा में ३,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		वहलना	-	....	
78.	5.9.2k	वैसुम्भा	18	श्री सुबोध जैन	हिन्दी भाषा में १८,
		मीरापुर	8	....	हिन्दी भाषा में ८,
		हस्तिनापुर		....	
		कवाल	72	....	हिन्दी भाषा में६५, संस्कृत भाषा में ७,
		जानसट	51	....	हिन्दी भाषा मे४८, संस्कृत भाषा में ३,
79.	10.9.2k	जौला	43	श्री भगवानदास जी मुजफ्फरनगर	हिन्दी भाषा में४१, संस्कृत भाषा में २,
		शाहपुर	-	....	काष्ट फलक की प्राप्ति हुई।
80.	13.9.2k	सरधना		श्री सुकुमाल जैन जरूवाखेड़ा	
81.	14.9.2k	मेरठ		... ...	
		मोदीनगर		... ...	
		गाजियाबाद		... ...	
82.	30.9.2k	बीना	60	श्री विभव कुमार कोठिया बीना सपरिवार	पं. वंशीधरजी व्याकरणाचार्य एवं डॉ. दरबारी जी कोठिया के भण्डार से ग्रंथ प्रदान किए।
83.	8.10.2k	बीनागंज	-	पं. सनत कुमार जी खिमलासा, श्री इंद्र कुमार जी पिपरई, श्री विजय कुमार पथरिया ब्र. सुशील जी	
		तालेड़ा	-	....	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकांत दर्पण-२०००, समीक्षाओं के क्षितिज पर

अनेकांत दर्पण २००० प्राप्तकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इसमें शोध पूर्ण आलेखों , सूचनाओं एवं अनेकांत ज्ञान मंदिर की प्रगतिपूर्ण गतिविधियों का पारदर्शी विवरण पढ़कर मन आल्हादित हो गया।अनेकों मंदिर के निर्माण, प्रतिष्ठाओं आदि के कार्यों से बढ़कर है शास्त्रोद्धार का कार्य। हस्तलिखित शास्त्रों के पठन पाठन सम्पादन में मेरे परिवार की, पूरी अभिरूची है, निरन्तर संलग्न भी रहते हैं अतः ऐसे कार्यों की महत्ता भी जानते हैं। अभिरूची एवं ज्ञान के अभाव में गॉव–गॉव एवं नगरों के जिनालयों में स्थित जिनवाणी रूप हस्तलिखित ग्रंथों की दुर्दशा एवं उपेक्षा देखता हूँ, तो मन ही मन रोये बिना नहीं रह पाता। आपने इस ज्ञान मंदिर को माध्यम बनाकर इस ओर जनता का जो ध्यान आकृष्ट किया है, एक कृांति और जाग्रति उत्पन्न की है, वह सचमुच सराहनीय है। आप वाराणसी पधारे तो में भी इस ज्ञान मंदिर को कुछ साहित्य भेंटकर प्रसन्नता अनुभव करूंगा। दिनों दिनों यह मंदिर वर्धमान रहकर अपने नाम को सार्थक करे, यही मंगल कामना है। आपका समर्पण पूरे देश की जैन समाज का कर्तव्य और अभियान बनें।

डॉ. फूलचंद जैन 'प्रेमी'
जैन दर्शन विभागाध्यक्ष
सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

अनेकांत दर्पण मिला। आश्चर्य है आपने मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, रोहतक, गुवाहाटी, उज्जैन, जयपुर आदि महानगरों में जाकर पाण्डुलिपि प्रदर्शनी का प्रचार–प्रसार कर जिनवाणी की अपूर्व सेवा की है और हजारों ग्रंथों का संग्रह कर एक अपूर्व ग्रंथालय का निमार्ण कर रहे हैं। एतदर्थ आपको बहुत बहुत बधाईयॉ अभी तक तो मैने ऐसा अभूतपूर्व सेवा का कार्य व इस प्रकार की संस्था की स्थापना कहीं नहीं देखी है। आपका यह कार्य सराहनीय है। इसे सातिशय पुण्य मानना चाहिए, जो आपको अनेक आचार्यो एवं मुनिराजों का आर्शीवाद प्राप्त हो रहा है जो आपकी सफलता का सूचक है।

सात समन्दर पार आलेख में विदेशों में यहॉ से सहस्रों पाण्डुलिपियॉ व ग्रंथ गये है, उनका विवरण पढ़कर एक अद्भुत जानकारी प्राप्त हुई। मेरी मंगल कामना है कि आप ऐसे श्रुत संरक्षण कार्य को भलीभांति करते हुए,यशस्वी हों।

पं० नाथूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य इन्दौर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकांत दर्पण का द्वितीय अंक करगत किया,कृतज्ञ हूँ। श्री अनेकांत ज्ञान मंदिर के माध्यम से आप का सम्पूर्ण पुरूषार्थ प्रकाशित किया है, अनेकांत दर्पण में। सम्पादक द्वय डॉ. रतनचंद्र जैन तथा पं. अभयकुमार शास्त्री ने इसके सम्पादन साफल्य में अनेक शुभ बातें प्रकाशित की हैं। ग्रंथों की तालिका ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है।शोधार्थियों के लिए अच्छी सामग्री संग्रह की है। शरीर ने अनुमति दी तो किसी सुखद प्रसंग में इस सारस्वत क्षेत्र धाम की वंदना करूंगा। डॉ. जैन और शास्त्री जी को मेरी ओर से बहुत बधाईयाँ।

डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया
निदेशक– जैन शोध अकादमी अलीगढ़

अनेकांत दर्पण का अंक क्र० २ मिला। प्रथम अंक पूर्व भूमिका जानने हेतु आवश्यक है।पूज्य मुनि सरल सागर जी के निर्देश पर प्रारम्भिक अवस्था में शोध संस्थान को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वर्तमान में ६००० पाण्डुलिपियों का संकलन एक महान उपलब्धि है। हार्दिक मंगल शुभकामनाऐं। मैं विचार कर रहा हूँ इस महान कार्य में किस प्रकार अपना योगदान दे सकता हूँ।

मिश्री लाल जैन एडवोकेट गुना

अनेकांत दर्पण अंक २ प्राप्त हुआ। आप स्तुत्य कार्य कर रहे हैं तथा आपके प्रयास सराहनीय हैं। अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

अजित कुमार जैन
सम्पादक– शोधादर्श, लखनऊ

अनेकांत दर्पण की प्रति प्राप्त हुई। आप अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान को ज्ञान निधि से सर्वांग बनाने में समर्पण भाव से लगे है, यह न केवल जैन समाज के लिए बल्कि सम्पूर्ण भारतीय मनीषा के लिए गौरव की बात है। यह जानकर साश्चर्य आनंद हुआ कि अजमेर में सोनी जी की नसिया से लगभग १२०० हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध हुए है।यह सब आपके अथक प्रयास का ही परिणाम है। आपके इस संकल्प और प्रयास का श्रेय तो पूज्य मुनि श्री सरल सागर जी को ही है। काश ! हमारे अन्य त्यागी–मुनिगण भी इसी तरह रचनात्मक प्रवृत्तियों में सहयोग करें।

जमनालाल जैन
अभय कुटीर, सारनाथ, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकांत दर्पण पढ़कर मन अति प्रसन्न हुआ। विद्वानों के खोज पूर्ण आलेख बड़े महत्व के हैं। शोधार्थियों के लिए उपादेय हैं। उन्हें अपने कार्य में, समीक्षण में अवश्य ही सहकारी रहेंगे।

संस्थान द्वारा किए जा रहे महती कार्यों से अवगत हुआ। अनेकांत ज्ञान मंदिर के रूप में बीना में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रंथों का एकत्र संग्रह निश्चित ही श्रमसाध्य कार्य श्लाघनीय है। निस्संदेह आप सदृश्य व्यक्ति ही यथार्थ में जिनवाणी की निष्ठापूर्ण सेवा कर सकता है।

अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध के क्षेत्र में जिनवाणी के रहस्यात्मक विविध आयामों को उद्‌घाटित करेगा जिससे मुमुक्षुओं को पथ प्रदर्शन का लाभ होगा, तथा धर्म, समाज एवं राष्ट्र भी समुन्नत होगा। इसी मंगल कामना के साथ योग्य सेवा।

डॉ. धर्मचंद्र जैन
संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र (हरि.)

अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान, बीना द्वारा जो जिनवाणी के प्रचार–प्रसार एवं हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के संरक्षण, जीर्णोद्धार, शास्त्र भण्डार व्यवस्थादि का जो कार्य संथान ने लिया है, वह बहुत ही आवश्यक था। बहुत ही सराहनीय, प्रशंसनीय, और अनुकरणीय कार्य है – अ. भा. दिग. जैन समाज को इसमें पूरा–पूरा सहयोग देना चाहिए। अनेकांत दर्पण के द्वितीय अंक से कई बातों की जानकारी प्राप्त हुई है। मुझसे जो सेवा बनेगी करने का प्रयास करूंगा।

प्रतिष्ठाचार्य
पं. लाड़ली प्रसाद जैन पापड़ीवाल
सवाई माधौपुर (राज.)

अनेकांत ज्ञान मंदिर के अष्टम स्थापना दिवस समारोह पर प्रकाशित अनेकांत दर्पण का यह द्वितीय अंक शोध संस्थान की गति प्रगति का लेखा जोखा होने के साथ–साथ प्रख्यात मनीषियों के इतिहास, पुरातत्व, आगम आचारादि के सांस्कृतिक पक्ष से सम्बंधित विद्वत्ता एवं शोध पूर्ण आलेखों का दर्पण है। आज अनेकांत ज्ञान मंदिर ने जिस निष्टा और समर्पण से शास्त्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरक्षा अभियान को गति दी है वह किसी से छुपी नहीं है। यही कारण है संस्थान अनेकों प्रतिष्ठाप्रद पुरस्कारों से सम्मानित हुआ है तथा इस क्षेत्र में वह वे कांतिमान रंग बिरंगे मणि संचित कर सका है। जिससे संस्कृति की नवोन्मेषी किरणें विकीर्ण हुई है।

समीक्षक– डॉ. विमला जैन
सम्पादक– जैन महिनलादर्श
1/344, सुहागनगर, फिरोजाबाद

"अनेकांत दर्पण" का अंक बहुत ही अच्छा लगा। उसने जो शोध वार्षिकी का दायित्व स्वीकारा है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से लेखों का जो चयन और प्रकाशन हुआ है तथा जो साम्रगी प्रस्तुत हुई है वह ग्रंथ प्रेमियों के लिए और शोधार्थियों के लिए निश्चित ही प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

अनेकांत ज्ञान मंदिर के संग्रह में समाविष्ट सचित्र रविवार व्रत की पाण्डुलिपि का परिचय लेख पढ़कर प्रत्यक्ष वहॉ आकर पाण्डुलिपियों का आपका यह अद्‌भुत संग्रह अपनी आखों से देखने की इच्छा बलवती हो उठी है। आपके अभियान की आज तक की प्रगति सचमुच ही चमत्कारी है, अपने अतिशय से प्रकाशमय हो कर चारों ओर जिनवाणी की आभा फैला रही है। अनेकांत ज्ञान मंदिर अतिशय क्षेत्र ही बना है।

रविकांत शहा प्राचार्य
कोरेगांव

५ वर्षों का आपका त्यागमय, जिनवाणी मां के प्रति वात्सल्य वस्तुतः अत्यन्त स्तुत्य है। ७४ प्रवासों के द्वारा आपने जो हस्तलिखित लगभग ६००० प्राचीन शारुत्रों का संकलन एवं सुरक्षात्मक ठोस कार्य सम्पादित किया है, वह अप्रितम है। मेरा हार्दिक आदरभाव एवं बधाई स्वीकारें।

पं० शिवचरन लाल जैन
अध्यक्ष तीर्थंकर ऋषभदेव
जैन महासंघ–जम्बूद्वीप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शकों की नजर में अनेकांत ज्ञान मंदिर

✹ अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना द्वारा दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों की प्रदर्शनी का एक छोटा सा नमूना हमारे नगर इम्फाल (मणिपुर) के दि० जैन मंदिर में देखने को मिला। ब्र० सरल जी ने अथक परिश्रम करके अल्पावधि में जो दुर्लभ, प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के संकलन एवं संरक्षण का अभूतपूर्व कार्य किया है इस पुनीत कार्य के लिए श्री दि० जैन समाज इम्फाल व मेरी ओर से अनेकशः बधाईया।

तनसुख राय सेठी
अध्यक्ष, दि० जैन समाज इम्फाल

✹ परम हर्ष की बात है कि ब्र. संदीप भैया जी अपनी टीम सहित डीमापुर (नागालैण्ड) पधारे। अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना द्वारा आयोजित हस्तलिखित ग्रंथों का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। ताड़पत्र पर लिखित भक्तामर स्तोत्र के दर्शन कर मन में अलौकिक शांति का अनुभव हुआ। इस कार्य की प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।समस्त दि० जैन समाज को तन, मन, धन से सहयोग करना चाहिए।संस्था की उन्नति के लिए हमारा पूर्ण सहयोग रहेगा।

इन्द्रादेवी गंगवाल
महामंत्री, दि० जैन महिला समाज, डीमापुर

✹ अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना के प्रणेता ब्र. संदीप जी सरल ने अति प्राचीन, दुर्लभ शास्त्रों की प्रदर्शनी के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की है। इस महान पवित्र कार्य से प्रभावित होकर सम्पूर्ण जैन समाज मां जिनवाणी के जीर्णोद्धार में संलग्न हो गया है। प्राचीन काल में आचार्य पुष्पदंत भूतबलि ने ग्रंथ लेखन का युग आरम्भ किया था तो इस कलिकाल में ब्र. संदीप जी सरल ने उनके संरक्षण कार्य अपने हाथ में लेकर एक नए युग का शुभारम्भ किया है। उनका नाम स्वर्णाक्षरों में चिरकाल के लिए अंकित रहेगा।

पं० उत्तम चंद शास्त्री, डीमापुर

✹ अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना में ब्र. संदीप जी सरल के सद्प्रयासों से मां जिनवाणी की जिस तरह सेवा की जा रही है इस बात को सुनकर मन प्रसन्नता से भर गया। भगवान से प्रार्थना है कि आप इस कार्य को हमेशा उन्नति के शिखर पर पहुँचाते रहें।

ताराचंद पहाड़िया, इम्फाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❋ आज दि. ६.४.२००० को इम्फाल जैन समाज की विशेष प्रेरणा से अनेकांत ज्ञान मंदिर देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जीवन में अनेकों जगह भ्रमण करने के उपरांत, बंगाल, आसाम, काठमाण्डु, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक आदि किसी भी स्थान में प्राचीन शास्त्रों के जीर्णोद्धार का कार्य कहीं भी नहीं हुआ है। श्री ब्र. संदीप जी ने अपने नाम को सार्थक किया। मंत्री जी व श्री पद्मचंद जी आदि से मिलकर प्रसन्नता हुई। मुझे आशा है कि यह संस्थां भविष्य में उत्तरोत्तर बढ़ती रहेगी।

पं० धर्मचन्द्र जैन थांगल बाजार, इम्फाल

❋ पाण्डुलिपियों का अनूठा अद्‌भुत संग्रह देखा। जैन धर्म के पुरातत्त्व की इस निधि को सुरक्षित रख आप समाज की गरिमा और इतिहास को सुरक्षित रख समाज का अत्यधिक उपकार कर रहे हैं। समाज मुनि श्री १०८ सरल सागर जी महाराज, ब्र. संदीप भैया जी सरल एवं समस्त सहयोगियों का सदैव ऋणी रहेगा।

विमला जैन (प्रांतीय अध्यक्ष)
अ. भा. दि. जैन महिला परिषद, जबलपुर

❋ विद्वत संगोष्ठी में अनेकांत ज्ञान मंदिर का अवलोकन करने का अवसर मिला, जैन आगम के संरक्षण सम्वर्द्धन, प्रचार प्रसार में संलग्न अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना द्वारा प्राचीन संस्कृति को जीवित रखने का अनूठा प्रयास सराहनीय है। मेरी शुभकामनाऐं।

सुरेशचंद जैन बारौलिया
बी- 677 कमला नगर, आगरा

❋ अनेकांत ज्ञान मंदिर की व्यवस्था एवं कार्यकलाप देखकर बहुत प्रसन्न हुए हैं एवं भविष्य में बहुत बहुत उन्नति एवं जिनवाणी माता की सेवा से जो जीवन में उत्कृष्टता आवे ऐसी भावना भाते हैं।

महावीर कुमार जैन भीलवाड़ा

❋ वर्तमान काल में प्राचीन ग्रंथों की सुरक्षा का सर्वोत्तम कार्य यहां हुआ है। जो जिन शासन की सुरक्षा एवं धरोहर की स्थापना का कार्य बहुत प्रशंसनीय है। जिनवाणी का प्रचार एवं प्रसार का अतिसुन्दर रूपक यहां देखने को मिला।

पं० कोमल चंद जी जैन, टड़ा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❋ आपके द्वारा संग्रहीत शास्त्र भण्डार अद्भुत और चमत्कारिक है। आपने जो प्रयास किया है वह अभूतपूर्व है। आप पर गुरू का ऐसा आशीष है, जो पूर्णिमा की चांद की तरह बढ़ता हुआ है।

पं० उदयचंद्र शास्त्री, सागर

❋ जब से सुना था अनेकांत ज्ञान मंदिर के संबंध में, दर्शन की उत्कंठ अभिलाषा थी। आज दर्शन कर जीवन कृत–कृत्य हो गया। इतने कम समय में महान उपलब्धि को प्राप्त करना ब्र. संदीप जी 'सरल' की अद्भुत कार्य क्षमता को प्रकट करता है। मैं भी इस पुनीत कार्य में सदैव समर्पित भाव से संलग्न हूँ।

सुदर्शन जैन , पिण्डरई

❋ ब्र. संदीप जी का कार्य अपने आप में अनूठा हुआ। इस प्रकार सुव्यवस्थित रूप से हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की सुरक्षा का कार्य प्रशंसनीय है। ब्रम्हचारी जी को इस कार्य के लिए अनेक साधुवाद देता हूँ।

पं० मूलचंद लुहाड़िया, मदनगंज

❋ आदरणीय संदीप भैया 'सरल' जी द्वारा किया जा रहा जिनवाणी संरक्षण का कार्य जैन समाज के लिए आने वाले वर्षों में ज्ञान दान के समान होगा। यही जिनवाणी हमें धर्म की राह बताएगी। यह महान कार्य संदीप भैया जैसे सरल स्वभावी व्यक्तित्त्व के अलावा कोई कर भी नहीं सकता।

मुकेश जैन एडवोकेट, प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर

❋ आपने प्राचीन हस्तलिखित अमूल्य ग्रंथो को एकत्रित कर संरक्षित करने का शुभ कार्य प्रारम्भ कर रखा है इसके लिए आप साधुवाद के पात्र है। आप इन ग्रंथों को माइक्रोफिल्म के द्वारा सुरक्षित करा दे तो और भी उत्तम होगा।

कुलभूषण जैन
संपादक, जैनप्रदीप, देवबंद

❋ आपके द्वारा जो कार्य चल रहा है, वह बहुत ही सराहनीय है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आप इस कार्य को आगे बढ़ाते रहें, यह हमारी प्रभु के चरणों में वंदना है।

डॉ० गुणपाल जैन
धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान, मु.नगर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

✺ प्राचीन, दुर्लभ ग्रंथों के संकलित एवं संरक्षित करने का अद्वितीय कार्य कर रहे हैं जो सराहनीय है। मूल ग्रंथों के छपवाने का भी कार्य प्रारम्भ करें।

अनिल जैन रेनबो बिहार, मु. नगर

✺ जिनवाणी वैयावृत्ति का जो प्रयास आपके द्वारा किया गया है, उसके विषय में न तो कलम द्वारा लिखा जा सकता है और न ही वचनों द्वारा बोला ही जा सकता है। जहां एक ओर जैन समाज अपने प्राचीन वैभव को भूलकर नाना प्रकार की विसंगतियों में उलझा हुआ है, वहीं दूसरी ओर आपने जैन समाज को पुनः जाग्रत करने के लिए जो प्रयास किया है, वह वास्तविक धर्म का स्वरूप है।

अमित जैन संपादक
दिव्य वचन, मु. नगर

✺ अनेकांत ज्ञान मंदिर 'बीना द्वारा किया जा रहा कार्य जैन धर्म व सम्पूर्ण विश्व के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। अपना प्रयास जारी रखें।

विनोद लुहाड़िया, जयपुर

✺ आपने जो प्राचीन ग्रंथ व हस्तलिपि का जैन मंदिर कविनगर में प्रदर्शन किया, वह सराहनीय है जो संग्रह आपके द्वारा किया गया है उसकी सराहना करता हुआ उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

आर. सी. जैन उपाध्यक्ष
भारतीय जैन मिलन, गाजियाबाद

✺ आपका अनेकांत ज्ञान मंदिर देखकर ऐसा लगा कि साक्षात माँ जिनवाणी के दर्शन मानो आज ही हुए। आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है भविष्य में यह संस्थान दिनो दिन प्रगति के आयाम कायम करे।

सुकांत जैन, सांगानेर

✺ अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना में प्रथम बार आने का सौभाग्य मिला अवलोकन किया। बहुत ही सराहनीय संग्रह है रख रखाव अच्छा है शोधार्थी एवं स्वाध्याय प्रेमियों के लिए बड़ा ही अच्छा स्थान है। श्री ब्र. संदीप जी के प्रयत्नों की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।

पं. भरतकुमार काला,बम्बई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहित्य सत्कार – २०००

{वर्ष २००० में हमें जिन साधुवृद्धों, विद्वानों एवं श्रावकों के माध्यम से संस्थान के लिए भेंट स्वरूप जो साहित्य प्राप्त हुआ है उसकी जानकारी इस स्तंभ में दी है।}

क्र.	भेंटकर्ता का नाम	साहित्य	प्रतियां
1.	आचार्य श्री१०८ वर्धमान सागर जी	सर्वोपयोगी श्लोक संग्रह भावत्रय फलदर्शी आध्यात्मिक ज्योति	२
2	आ० श्री१०८ चंद्रसागर जी	विधान संग्रह भाग १,२,३, विश्व का सूर्य त्रय छहढाला, सहस्राष्टक चर्चा	
3.	मुनि श्री१०८ क्षमासागर जी	हिन्दी साहित्य की सन्त काव्य परम्परा के परिपेक्ष्य में आ०विद्यासागर कृतित्व अनुशीलन	
4.	मुनि श्री१०८ समतासागर जी	अनुप्रेक्षा प्रवचन	
5.	मुनि श्री१०८ प्रमाणसागर जी	जैन तत्व विद्या	
6.	मुनि श्री१०८ निर्णयसागर जी	आहार दान रयणसार	२
7.	उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी	महायोगी गुप्तिसागर जी	
8.	मुनि श्री पावनसागर जी	संस्कृतं वदतु	
9.	मुनि श्री१०८ विहर्षसागर जी	ऐसे चलो मिलेगी राह निस्पृही संत–आचार्य श्री विराग सागर जी	
10.	ब्र. अनिल जैन, जबलपुर	परमागमसार, भाव त्रिभङ्गी	
11.	ब्र. जितेन्द्र कुमार जैन, अकलूज	अध्यात्म न्याय दीपिका, समयसार	
12.	ब्र प्रकाश जैन, अवागढ़	चतुर्विंशति सन्धान महाकाव्य, परीक्षामुख प्रश्नोत्तर	
13.	ब्रम्ह. सरिता जैन, सिलवानी	जैन दर्शन शब्द कोश	
14.	श्री बाबूलाल तोताराम लुहाड़िया भुसावल	सहज सुख साधन, साधना के सूत्र, रत्नकांड श्रावकाचार वचनिका ऑखन देखी आत्मा,	२५ १० १० २
15.	श्री बाबूलाल जैन सैदपुर वाले बीना	बोलती कथाऐं	
16.	डॉ. सनमत जैन बीना	कर्मकाण्ड, परीक्षामुख प्रवचन	
17.	प्राचार्य रविकांत शहा, कोरेगांव	जैन दर्शन में निश्चय व्यवहार एक अनुशीलन	
18.	डॉ० कस्तूर चंद 'सुमन'	जम्बू स्वामी कथा कुंज	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

19.	श्री सिद्धराज जैन टोड़ारायसिंह	संस्कृत भारती, श्रावक चर्या	२०
20.	डॉ० अनुपम जैन इन्दौर	आख्या, सम्पर्क	
21.	डॉ० महेन्द्र सागर प्रचण्डिया, अलीगढ़	जैन हिन्दी पूजा काव्य परम्परा,अपभ्रंश भाषा का पारिभाषिक कोश शब्द जब बोलते हैं अपना अर्थ	
22.	श्री महावीर प्रसाद जैन, भीलवाड़ा	कल्याण कारक	
23.	डॉ० देवेन्द्र जैन बम्बई	बोधामृत सार, यशोधर चरित्र	
24.	श्री शिखर चंद जैन दिल्ली	पुण्यास्रव कथा कोष	
25.	पं० सुमेरूचंद्र जैन मुजफ्फरनगर	मोक्षशास्त्र प्रवचन, द्रव्य संग्रह प्रश्नोत्तरी, सुभाषित रत्न संदोह प्रवचन	
26.	प्राच्य श्रमण भारती, मुजफ्फरनगर	तिलोय पण्णत्ति भाग १,२,३, अभिवन्दना पुष्प, आ०शांतिसागर छाणी स्मृति ग्रंथ, डॉ० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य स्मृति ग्रंथ, रत्नकाण्ड श्रावकाचार, जैन शासन, मानवता की धुरी, जिन खोजा तिन पांइयाँ, प्रमेय कमलन मार्तण्ड परिशीलन, जैन न्याय को आ० अकलंक देव का अवदान, धर्म फल सिद्धांत	
27.	श्री विभव कुमार कोठिया, बीना	सल्लेखना समत्व की साधना	
28.	सुश्री मंजु जैन, दिल्ली	प्राचीन लिपि वर्णमाला, पाहुड़ दोहा,दिल्ली जिन ग्रंथ रत्नावली, पुरूषोत्तम महावीर	
29.	श्रीमति शशि जैन बीना	केवलज्ञान प्रश्न चूड़ामणि	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत वर्ष २००० में निम्न स्थलों पर पाण्डुलिपि प्रदर्शनी" का आयोजन हुआ

क्रं	दिनांक	स्थल का नाम	विशेष विवरण
1.	13/3/2k	श्री दिग. जैन बड़ा मंदिर इम्फाल (मणिपुर)	३ दिन तक प्रदर्शनी रही ६ धर्मसभाओं के मध्य जिनवाणी संरक्षण की बात कही।
2.	19/3/2k	श्री दिग. जैन मंदिर डीमापुर (नागालैण्ड)	७ धर्मसभाएं सम्पन्न हुईं। पं. उत्तमचंद जैन, पं. प्रेमचंद पं. महेश कुमार शास्त्री का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ।
3.	23/3/2k	*श्री दिग. जैन मंदिर नलवाड़ी*	२ धर्मसभाएं सम्पन्न हुईं।।
4.	25/3/2k	श्री दिग. जैन मंदिर रंगिया	१ धर्म सभा हुई।
5.	27/3/2k	श्री महावीर दिग. जैन मंदिर, चौरंगी, कलकत्ता	४ धर्मसभायें सम्पन्न हुईं।
6.	17/4/2k	श्री १००८ महावीर जयन्ती महोत्सव मेला, स्थल फ़िरोजाबाद	प्रदर्शनी २ दिन रही। मुनि श्री १०८ निर्णय सागर जी महाराज ससंघ का सानिध्य एवं २ धर्मसभाऐं हुईं।
7.	25/6/2k	श्री दिग. जैन मंदिर अजनास (म.प्र.)	अनेकांत वाचनालय की स्थापना हुई एवं ३ धर्मसभाऐं हुईं।
8.	26/6/2k	श्री दिग. जैन मंदिर खातेगांव (म.प्र.)	१ धर्मसभा सम्पन्न हुई।
9.	28/6/2k	श्री दिग. जैन मंदिर बरेली (म.प्र.)	१ धर्मसभा सम्पन्न हुई।
10.	9/8/2k	श्री दिग. जैन मंदिर राजाखेड़ा (राज.)	मुनिश्री१०८ पुण्यसागरजी के सानिध्य में धर्मसभा सम्पन्न हुई।
11.	9/8/2k	श्री दिग. जैन मंदिर अवागढ़ (उ.प्र.)	ब्र. राकेशजी केसानिध्य में धर्मसभा हुई।
12.	11/8/2k	श्री दिग. जैन बाग का मंदिर अलीगढ़ (उ.प्र.)	इन्द्रध्वज महामण्डल विधान के अवसर पर एवं ब्र. सबिता दीदी के सानिध्य में २ धर्मसभाएं हुई।
13.	1/9/2k	श्री दिग. जैन मंदिर खतौली (उ.प्र.)	१ धर्मसभा भी हुई।
14.	7/9/2k	श्री जैन औषधालय प्रेमपुरी मुज़फ्फ़रनगर (उ.प्र.)	६दिन तक दशलक्षण पर्व पर प्रदर्शनी का आयोजन रहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15.	13/9/2k	श्री दिग. जैन स्वाध्याय भवन, सरधना (उ.प्र.)	आचार्यश्री१०८धर्मभूषणजी के सानिध्य में धर्मसभा हुई।
16.	14/9/2k	श्री दिग. जैन मंदिर मोदीनगर (उ.प्र.)	आचार्यश्री१०८ज्ञानभूषणजी के सानिध्य में धर्मसभा सम्पन्न हुई।
17.	15/9/2k	श्री दिग. जैन मंदिर तीरगराना, मेरठ	२ धर्मसभाऐं सम्पन्न हुईं।
18.	16/9/2k	श्री दिग. जैन मंदिर सदर, मेरठ	१ धर्मसभा सम्पन्न हुई।
19.	17/9/2k	श्री दिग. जैन मंदिर कविनगर, गाजियाबाद	मुनि श्री१०८ सौरभ सागर जी एवं मुनि श्री१०८ प्रबल सागर जी महाराज के सानिध्य में२ धर्मसभाएं हुईं।
20.	10/10/2k	श्री दिग. जैन मंदिर देवली (राज.)	आचार्य श्री१०८ चन्द्रसागर जी महाराज के सानिध्य में धर्मसभा हुई।
21.	11/10/2k	श्री दिग. जैन मंदिर निवाई (राज.)	उपाध्यायश्री१०८ज्ञानसागरजी महाराज के सानिध्य में धर्मसभा हुई।
22.	12/10/2k	श्री दिग. जैन मंदिर टोड़ाराय सिंह (राज.)	आचार्य श्री १०८ वर्द्धमानसागर जी के सानिध्य में धर्मसभा हुई।
23.	14/10/2k	श्री दिग. जैन मंदिर शास्त्रीनगर भीलवाड़ा (राज.)	मुनि श्री१०८ ब्रम्हानंद सागरजी महाराज एवं मुनि श्री१०८ सूर्यसागरजी महाराज के सानिध्य में २ सभाएं सम्पन्न हुईं।
24.	15/10/2k	श्री दिग.जैन मंदिर रोपां (राज.)	१ धर्मसभा सम्पन्न हुई।
g2 5.	12/11/2k	श्री दिग. जैन मंदिर कुरवाई (म.प्र.)	२ धर्मसभाएं हुईं।
26.	26/11/2k	श्री दिग. जैन मंदिर छतरपुर (म.प्र.)	आचार्य श्री१०८ सन्मति सागरजी, आचार्य श्री१०८ कुशाग्र नंदीजी महाराज गणिनी आर्यिका१०५विजयामतिमाताजी ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। धर्मसभा हुई।
27.	14/12/2k	श्री दिग. जैन मंदिर जरूवाखेड़ा	१ धर्मसभा हुई।
28.	16/12/2k	श्री दिग. जैन मंदिर टड़ा (म.प्र.)	२ धर्मसभा हुईं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंच वर्षीय आगम संरक्षण योजना

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना सागर म. प्र. की एक विनम्र प्रस्तुति

जननी माँ से प्यारी - माँ जिनवाणी हमारी

संस्थान ने सम्पूर्ण भारत वर्ष की जैन समाज के आत्मीय सहयोग से जो उपलब्धियॉ अर्जित की हैं जिसका की हमें गौरव है, अपनी बात को आप तक भेजने में।

❖ सम्पूर्ण भारत वर्ष के प्राचीन जैन मंदिरों में, शास्त्र भण्डारों में चूहों,दीमकों एवं हमारे प्रमाद के कारण नष्ट हो रहे लगभग ७००० हस्तलिखित ग्रन्थों का संकलन संरक्षण कर पाण्डुलिपि संग्रहालय की स्थापना की।

❖ दर्शनार्थी ताड़पत्र ग्रन्थों के दर्शनार्थ जैनबद्री मूडबद्री जाया करते थे संस्थान ने अथक प्रयास करके दुर्लभ लगभग १०० ताड़पत्र ग्रन्थ सुलभ करवाये।

❖ शोधार्थी,त्यागी वृतियों को एक ही स्थान पर सारा साहित्य सुलभ हो इस दृष्टि से शोध ग्रन्थालय की स्थापना की। जिसमें लगभग ७,५०० मुद्रित ग्रन्थ हैं। प्रतिमाह ७५ पत्र पत्रिकायें भी आ रहीं हैं।

❖ अनेकान्त दर्पण शोध पत्रिका एवं संस्थान समाचार द्विमासिक का नियमित प्रकाशन हो रहा है।

❖ पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु फोटोकापी मशीन, कम्प्यूटर आदि उपकरणों को उपलब्ध कराया।

❖ यहॉ ठहरने वाले आत्मार्थियों के लिए व्रती भोजन शाला प्रारम्भ की।

सत् संस्कारों की वृद्धि हेतु अनेक स्थलों पर अनेकान्त वाचनालयों की स्थापना प्रारम्भ कर दी है।

आत्मीय निवेदन

यह संस्थान आपका अपना है। इसके विकास एवं उत्कर्ष के लिए आपके परम सहयोग की आवश्यकता है। दान और पूजन श्रावक के दो मुख्य कर्तव्य हैं। आज हम दान के यथार्थ स्वरूप को नहीं समझ पा रहे हैं।मान कषाय के लिए दिया हुआ दान, दान नहीं है। अपनी शक्ति का विचार कर पवित्र भावनाओं से दिया हुआ अल्प दान भी कल्याण कारक माना गया है। हम इस संस्थान के माध्यम से साधारण से भी साधारण दान दातार को जिनवाणी के उत्थान में आगे लाना चाहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप क्या कर सकते हैं

१. आप जन्मोत्सव, वार्षिकोत्सव या पुण्यतिथी के अवसर पर यह संकल्प ले सकते हैं कि१ रुपया दिन के हिसाब से प्रतिवर्ष ३६५ रुपया भेज सकते हैं।

२. प्रतिमाह १०० रुपया अथवा ५० रुपया अथवा ३० रुपया के रुप में वर्ष भर की राशि एक साथ अथवा प्रतिमाह नगद अथवा m. o. द्वारा भेज सकते हैं।

संस्थान क्या करेगा

आपके नाम से प्राप्त दान राशि आपके खाते में जमा करेंगे और ५वर्ष में उस राशि को संकलित कर आपकी भावनानुसार किसी एक कार्य में व्यय करेंगे।आप कल्पना कीजिए कि आपका अल्प सहयोग कितना महान कार्य कर सकेगा–

प्रतिदिन	प्रतिमाह	प्रतिवर्ष	५ वर्ष में एक मुश्त राशि
१ रुपया	३० /–	३६५ /–	१८२५ /–
	५० /–	६०० /–	३००० /–
	१०० /–	१२०० /–	६००० /–

निवेदक

ब्र. संदीप जैन 'सरल' [संस्थापक]
अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान
बीना [सागर] म. प्र.

अनेकान्त ज्ञान मंदिर परिवार
द्वारा अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान
बीना [सागर] म. प्र.फोन [07580] 30279

..[.यहॉ से काटकर फार्म भरकर संस्थान को वापिस भेज दीजिए]....... ....

दान पत्र

क्र०

दिनांक

मैं अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना [सागर] म. प्र. ४७०११३ द्वारा संचालित शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के अंतर्गत अपनी पवित्र भावनाओं से ज्ञानदान हेतु प्रदान करता हूँ / करता रहूँगा।

प्रतिमाह ....अथवा प्रतिवर्ष ....रुपया

मेरा नाम व पता ....

....

....

....

फोन नं.

हस्ताक्षर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकात ज्ञान मंदिर शोधसंस्थान बीना के अभ्युदय में सहयोगी सदस्यों की नामावली

शिरोमणि संरक्षक, ५१००० अथवा इससे अधिक

१.	सुश्री इन्द्रसेना जैन जयपुर	1,17,000

—परम संरक्षक —१५,००० अथवा अधिक

१.	पं. श्याम सुन्दर लाल शास्त्री श्रुत प्रभावक न्यास फिरोजावाद	२१,०००
२.	श्री मानमल सुनील कुमार जैन कलकत्ता	१५,०००
३.	श्री बसंत भाई दोशी मुम्बई	१५,०००
४.	श्री महावीर प्रसाद नरेन्द्र कुमार गुवाहाटी	१५,०००
५.	श्री हुलाश चंद जी सेठी गुवाहाटी	१५,०००
६.	श्री दीपचंद जी मुकेश कुमार रारा गुवाहाटी	१५,०००
७.	जीवन ज्योति महिला समिति किदवई नगर, कानपुर	१५,०००
८.	श्री जयप्रकाश जैन नावला वाले मुजफ्फरनगर	१५,०००
६.	डॉ शीलचंद जैन मुँगावली	११,०००
१०.	श्रीतनसुख लाल छोगमल सेठी गुवाहाटी	११,०००
११.	श्री कॅवरी लाल सेठी गुवाहाटी	११,०००
१२.	डॉ रतन चंद जैन भोपाल	११,०००
१३.	डॉ सुधांशु जैन लखनऊ	११,०००
१४.	श्री भगवान दास शोभालाल जैन ट्रस्ट सागर	११,०००
१५.	श्री घीसालाल चंदनमल बड़जात्या खाचरियावास, सीकर	११,०००
१६.	श्री कन्हैयालाल पन्नालाल सेठी डीमापुर	११,०००
१७.	श्री अशोक कुमार पाटनी इम्फाल	११,०००
१८.	श्री तनसुख लाल मोहन लाल गुवाहाटी	११,०००
१६.	श्री सुमेरू चंद मुकेश कुमार जैन मुजफ्फरनगर	११,०००
२०.	डॉ सूरज मुखी जैन श्री शीतल प्रसाद जैन मुजफ्फरनगर	११,०००
२१.	श्री सुरेन्द्र पाल जैन जनकपुरी नई दिल्ली	११,०००
२२.	श्री बाबूलाल तोताराम जी लुहाड़िया भुसावल	११,१११
२३.	श्री केसरीचंद पूनमचंद जी सेठी नईदिल्ली	११,०००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवाणी सदस्य ५०००

२४. श्रीमती रीता जैन शालीमार बाग दिल्ली
२५. डॉ राजकुमारी जैन जयपुर
२६. श्री मदनलाल प्रदीप कुमार सेठी डीमापुर
२७. श्रीमती हीरामणी देवी प्रकाशचंद सेठी डीमापुर
२८. श्री बाबूलाल अरूण कुमार सेठी डीमापुर
२९. श्री रामपाल अशोक कुमार बाकलीवाल डीमापुर
३०. श्री नंदलाल शांतिलाल छाबड़ा डीमापुर
३१ श्री धर्मचंद जी गदिया कलकत्ता
३२. श्रीमती किरण वाला कलकत्ता
३३. श्री नंदलाल महावीर प्रसाद जैन इम्फाल
३४. श्री तारा चंद जी पहाडिया इम्फाल
३५. श्री सोहन लाल जी पहाड़िया इम्फाल
३६. श्रीमती प्रमिला देवी सेठी इम्फाल
३७. श्री रतन लाल पाटनी इम्फाल
३८. श्री मिश्री लाल जेठमल जैन इम्फाल
३९. श्री दि.जैन महिला समाज इम्फाल
४०. श्री पी सी. जैन एण्ड कम्पनी इम्फाल
४१. श्री राम चंद सुरेश कुमार सेठी इम्फाल
४२. श्री तनसुख लाल सेठी इम्फाल
४३. श्री बाबू लाल जैन बरोदिया बाले अशोकनगर
४४. श्री दि. जैन महिला समाज ठाकुरगंज
४५. श्री एस. पी. अग्रवाल दिल्ली
४६. श्री वीरेन्द्र कुमार अनिरुद्ध कुमार मुजफ्फरनगर
४७. श्रीमती लाल मणी जैन मोतीचंद जैन मुजफ्फरनगर
४८. श्री पंकज कुमार कामता प्रसाद जैन सरधना रोड मेरठ
४९. श्रीमती उर्मिला जैन डॉ सुपार्श्व कुमार जैन बड़ौत

विशिष्ट सदस्य २१००

१.दिग० जैन महिला समाज गाजियाबाद
२.श्री नेमीचंद जैन मुजफ्फरनगर
३.श्री सुखमाल चंद जैन सराफ मुजफ्फरनगर
४.सुश्री सुनीता जैन टोड़ारायसिंह
५.श्रीमति कमलादेवी जैन भीलवाड़ा
६.श्री विनोद कुमार सोना देवी सेठी डीमापुर
७.श्री रामप्रसाद मूलचंद जी छावड़ा नलवाड़ी
८.श्रीमति कमलादेवी पाटनी डबसन रोड हाबड़ा
९.श्रीमति पुष्पादेवी बड़जात्या हाबड़ा
१०.श्री जयचंद लाल सेठी
११.सुप्रभात महिला मण्डल हाबड़ा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतिथि व्यवस्था सदस्य १५००

१.श्री किशन लाल सरावगी एण्ड कम्पनी डीमापुर
२. श्रीमती स्नेह प्रभा जैन श्री अभय कुमार शास्त्री बीना
३. श्रीमती विमला जैन मदन लाल छावड़ा डीमापुर
४. श्री मदन लाल महेन्द्र कुमार बड़जात्या डीमापुर
५.श्री सूरज मल पहाड़िया डीमापुर
६.श्री अशोक कुमार जैन सुदर्शनस् इम्फाल
७.श्रीमती विमला देवी महावीर प्रसाद इम्फाल
८.श्रीमती रत्नी देवी गौरीलालसेठी इम्फाल
६.श्रीमती मोहनी देवी महावीर प्रसाद इम्फाल
१०.श्री दि. जैन महिला समाज इम्फाल
११.श्रीमती भँवरी देवी जैन धन जी पहाड़िया इम्फाल
१२.श्रीमती गुलाबी देवी महावीर प्रसाद जी इम्फाल
१३.श्रीमती हीरामणी घीसालाल सेठी इम्फाल
१४.श्रीमती मोहनीदेवी लक्ष्मी नारायण इम्फाल
१५.श्रीमती भँवरी देवी जगन्नाथ छावडा इम्फाल
१६.महावीर फार्मेसी इम्फाल
१७.श्री मुन्ना लाल कपूरचंद जी सेठी इम्फाल
१८.श्रीमती कंचन देवी महावीर प्रसाद इम्फाल
१६.श्री जयचंद जी छावड़ा डीमापुर
२०.श्रीमती तारामणीदेवी हनुमान प्रसाद डीमापुर
२१.श्री सुखलाल राजकुमार छावड़ा डीमापुर
२२.श्री नथमल भानुप्रसाद जी रारा नलवाड़ी
२३.श्री दि. जैन महिला समाज नलवाड़ी
२४.श्री नेमीचंद राजकुमार गंगवाल नलवाड़ी
२५.श्रीमती सुगनी देवी बाकलीवाल नलवाड़ी
२६.सन्मति ट्रेडर्स गुवाहाटी
२७.श्री एम. पी. जैन .एडवोकेट गुवाहाटी
२८.श्रीमती इन्द्रा जैन श्री एम. पी. जैन एडवोकेट गुवाहाटी
२६.श्री दानमल जी सोगानी गुवाहाटी
३०.श्री बालचंद जी छावड़ा गुवाहाटी
३१.श्री भँवरलाल कमल कुमार सेठी गुवाहाटी
३२.श्री पदम चंद जी रारा गुवाहाटी
३३.श्री दीपचंद जी रारा गुवाहाटी
३४.श्रीमती रविकान्ता गुवाहाटी
३५.श्री मुकेश रारा गुवाहाटी
३६.श्रीमती सरीता रारा गुवाहाटी
३७.श्री मनीष रारा गुवाहाटी
३८.श्री महावीर प्रसाद रारा गुवाहाटी
३६.श्री नरेन्द्र कुमार रारा गुवाहाटी
४०. श्री जयचंद लाल सेठी सुजानगढ़
४१.श्री दि. जैन समाज अजनास
४२.श्री महेन्द्र सागर प्रचण्डिया अलीगढ़
४३.श्री दि. जैन महिला समाज झालाबाड़
४४.श्रीमती शीला जैन श्री विनोद कुमार जैन मुजफ्फरनगर
४५.श्री बच्चू लाल विमला देवी जैन पठारी
४६.श्री सुरेश संध्या जैन पठारी
४७.श्री महेन्द्र कुमार ऊषा जैन पठारी
४८.श्री कालूराम माते पठारी
४६.श्री राकेश सिंघई सरोज जैन पठारी
५०.श्रीमती शांति बाई सिंघई पठारी
५१.श्री धन्ना लाल शांति बाई जैन पठारी
५२.श्री चौ. नाथूलाराम जैन पठारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३.श्री महेन्द्र कुमार कठरया पठारी
५४.श्री कस्तूर चंद सांवला ,रामगंजमंडी
५५.सुश्री इन्द्रसेना जैन जयपुर
५६.सुनीता प्रकाश बन्नौरे, मुम्बई
५७.श्री अशोक कुमार दलीचंद, मुम्बई
५८.श्री भूपेन्द लवचंद कोठारी, मुम्बई
५६.श्री डॉ श्रेणिक शहा, इन्दापुर
६०.श्री णमोकार रतनचंद दोषी, बालचंद नगर
६१.श्री मोती लाल जवाहरलाल सिंघई, झांसी
६२.श्री हरक चंद भागचंद पाटोदी, तिनसुकिया
६३.श्री श्यामलाल गेंदालाल जैन, अशोकनगर
६४.श्री मदनलाल विनोद कुमार पाटनी गुवाहाटी
६५.श्री निहाल चंद जैन बीना
६६.श्रीमती सुन्दर बाई नेमीचंद जैन मिश्रोली
६७.श्रीमती मंजू अभय कुमार पाटनी मिश्रोली
६८.श्रीमती कमलाबाई अभयकुमार गंगवाल मिश्रोली
६६.सुश्री शशि जैन शिक्षिका अशोकनगर
७०.श्री जमुनालाल जैन हनुमानताल जबलपुर
७१.श्री विनोद कुमार जैन जबलपुर
७२.श्रीमती गुणवती नरेन्द कुमार जैन जबलपुर
७३.श्री छिदामीलाल सचिन कुमार सिलवानी
७४.श्री अभय कुमार सतीश कुमार जैन सिलवानी
७५.श्री लखमीचंद कौशल कुमार जैन सिलवानी
७६.श्री पदम चंद बजाज सिलवानी
७७.महिला मंडल सिलवानी
७८.पद्मावती आफसेट जबलपुर
७६.श्री हीरालाल अमोलकचंद बोहरा, अकलूज
८०.श्री संतोषचंद उत्तमचंद फणे, अकलूज
८१.श्री माणिकभाई गौतम चंद गांधी, सोलापुर
८२.श्री अमृत तलकचंद दोषी, सोलापुर
८३.श्री विजय कुमार तलकचंद दोषी, यशवंतनगर
८४.श्री अनूप सुकुमारी दोषी, सोलापुर
८५.श्रीमती शकुन जैन बसंत कुमार जैन बीना
८६.चौ. सुंदरलाल संभवलाल जैन, बीना
८७.श्रीमती पुष्पाबाई बाबूलाल जैन, बीना
८८.श्री निर्मलकुमार श्रीमती रवि जैन, बीना
८६.श्रीमती चंपा बाई जैन, बीना
६०.श्रीमती चमेलीबाई सराफ, बीना
६१.श्री सलिल कुमार की मातुश्री , बीना
६२.श्री निर्मल कुमार जैन भानपुरा
६३.श्री संतोष कुमार जैन देवरी
६४.श्री कमलेश समैया जबलपुर
६५.श्री शीलचंद जैन हनुमानताल जबलपुर
६६.श्रीमती सुष्मा जैन हनुमानताल जबलपुर
६७.श्रीमती संध्या जैन हनुमानताल जबलपुर
६८.श्रीमती विमला जैन पी. सी. जैन बीना
६६.श्रीमती प्रेमबाई गुलाबचंद जैन बीना
१००.श्री शिखरचंद जैन, कोटा
१०१. श्री अशोक कुमार सराफ बीना
१०२.श्री ज्ञानचंद प्रदीप कुमार सिलवानी
१०३.ब्र. कविता जैन नागपुर
१०४.श्रीमती मैनाद्देवी जैन, गुवाहाटी
१०५.श्री तनसुख मोहनलाल जैन, गुवाहाटी
१०६.श्री राजकुमार जैन गुवाहाटी
१०७.श्री नरेन्द्र कुमार जैन गुवाहाटी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०८.श्री शांतिलाल विजय कुमार काला, विजयनगर
१०६.श्री सुरेश भंडार , विजयनगर
११०.श्री मूलचंद जी पाटनी , विजयनगर
१११.श्री शिखरचंद दिलापकुमार जैन, विजयनगर
११२.श्रीमती सरोजदेवी सरावगी,कलकत्ता
११३.श्री नितिन विलाला, दिल्ली
११४.श्री अजित जैन, दिल्ली
११५.श्रीमती सितारा जैन, दिल्ली
११६.श्रीमती किरण जैन, दिल्ली
११७.श्रीमती इलायची देवी डीमापुर
११८.श्री कपूर चंद शांतिदेवी जैन, रामपुर
११६.श्री पदम चंद जैन, बीना
१२०.श्रीमती ममता जैन जबलपुर
१२१.श्री अजित कुमार जैन, जयपुर
१२२. श्रीमति कौशल्या जैन श्री हजारीलाल जैन बीना
१२३. श्री दिग० जैन महिला समाज झालावाड़
१२४. विशाल आटोमोबाइल्स बीना
१२५. श्री दुलीचंद कैलास कुमार जैन कासलीवाल डीमापुर
१२६. श्री महेन्द्र कुमार जैन गाजियाबाद
१२७. श्रीमति तारामणि देवी डीमापुर
१२८. श्री सूबालाल राजकुमार छावड़ा डीमापुर
१२६. श्रीमति रीता जैन अजमेर
१३०.श्रीमति बसंतमाला पाटनी इम्फाल
१३१.श्री रतनलाल सेठी डीमापुर

आजीवन सदस्य ११०१

१.श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बीना
२.श्री नरेश कुमार जैन बीना
३.श्री मानमल महावीर प्रसाद झांझरी झूमरीतलैया
४.श्री दि.जैन महिला समज झूमरीतलैया
५.श्री महावीर प्रसाद झांझरी झूनरीतलैया
६.श्री चुन्नीलाल सुरेश कुमार छावड़ा झूमरीतलैया
७.श्री दिग० जैन महिला समाज गया
८.श्री लक्ष्मीनारायण जैन भरतपुर
६.श्री तेज कुमार सुनील कुमार जैन मड़ावरा
१०.श्री रतनलाल कॅवरीलाल जैन किशनगढ़
११.श्री प्रफुल्लचंद जी गदिया अजमेर
१२.श्री नेमीचंद जैन कोटा
१३.श्री शिखर चंद जैन कोटा
१४.श्री बाबूलाल अभयकुमार जैन सिरोंज
१५.श्री कन्हैया लाल विमल कुमार सेठी गया
१६.श्री विद्या कमार काला गया
१७.श्री मांगीलाल कस्तूरचंद अजमेरा गया
१८.श्री जमनालाल महेन्द्र कुमार काला गया
१६.श्री बाल चंद कमल कुमार छावड़ा गया
२०.श्री फूलचंद अजित कुमार सेठी गया
२१.श्री रतनलाल जीवन कुमार सेठी गया
२२.श्री दीपचंद नरेन्द कुमार सेठी गया
२३.श्री महावीर प्रसाद गंगवाल गया
२४.श्री सोनपाल जगन्नाथ जी पाण्डया गया
२५.श्री कस्तूरचंद जी अजमेरा गया
२६.श्री मोहनलाल सेठी गया
२७.श्री दयाचंद जैन टीकमगढ़
२८.श्री रिदम रमेश शाहू डोमविवली
२६.श्री माणिकलाल गांधी अकलूज
३०.श्री हीरालाल माणिकलाल गांधी अकलूज
३१.श्रीशीतलकुमार माणिकलाल गांधी अकलूज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२.श्री अजितकुमार माणिकलाल गांधी अकलूज
३३.श्री राकेश जैन नईदिल्ली
३४.श्री पं. गुलाब चंद पुष्प टीकमगढ़
३५.श्रीमती अनीता जैन नईदिल्ली
३६.श्री प्रमचंद जी सराफ कोटा
३७.श्री रमेश चंद जैन नई दिल्ली
३८.श्रीमती त्रिशला जैन नईदिल्ली
३९.श्री आर. के. जैन मुम्बई
४०.श्री प्रतीक दिनेश पाटोदी बम्बई
४१.श्री नीता जयवाला संघवी बम्बई
४२.श्री मोहनलाल पाटनी बम्बई
४३.श्री राम मोहन जैन बम्बई
४४.श्री माणिकचंद पाटोदी बम्बई
४५.श्री नवनीत जैन बम्बई
४६.श्री अरहंत नवयुवक संघ भूलेश्वर बम्बई
४७.श्री राजेन्द्र कुमार चम्पालाल जैन बम्बई
४८.श्री सौभाग्यचंद मोतीचंद दोषी बम्बई
४९.श्री मदनलाल पाटनी बम्बई
५०.श्री अजितकुमार रतिलाल गांधी बम्बई
५१.श्री पदमचंद बम्बई
५२.श्री अशोक कुमार जैन बीना
५३.श्री रत्नेश शाह बीना
५४.श्री प्रेम सागर जैन नईदिल्ली
५५.श्री जसवंत जैन नईदिल्ली
५६.श्री जयपाल जैन नईदिल्ली
५७.श्रीमती रतनमाला जैन नईदिल्ली
५८.श्री लखपतेंद्र जैन लखनऊ
५९.श्रीमती सुन्दर बाई मिश्रोली
६०.श्री नरेंद्र जैन रांची
६१.श्री डॉ प्रकाश चंद जैन महाराजपुर
६२.श्री बाबूलाल बरोदिया अशोकनगर
६३.श्री राजदेवी जैन अशोकनगर
६४.श्री सुभाष जैन महाराजपुर
६५.श्री शशांतकुमार हीरालाल गांधी वालचंदनगर
६६.श्री रमेशचंद्र बाबूरावजी बालचंदनगर
६७.श्री जयकुमार क्षीरसागर बालचंदनगर
६८.श्री नवीन चंद मोतीलाल कोठारी बालचंदनगर
६९.श्री सन्मति मण्डल बालचंदनगर
७०.श्री हूमण दि. जैन मंदिर अकलूज
७१.श्री अनिल कुमार अनंतलाल अकलूज
७२.श्री शांतिलाल फड़े अकलूज
७३.श्री प्रदीप हिम्मतलाल फड़े अकलूज
७४.श्री विजय तिलक चंद दोषी अकलूज
७५.श्री वीरेंद्र गजेन्द भाई होटिया सूरत
७६.श्री कल्पेश भाई सूरत
७७.श्री कमलाबाई मानकचंद जैन छिंदवाड़ा
७८.श्री श्रेयांश कुमार जैन छिंदवाड़ा
७९.श्री बाबूलाल सतीशकूमार पाटोदी
८०.श्री विपिन ड्रेसेस छिंदवाड़ा
८१.श्री सुगम चंद जयकुमार जैन छिंदवाड़ा
८२.श्री अरुण संध्या सेठी इन्दौर
८३.श्री बालचंद जैन शिलांग
८४.श्रीमती प्रभा सिंघई जबलपुर
८५.श्रीमती आरती जैन जबलपुर
८६.श्री भगवानदास शोभालाल जैन सागर
८७.श्री डॉ चेतन जैन दमोह
८८.श्री जयकुमार जैन दमोह
८९.श्री कैलाशचंद जैन झांसी
९०.श्री मनीराम अनिलकुमार जैन झांसी
९१.श्रीमती कांती जैन झांसी
९२.श्री कांतीलाल अमीरचंद सोलापुर
९३.श्री नीरज जैन सतना
९४.श्री बी. के. इण्डस्ट्रीज बीना
९५.श्री अश्विन भाई बाड़ीलाल शाह अहमदाबाद
९६.श्री नाथूलाल जी खेमचंद जी डूंगरपुर
९७.श्री गणेश वर्णी दि. जैन पाठशाला जबलपुर
९८.श्री अभय कुमार शास्त्री बीना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९९.श्री श्रेयांशकुमार जैन अशोकनगर
१००.श्री निर्मलकुमार जैन झालावाड़
१०१.डॉ सुरजमूखी जैन मुजफ्फरनगर
१०२.श्रीमती गुणमाला वीरेन्द्र जैन नागपुर
१०३.श्री निर्मलकुमार जैन नागपुर
१०४.श्री सतीश वंशीलाल सिंघई नागपुर
१०५.श्री महावीर दि जैन पाठशाला नागपुर
१०६.श्री नरेन्द्र जैन गुवाहाटी
१०७.श्री मिश्रीलाल जैन गुवाहाटी
१०८.श्री मानिकचंद निरंजन कुमार गुवाहाटी
१०९.श्री राजकुमार जैन गुवाहाटी
११०.श्री मनोज जैन भण्डारी गुवाहाटी
१११.श्री शांति क्लाथ सेन्टर गुवाहाटी
११२.श्री फूलचंद जी बगड़ा गुवाहाटी
११३.श्री मानक चंद किरण देवी गुवाहाटी
११४.श्री नंदलालजी गंगवाल गुवाहाटी
११५.श्री नरेंद्रकुमार रारा गुवाहाटी
११६.श्री संध्या रारा गुवाहाटी
११७.श्री बाबूलाल अशोक कुमार पाटनी गुवाहाटी
११८.श्री मदनलाल सोगानी हावड़ा
११९.श्रीमती निर्मलादेवी गुवाहाटी
१२०.श्री मानमल सुनीलकुमार जी कलकत्ता
१२१.श्री बाबूलाल जी पाटनी कलकत्ता
१२२.श्री रतनलाल अशोक कुमार सेठी कलकत्ता
१२३.श्री विमलकुमार सराफ कलकत्ता
१२४.श्रीमती चमेली बाई जैन बीना
१२५.श्री महेन्द्र कुमार कठरया पठारी
१२६.श्री वैद्य गुलाबचंद जैन ढाना
१२७.श्री पूरन चंदजैन भाय जी ढाना
१२८.श्रीमती जेठीदेवी ट्रस्ट झुमरीतिलैया
१२९.श्री भागचंद संजय जैन पाटनी झुमरीतिलैया
१३०.श्री राजकुमार जी गंगवाल झुमरीतिलैया
१३१.श्री डी. आर. जैन कलकत्ता
१३२.श्री गणपतलाल जी हावड़ा
१३३.श्री चंदजी बगड़ा हावड़ा
१३४.श्री प्रकाश चंद जी पाटनी हावड़ा
१३५.श्री चंद जी वगड़ा हावड़ा
१३६.श्री विमल प्रसाद जैन हावड़ा
१३७.श्री मदनलाल जी कलकत्ता
१३८.श्री पवन कुमार जी सेठी कलकत्ता
१३९.श्री सरमूलाल जैन कलकत्ता
१४०.श्री हंसराज सेठी कलकत्ता
१४१.श्री नंदकिशोर सरावगी कलकत्ता
१४२.श्रीमती बीना जैन पार्श्वविहार दिल्ली
१४३.श्रीमती निशा जैन पार्श्वविहार दिल्ली
१४४.श्री विशाल ताराचंद जैन रोहतक
१४५. आशु रिशु जैन करनाल
१४६.श्री दि. जैन मंदिर सराय रोहतक
१४७.श्रीमती पुष्पा जैन रोहतक
१४८.श्री अनिल कुमार जैन रोहतक
१४९.श्री रोशनलाल चमनलाल जैन सोनीपत
१५०.श्री कैलाशचंद जीवंधर जैन शाहदरा दिल्ली
१५१.श्री अजय जैन लता जैन प्रीतविहार दिल्ली
१५२.श्री सुभाष जैन जैन प्रीतविहार दिल्ली
१५३.श्रीमती सुशीलादेवी जैन प्रीतविहार दिल्ली
१५४.श्री सुरेश चंद जैन प्रीतविहार दिल्ली
१५५.श्री सागरचंद जैन प्रीतविहार दिल्ली
१५६.श्री देवेंद्र प्रतुला जैन प्रीतविहार दिल्ली
१५७.श्री विजय विनोद जैन प्रीतविहार दिल्ली
१५८.श्रीमती विमला देवी ऋषभ विहार दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५६.श्रीमती उर्मिला जैन ऋषभ विहार दिल्ली
१६०.श्री दि.जैन मंदिर ऋषभ विहार दिल्ली
१६१.श्रीमती विद्या जैन ऋषभ विहार दिल्ली
१६२.श्रीमती मधु जैन ऋषभ विहार दिल्ली
१६३.श्रीमती चक्रेश्वरी जैन ऋषभ विहार दिल्ली
१६४.श्रीमती पुष्पा जैन ऋषभ विहार दिल्ली
१६५.श्री पी. सी. जैन पुष्पांजली दिल्ली
१६६.श्रीमती आशालता जैन ऋषभ विहार दिल्ली
१६७.श्री अनिल कुमार जैनऋषभ विहार दिल्ली
१६८.श्री त्रिलोकचंद जैन ऋषभ विहार दिल्ली
१६६.श्री मदनलाल जैन बाहुबली इन्क्लेव दिल्ली
१७०.श्री दुलीचंद जैन बाहुबली इन्क्लेव दिल्ली
१७१.श्री अमित जैन पुष्पांजली दिल्ली
१७२.श्री सुभाष जैन बाहुबली इन्क्लेव दिल्ली
१७३.श्री अजित प्रसाद राजेंद्र जैन तिलकविहार दिल्ली
१७४.श्री विनोद कुमार जैन राजपुर रोड दिल्ली
१७५.श्री राजेन्द्र कुमार जैन माडलटाडन दिल्ली
१७६.श्री गुणचंद जैन माडलटाडन दिल्ली
१७७.श्री नानकचंद जैन केरल रोड दिल्ली
१७८.श्रीमती त्रिशला जैन माडलटाउन दिल्ली
१७६.श्री राजेन्द्र प्रसाद मापचंद जैन माडलटाउन दिल्ली
१८०.श्रीमती अलका जैन मुखर्जीनगर दिल्ली
१८१.श्री विनय कुमार जैन माडलटाउन दिल्ली
१८२.श्रीमती निशा जैन माडलटाउन दिल्ली
१८३.श्री आर. पी. जैन माडलटाउन दिल्ली
१८४.श्री अनिल जैन दिल्ली
१८५.श्री एन. सी. जैन दिल्ली
१८६.श्री शिखर चंद जैन दिल्ली
१८७.श्री महावीर प्रसाद जैन दिल्ली
१८८.श्री नरेन्द्र कुमार जैन दिल्ली
१८६.श्रीमती सुनीता अरुण जैन दिल्ली
१६०.श्री विनोद जैन दिल्ली
१६१.श्री प्रवीण कुमार जैन दिल्ली
१६२.चाचा गारमेंट्स दिल्ली
१६३.श्रीमती त्रिशला दिल्ली
१६४.श्री अशोक कुमार जैन दिल्ली
१६५.श्री संजय जैन दिल्ली
१६६.श्रीमती स्नेह जैन एस. के. जैन दिल्ली
१६७.श्री जी. के. जैन दिल्ली
१६८.श्री नरेश चंद जैन दिल्ली
१६६.श्री पं. छक्की लाल जैन शास्त्री शिवपुरी
२००.श्री नरेश चंद जैन दिल्ली
२०१.श्रीमती सरोज जैन दिल्ली
२०२.श्रीमती रेंनू जैन दिल्ली
२०३.श्रीमती शांतिदेवी जैन रामपुर उ.प्र.
२०४.श्री भरतेश कुमार जैन रामपुर उ.प्र.
२०५.श्री सरजुप्रसाद विनोद कुमार जैन कानपुर
२०६.श्री ब्र.हेमचंद हेम भोपाल
२०७.श्री हनुमान प्रसाद संतोष कुमार जैन करीमगंज
२०८.श्री सुरेश चंद जैन देहरादून
२०६.सुश्री मंजू जैन ग्रीनपार्क दिल्ली
२१०.ब्र. नवरतनमल जैन कानपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२११.पं. श्री कुंदनलाल जैन दिल्ली
२१२.श्रीमती शशीबाई शोधिया महाराजपुर
२१३.श्रीमती उमाबाई शोधिया महाराजपुर
२१४.श्रीमती वीणा जैन जगदीशचंद मोदी सोनगढ
२१५.श्री सुभाष चंद जैन शीतलपुरी जबलपुर
२१६.श्री अखिलेश कुमार जैन रॉझी जबलपुर
२१७.श्री माणिकचंद जैन कोटावाला झालावाड़
२१८.श्रीमती ऊषा जैन झालावाड़
२१६.श्रीमती सुलोचना जैन टीकमगढ़
२२०.श्री पुत्तुलाल जैन झांसी
२२१.श्री नथमल जैन रारा नलवाड़ी
२२२.अरहंत ट्रेडिंग कम्पनी नलवाड़ी
२२३.श्री बाबूलाल सेठी नलवाड़ी
२२४.श्री टीकमचंद जी मानमल जैन नलवाड़ी
२२५.जैन वीर महिला समाज नलवाड़ी
२२६.श्री प्रकाशचंद प्रवीणकुमार पहाड़िया नलवाड़ी
२२७.श्री प्रफुल्लचंद जैन कौशल कलकत्ता
२२८.श्री कस्तूरचंद भागचंद कासलीवाल कलकत्ता
२२६.श्री श्रीपालजी गंगवाल कलकत्ता
२३०.श्री तखतराज जैन कलकत्ता
२३१.श्रीमती लाड़ादेवी जैन पत्नी श्रीचंद बगड़ा हावड़ा
२३२.श्रीमती राजकुमारी जैन हावड़ा
२३३.श्री छोगालाल पदमचंद गंगवाल डीमापुर
२३४.श्री झूमरमल महावीर प्रसाद छावड़ा डीमापुर
२३५.श्री कुंदनमल अमरचंद पाटनी डीमापुर
२३६.श्री प्रदीप कुमार झांझरी डीमापुर
२३७.श्रीमती सरोजदेवी पांडया डीमापुर
२३८.श्री भंवरलाल प्रमोदकुमार कासलीवाल डीमापुर
२३६.श्री शिखरीलाल ओमप्रकाश पांडया डीमापुर
२४०.सुश्री पवनी देवी श्री सुगुनचंद सेठी डीमापुर
२४१.श्री गुलाबचंद लक्ष्मीनारायण छावड़ा सीकर
२४२.श्री मोहनलाल अनिलकुमार सेठी डीमापुर
२४३.श्रीमती संतोषदेवी वाकलीवाल डीमापुर
२४४.श्रीमती रंजनादेवी वाकलीवाल डीमापुर
२४५.श्रीमती इंद्रादेवी गंगवाल डीमापुर
२४६.श्री के. सी. जैन कलकत्ता
२४७.श्री मोतीलाल मदनलालजी जैन सीकर
२४८.श्री त्रिलोकचंद राकेश कुमार सेठी डीमापुर
२४६.श्री भागचंद कमलकुमार पाटनी डीमापुर
२५०.श्रीमति शर्मिलादेवी कासलीवाल डीमापुर
२५१.श्री छोगमल कमल कुमार पाटनी डीमापुर
२५२.श्री हरखचंद गौरीलाल सेठी इम्फाल
२५३.जैन महिला एकता समिति इम्फाल
२५४.श्री सुशील कुमार छावड़ा इम्फाल
२५५.श्रीमती उमराव देवी तनसुख राय सेठी इम्फाल
२५६.श्रीमति रतन देवी स्व. मानिकचंद सेठी मोहित, इम्फाल
२५७.श्री मोहनलाल पवन कुमार सेठी इम्फाल
२५८.श्री विजयकुमार संजय कुमार सेठी, इम्फाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५६.श्रीमति गुलाबदेवी महावीर प्रसाद छाबड़ा इम्फाल

२६०.श्री सागरमल सुशील कुमार रारा, इम्फाल

२६१.श्रीमति पुष्पादेवी सेठी मांगीलाल धर्मचंद सेठी इम्फाल

२६२.श्री रतनलाल ललित कुमार बड़जात्या इम्फाल

२६३.श्री शांतिलाल जैन सुनील एण्ड कंपनी इम्फाल

२६४.श्री प्रकाश चंद विजय कुमार जैन इम्फाल

२६५.श्री बालचंद जी सेठी राजकुमार सेठी इम्फाल

२६६.श्रीमति विमला देवी मदनलाल छाबड़ा जैन मंदिर रोड डीमापुर

२६७.श्री रामप्रसाद मूलचंद जी छाबड़ा नलवाड़ी

२६८.आकर्षण इन्टर प्राइजेज फिरोजाबाद

२६६.श्री प्रकाशचंद प्रवीण कुमार जैन फिरोजाबाद

२७०.श्री विजय कुमार जैन फिरोजाबाद

२७१.श्री अशोक कुमार जी जैन कलकत्ता

२७२.श्री पूरनचंद जी जैन, कलकत्ता

२७३.श्री बसंत कुमार जी जैन नई दिल्ली

२७४.श्री राजाराम मूलचंद जैन राजाखेड़ा

२७५.श्री छीतरमल जी पूरनचंद जी राजाखेड़ा

२७६.श्री विजयकुमार प्रकाश चंद जैन लुहाड़िया अलीगढ़

२७७.श्री डॉ. महेन्द्र कुमार आशारानी पांडया अलीगढ़

२७८.श्रीमति प्रेमकुमारी राजेन्द्र कुमार जैन अलीगढ़

२७६.श्रीमति मधु जैन श्री कैलास चंद जी जैन अलीगढ़

२८०.श्रीमति नीलम जैन विनय कुमार वाकलीबाल अलीगढ़

२८१.श्रीमति विमला जैन वैद्य नरेन्द्र कुमार

२८२.जैन अलीगढ़

२८३.श्रीमति सुशीला देवी जैन सुशील कुमार जैन अलीगढ़

२८४.श्रीमति निशि जैन श्री विजय कुमार जैन वैद्य अलीगढ़

२८५.श्रीमति किरण जैन श्री बृजेन्द्र कुमार जैन अलीगढ़

२८६.श्री देवी जैन श्री विपन स्वरूपकुमार जैन जैनपुरी अलीगढ़

२८७.श्री महावीर प्रसाद जैन श्री दिलीप वस्त्रालय बुरहानपुर

२८८.श्री धनराज नथमल बाकलीबाल वर्धमान चौक

२८६.श्री अनिल जैन गाजियाबाद

२६०.श्री कैलास चंद जैन ठाकुर गंज बिहार

२६१.श्री अखिल भारतीय जैन फेडरेशन मेरठ

२६२.श्रीमति सरला देवी स्व. चंद प्रकाश जैन मुजफ्फरनगर

२६३.श्री सुरेन्द्र कुमार जैन खतौली

२६४.श्री छज्जूमल नरेन्द्र कुमार जैन मुजफ्फरनगर

२६५.श्री मेति उर्मिला जैन श्री जिनेन्द्र

२६६.कुमार मुजफ्फरनगर.

२६७.श्रीमति किरणमाला जैन मातेश्वरी श्री

२६८.डॉ. कौशल जैन कृष्णापुरी मु०नगर

२६६.श्रीमति राजमाला जैन राजकुमार जी जैन मुजफ्फरनगर

३००.श्रीमति सबिता जैन सुकमाल चंद जैन मुजफ्फरनगर

३०१.श्री सलेक चंद प्रवीण कुमार जैन मुजफ्फरनगर

३०२.श्री त्रिलोकचंद भूषण कुमार जैन मुजफ्फरनगर

३०३.श्रीमति पुष्पा जैन पवन कुमार जैन मुजफ्फरनगर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०४.श्री रानीशचंद जैन मुजफ्फरनगर
३०५.श्रीमति मीनाक्षी जैन राजन जैन मुजफ्फरनगर
३०६.श्री भगवान दास जी जैन जौला वाले मुजफ्फरनगर
३०७.श्री राकेश जैन शास्त्री नागपुर
३०८.श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन मोदीनगर
३०६.श्री गुलाब भाई
३१०.श्री शांतीलाल अशोक भाई
३११.श्री त्रिशला महिला मण्डल देवली (राज.)
३१२.श्री सोहन लाल जी सेठी, डीमापुर
३१३.श्री माणिक चंद जी श्री सुरेश चंद जी. छावड़ा टोड़ारायसिंह
३१४.श्री रूपचंद जी सेठी निमेदा लागी
३१५.श्री भानुकुमार जी झण्ड़ावाले टोड़ारायसिंह (राज.)
३१६.श्री इन्दरचंद जी गोधा अजमेर
३१७.श्री मोतीलाल ज्ञानलाल जी टोड़ारायसिंह
३१८.श्री उच्छवचंद जैन टोड़ारायसिंह
३१६.श्री गंगवाल महिला मण्डल टोड़ारायसिंह
३२०.श्री अमोलक जी सराफ टोड़ारायसिंह
३२१.श्रीमति द्रोप्तीदेवी जैन कुरवाई
३२२.श्री प्रेमचंद जैन सागर
३२३.श्री लक्ष्मीनारायण जैन करीमगंज
३२४.श्री वीरेन्द्र कुमार जैन जबलपुर
३२५.श्री कस्तूरचंद प्रकाशचंद जैन भवानीमंडी
३२६. श्री महेन्द्र कुमार जैन गजियाबाद
३२७.श्रीमति सुलेखा जैन बीना
३२८.श्री संजय कुमार जैन ललितपुर
३२६.श्री अभय कुमार जी टोड़ारायसिंह
३३०.श्री अभय कुमार ओम प्रकाश जी टोड़ारायसिंह
३३१.श्री प्रेमचंद जी सिद्धराज जी टोड़ारायसिंह
३३२.श्री होवर चंद सुनील कुमार मढ़िया
३३३.श्री शीतल सिन्थेटिक भीलवाड़ा
३३४.श्रीमति रीता जैन दिल्ली
३३५.ब्र. दीदी हीरामणि सिघंई पुत्री श्री
३३६.जीवन लाल जी सिंघई ललितपु
३३७.श्री दि. जैन मंदिर रोपां भीलवाड़ा
३३८.श्री जैन महिला जागृति श्रीमति पुष्पा चौधरी भीलवाड़ा
३३६.श्री कमल लाल जी सरावगी भीलवाडा
३४०.श्री देवेन्द्र कुमार जैन बम्बई
३४१.श्री आदित्य जैन लखनऊ
३४२.श्रीमति मंजू जैन अलीगढ़
३४३.श्रीमति आशा जैन अलीगढ़
३४४.श्री विनोदवाला जैन अलीगढ़
३४५.श्रीमतिराजमोहनी जैन अलीगढ़
३४६.श्रीमति डॉं. प्रमिला जैन अलीगढ़
३४७.श्री सुनील कुमार जैन कुरवाई
३४८.श्री शिव कुमार जी गुढ़ा कुरवाई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहित्य संरक्षण वर्ष - २०००

श्रीमति शशिप्रभा जैन धर्मपत्नि श्री श्रेयांस कुमार जैन	१०,५००)
मुनि श्री सूर्यसागर मुनि सेवा समिति भीलवाड़ा	२५००)
श्रीमति संगीता जैन मुजफ्फरनगर	२५००)
श्री राजकुमार जैन दाल मिल बीना	२४००)
श्री विद्यासागर स्वाध्याय मण्डल अवागढ़	५८०२)
जैन महिला समाज मुजफ्फरनगर	२६५४)
जैन महिला गोष्ठी मेरठ	१०००)
श्री मुन्नालाल जैन छोटी बजरिया बीना	२०००)
दि० जैन महिला समाज खातेगांव	२५००)
पं. जवाहर लाल शास्त्री भीण्डर	१०००)
श्री महावीर प्रसाद संजय कुमार जैन विनायक डीमापुर	२०००)
श्री दि० जैन महिला समाज डीमापुर	१२०००)
श्रीमति बसंतमाला पाटनी इम्फाल	२५००)
श्रीमति सुशीला देवी इम्फाल	२५००)
श्रीमति इन्द्रादेवी कलकत्ता	२५००)
श्री फूलचंद सुरेश कुमार छावड़ा, डीमापुर	२५००)
श्रीमति बाई मोहनलाल नरेन्द्र कुमार डीमापुर	२५००)
श्रीमति फूलादेवी स्व. श्री नेमीचंद सेठी, डीमापुर	२५००)
श्री गुलाबचंद प्रसन्न कुमार जी छावड़ा इम्फाल	२५००)
श्रीमति राजकुमारी धर्मचंद जी छावड़ा इम्फाल	२५००)
श्रीमति मोहनीदेवी कल्याणमलजी छावड़ा	२५००)
श्रीमति फूलादेवी अशोक स्टील इम्फाल	२५००)
श्रीमति शांतिदेवी निर्मलकुमार पाटनी, इम्फाल	२५००)
श्रीमति गुणमाला पाटनी, इम्फाल	२५००)
श्रीमति भंवरीदेवी जौहरीमल पाटनी, इम्फाल	२५००)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमति कान्तादेवी मदनलाल छावड़ा इम्फाल	२५००)
श्रीमति संतरादेवी सोहनलाल छावड़ा इम्फाल	२५००)
श्रीमति कमलादेवी स्व. श्री मदनलाल पाटनी, इम्फाल	२५००)
श्रीमति इचरजदेवी इम्फाल	२५००)
श्रीमति फूलादेवी स्व. श्री मोतीलाल जी इम्फाल	२५००)
श्री हुकमीचंद चन्द्रमल जी जैन इम्फाल	२५००)
श्री विजय कुमार जैन इम्फाल	२५००)
श्रीमति कनकलता प्रकाशचंद बगड़ा, इम्फाल	२५००)
श्रीमति कंचनदेवी सोहनलाल जैन डीमापुर	२५००)
श्रीमति कुसुमलता भागचंद जी पाटनी, डीमापुर	२५००)
श्रीमति हीरामणीदेवी मूलचंद अजमेरा, डीमापुर	२५००)
श्रीमति मोहनीदेवी छावड़ा, डीमापुर	२५००)
श्री जीवनज्योति संस्था जैन मंदिर, डीमापुर	२५००)
वैद्य गुलाबचंद जी की पुण्यस्मृति में, ढाना	२५००)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस अंक के लेखक

१. ब्र. संदीप जैन 'सरल'	संस्थापक, अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना सागर(म०प्र०)470113 ph (07580) 30279
२. पं. कुन्दनलाल जैन	पाण्डुलिपिविज्ञ. 68 श्रुतिकुटीर विश्वासनगर, शाहदरा दिल्ली – 32
३. डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया	वरिष्ट शोध निदेशक, मंगल कलश 394 सर्वोदय नगर, आगरा रोड, अलीगढ़
४. पं. अभय कुमार शास्त्री	प्राकृताचार्य, संस्कृताचार्य, दर्शनाचार्य, कानूनगो वार्ड, बीना (सागर) म०प्र०
५. डॉ. अनुपम जैन	सम्पादक अर्हत् वचन कुंदकुंद ज्ञानपीठ 584, तुकोगंज इन्दौर (म०प्र०)
६. डॉ. कस्तूरचंद जी 'सुमन'	प्रभारी जैन विद्या संस्थान श्री महावीर जी (राज०)
७. डॉ. गंगाराम 'गर्ग'	सेवा निर्वृत्त प्राचार्य, भरतपुर (राज०)
८. पं. लालचंद जी 'राकेश'	धर्मदिवाकर, कवि, नेहरू चौक गली नं. 4 गंजबासौदा (म०प्र०)
९. डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज'	शोधाधिकारी कुंदकुंद ज्ञानपीठ 584, तुकोगंज, इन्दौर (म०प्र०)

4664

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

'महाकवि रइधू पुरस्कार से आज सम्मानित होंगे बालब्रह्मचारी संदीप भैया'

फीरोजाबाद, 16 अप्रैल (नि.प्र.)। चूड़ियों के नाम से प्रसिद्ध नगर के शीर्षस्थ जैन विद्वान के द्वारा स्थापित 'श्यामसुन्दर लाल शास्त्री श्रुत प्रभावक न्यास' के तत्वावधान में इक्कीस हजार रुपये का महाकवि रइधू पुरस्कार कल (आज) सोमवार को अपराह्न 3 बजे जिनवाणी के एक अनन्य उपासक ब्र. संदीप सरल, बीना को प्रदान किया जायेगा।

यह जानकारी जैन विद्वान नरेन्द्र प्रकाश जैन ने एक विज्ञप्ति में देते हुये ... ब्र. सन्दीप स्वयं में एक संस्था हैं ... छोटी उम्र में भी एक ... आचार्य ... विद्वान।

किया गया है। ज्ञान मंदिर का अपना निजी भवन खरीदा गया है। संस्था की ओर से समय-समय पर विद्वत्गोष्ठियों के आयोजन भी होते रहते हैं तथा 'अनेकान्त दर्पण' शीर्षक से एक शोध पत्रिका का प्रकाशन भी हो रहा है। आगन्तुक ... विद्वानों के लिये अध्ययन एवं शुद्ध ... व्यवस्था है।

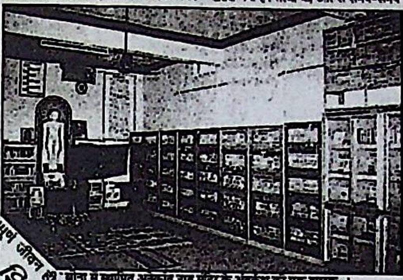

बीना में स्थापित अनेकांत ज्ञान मंदिर के अंतरंग की एक झलक

192 का एक दुर्लभ ज्ञान भण्डार अनेकान्त ज्ञान मंदिर

मुनि सौख्य सागर जी

जिनवाणी शिशु कहने वाला भारत का लाल ब्र. संदीप 'सरल' - डॉ. नीलम जैन

... के सम्पूर्ण जीवन ही इसके लिए समर्पित हो गया है। मैं उन्हें शुभाशीष देता हूँ।

कोनिनगर में आयोजित आगम संरक्षण धर्मसभा के मध्य एक तेजस्वी ओज भरी वाणी में कहा कि जिनवाणी को माता कहकर आराधना करने वाले तो बहुत मिले हैं किंतु अपने को जिनवाणी का शिशु कहकर माँ जिनवाणी की सेवा करने वाला सारे भारतवर्ष का एक मात्र लाल है तो वह है ब्र. संदीप 'सरल'। जिसने श्रम एवं समर्पण से यह सब कुछ करके दिखा दिया जो अभी तक नहीं हुआ है।

ब्र. संदीप जी 'सरल' का कार्य श्रुति पुष्पदंत भूतबली जी से कम नहीं - पं. सुमेर चंद जैन

प्रेमपुरी में दशलक्षण पर्व के समापन पर वर्षा प्रवचन के सम्पादक एवं क्षु. सहजानंद जी वर्णी के परम भक्त श्री सुमेरचंद जी ने कहा कि मैंने जब ब्र. संदीप जी के दर्शन किए तो ... अनेकान्त ज्ञान मंदिर के माध्यम से जो अल्पायु में श्रुत संरक्षण का महान कार्य ...

कि यह अलौकिक पुरुषार्थी व्यक्तित्व है। जब इनकी ज्ञानधारा की त्रिवेणी प्रेमपुरी में बही तो सभी ने ...

अनेकान्त ज्ञान मंदिर की सार्वभौमिक गूँज

पुरस्कार

... जिनवाणी संरक्षण पुरस्कार ... की अनुशंसा के आधार ... के प्रति जन चेतना ... शारीबाई स्मृति ... जैन 'सरल' ... प्रशंसनीय

जा ... जिनवा ... के मार्गदर्श ... है।

इस द्विवार्षिक ... एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मा... की जायेगी।

डॉ. अनुपम जैन
संयोजक - पुरस्कार समिति
इन्दौर

संदीप सरल पुरस्कार

फीरोजाबाद ... जिनवाणी ... (बीना) ... शास्त्री श्रुत ... इक्कीस हजार ... प्रदान किया ... महावीर जयंती ... बजे से आयोजित ...

शास्त्री श्रुत प्र... प्राचार्य नरेंद्र प्रकाश ... को यह पुरस्कार छोटी ... दिखाने के लिए दिया ... 1992 में अनेकांत ज्ञान ... संस्थान) की स्थापना ... भाष्य की दुर्लभ हस्तलिखित ... ग्रंथों को संग्रहित ... इस बाल संस्कार ... है एवं 'अनेकांत दर्पण' शीर्षक से ... का प्रकाशन भी किया जा रहा ...

शस्त्र सुरक्षा अभियान पश्चिम ब. इम्फाल व नागालैण्ड में पहुंचा

अनेकान्त ज्ञान मंदिर को आशातीत सफलता

देव मंदिर बनाना आसान है जिनवाणी मंदिर बनाना मुनि प्रबल सागर जी

कोनिनगर में धर्म श्रद्धालुओं के बीच मुनि श्री प्रबल सागर जी महाराज ने कहा कि देव मंदिर बनाना तो आसान है किंतु जिनवाणी मंदिर बनाना आसान नहीं है। आज पूरे भारत का अद्वितीय जिनवाणी ...

मैं हर सभा के मध्य ज्ञान मंदिर की चर्चा करूँगा

... ने नगर (मेरठ) में मुनि श्री ज्ञान भूषण जी महाराज ने कहा कि मेरा विहार जहाँ पर भी होगा और जिस भी स्थान पर हूँगा ... का विषय बना हुआ है इसके संचालक ... से करा रहा ...

जिन... अनेकान्त ... संस्था संस्थापक ब्र. ... कुशल निर्देशन एवं ... आशातीत सफलता अर्जित ...

... धर्मसभाओं का ... "सरल" जी के ... वाणी संरक्षण ... की समाज ... १२ मार्च को ... का आयो... देते हुए ... प्रदान ... प्रदर्शनी ...

... कि पूर्वांचल एवं कलकत्ता वासियों के ... अनेकान्त ज्ञान मंदिर की अच्छी छवि ... लोगों का असीम स्नेह लेकर ... है। इस परम अभियान में ... भुलाया नहीं जा ... सकता से श्री ... सेठी, ... श्री पूनम... पीसी जैन ... इम्फाल से ... महावीर ... प्रसा... समस्त ... पहिला ... मीमापुर ... से श्री ... पूनम जी, ... पहेल ... कुमार ... फुलचन्द ... जी सेठी आदि।

... प्रसन्नता होगी कि १७ ... आभार में ब्र. संदीप जी "सरल" का ... संस्थान के लिए पं. श्याम सुन्दरलाल ...

2001 जनवरी

26 विशिष्ट स्थानों पर अनेकान्त वाचनालयों की स्थापना

भगवान महावीर स्वामी के 2600वीं जयंती के उपलक्ष्य में अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना की एक अनुकरणीय सार्थक पहल

जैसा कि सभी को ज्ञात है कि सम्पूर्ण विश्व की जैन समाज भगवान महावीर स्वामी की ...

वहां ... हुआ।

१३ मार्च को ... पहुँचे। १७ मार्च तक हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ प्रदर्शनी का आयोजन रहा। प्रतिदिन प्रातः एवं रात्रि में जिनवाणी गौरव ब्र.संदीप जी "सरल" एवं ब्र. राजेन्द्र जी का मंगल प्रवचन हुआ। भी जिनवाणी के प्रति जन चेतना जाग्रत की गई। प्रदर्शनी की सभी ने सराहना करते हुए अनेकान्त ज्ञान मंदिर के उत्थान हेतु श्रावकों ने आर्थिक सहयोग भी प्रदान ...

प्रदर्शनी ... मंदिर में कुल ... सम्पन्न हुए। ... कलकत्ता ने भी अनेकान्त ... गतिविधियों की सराहना करते हुए ...

अहिंसा ...

... जैन मुनि ... में आयोजित ... तीन दिवसीय म... दिन आज जैन मेला ... कोटला रोड पर अनेकों कार्यक्रम प्रातः से रात्रि तक आयोजित किये जायेंगे। आज प्रातः 6 बजे वीर वंदना एवं भक्ति संगीत, ... 108 कलशों से श्री 1008 भगवान स्वामी का महामस्तकाभिषेक एवं ... किया जायेगा। प्रातः 8 बजे निर्ग्रन्थ ... के कलाकारों द्वारा ... की जायेगी। ... समिति एवं ... तीन बज... शास्त्री श्रुत प्र... किया जायेगा। सायं 7.30 बजे पं. ... द्वारा धार्मिक उद्बोधन होगा। ...

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

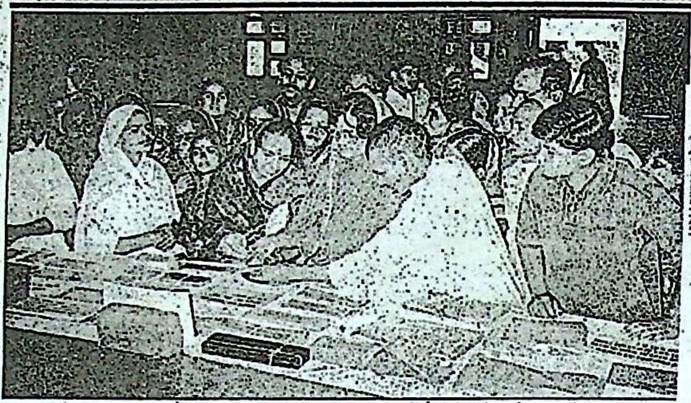

मुजफ्फरनगर के जैन औषधालय प्रेमपुरी में आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन करती महिलाएं। छाया: जागरण

पाण्डुलिपि प्रदर्शनी का शुभारम्भ

पांडुलिपि प्रदर्शनी का आयोजन

गाजियाबाद (संदीप गर्ग): गाजि

है। इस प्रदर्शनी का भव्य शुभारंभ 108 सौरभ सागर जी महाराज के सानिध्य में 17 सितम्बर रविवार को बजे एक विशाल धर्म सभा के मध जाएगा। जिनवाणी संरक्षक के महत्व प्रवचन भी होगा

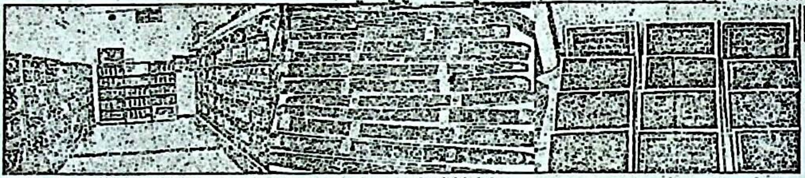

बीना स्थित अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान में रखे प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ, ताड़ पत्र पर लिखे ग्रंथ एवं स्वर्ण अक्षरों से लिखे ग्रंथ।

जैन समाज के दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है बीना के अनेकांत ज्ञान मंदिर में

दुर्लभ ...की प्रदर्श...

र। आज से जैन ...पाण्डुलिपियों के प्र... रहा है। प्रदर्शनी ...कि अनेकांत ज्ञान ...नी में हजारों वर्ष ...व काष्ठ फलक ... पाण्डुलिपियां, प्राचीन हस्तकला से युक्त पुरातात्विक सम्पदा इस प्रदर्शनी में देखने मिली। (जासकं)

मुजफ्फरनगर के इतिहास में प्रथम बार पाण्डुलिपि प्रदर्शनी का उद्घाटन

मुजफ्फरनगर, 7 सितम्बर (...) औषधालय, प्रेमपुरी में अनेकान्त ज्ञा... शोध संस्थान ... आयोजित ... भव्य शुभ... के पूर्व ... गायक एवं ... मंगलाच... के उद्देश्य ... हजारों ... दा नष्ट ... प्रचारित ... इस प्रदर्शनी ... है। ... लगभग 400 ... इस आयोजन ... में दीप प्र... किया। प्र... पत्र ग्रन्थ, ... अपभ्रंश, हिं... लिपि में लिखित ... हुए हैं। ... से युक्त ... मात्रा ... की ... यहां ... में इस ... जा चुका ... सुखमाल ... में दुर्लभ ताड़ ... पत्र पर प्राकृ... भाषा में उत्कीर्ण ... ग्रन्थ आकर्षण ... काष्ठफलक, हस्त... सामग्री को देखने ... जन समुदाय आ रहा ... इस पावन अवसर ... जैन जौला वाले, पवन ... वाले, विनोद कुमार जैन ... जैन एडवोकेट, वीरेन्द्र ... सूरजमुखी जैन, शीतल प्रसाद, ... जैन बीना का विशेष सहयोग

मृगावली में अनेकांत वाचनालय प्रारंभ

वाचनालय का शुभारंभ

श्रुत पंचमी महोत्सव का आयोजन

...संवाददाता द्वारा

स्थान बनाया है, ग्रन्थ संरक्षण प्रतियोगिता के अन्तर्गत 50 प्रतियोगियों ...

प्राचीन ग्रंथों की पांडुलिपियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन

...कार्यालय संवाददाता

...मुजफ्फरनगर, 7 सितंबर

...औषधालय प्रेमपुरी में प्राचीन ग्रंथों की दुर्लभ पांडुलिपियों की प्रदर्शनी लगायी गई है। उद्घाटन के साथ ही बड़ी ... पांडुलिपियों का अव... अनेकां...

के संस्थापक संदीप जैन ने ... प्रदर्शनी के उद्देश्य पर ... हमारे ... के सार्थक प्रयास ... कि इससे पूर्व देश के 400 ... प्रदर्शनी लगायी जा चुकी है। उद्घाटन ... पर सुखमाल जैन सर्राफ ने दीप ... किया। शोध संस्थान के सहायतार्थ ... जैन की धर्मपत्नी डा. सूरजमुखी ... को धनराशि प्रदान की। कार्यक्रम में ... विनोद कुमार ... शीतल प्रसाद जैन, ... जैन पंचायती मंदिर ... जैन ने बताया कि प्रदर्शनी ... 6 से 8 तक खुली रहेगी।

अनेकांत ज्ञान मंदिर में धर्मसभा का आयोजन

...की उद्घाटन ... प्रदर्शनी में दुर्लभ ताड़पत्र ... प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश व हिंदी ... लिपि में उत्कीर्ण ग्रंथ आकर्षण का केंद्र बने हैं। काष्ठ फलक, हस्तकला आदि से युक्त सामग्री को देखने के लिए भारी संख्या में लोग जुट रहे हैं।

... प्रशंसा ... अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना

प्राकृत और संस्कृत भाषा में लिखित जैन ग्रंथों की प्रदर्शनी

प्राचीन लिपियों को संभाल कर रखा है अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान ने

पांडुलिपि प्रदर्शनी

...6 सितम्बर ... संस्थान ... आयोजित ... जा रहा है। प्रदर्शनी में मुख्य आकर्षण के केन्द्र रहेंगे, प्राचीन हस्तलिखित पत्र, ग्रंथ, ... ग्रंथ, ...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्थान के अष्टम् स्थापना दिवस समारोह पर आयोजित संगोष्टी में मंचासीन मनीषीगण

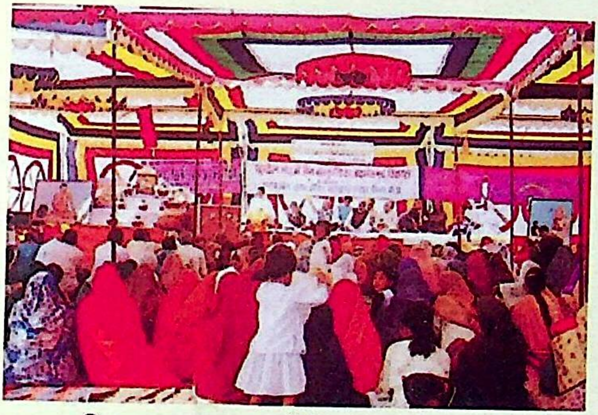

20 फरवरी 2000 पर आयोजित कार्यक्रम में श्रोतागण मनीषियों की वाणी का रसास्वादन करते हुए

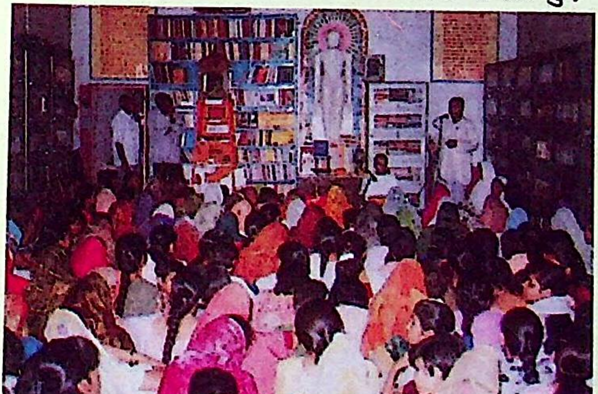

श्रुत पंचमी महोत्सव पर श्रुतधाम परिसर में श्रुत की आराधना करते हुए श्रुतोपासक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

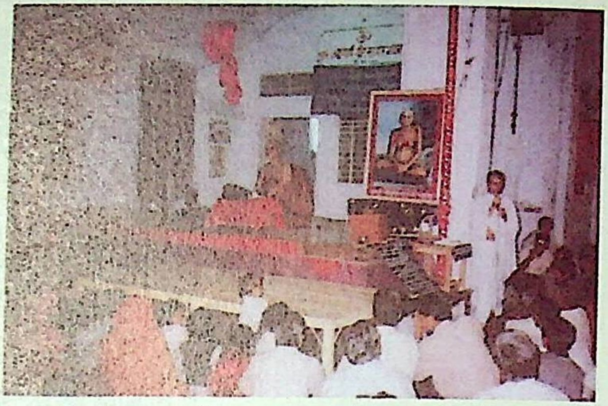

आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज के सानिध्य में टोडारायसिंह (राज0) में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए

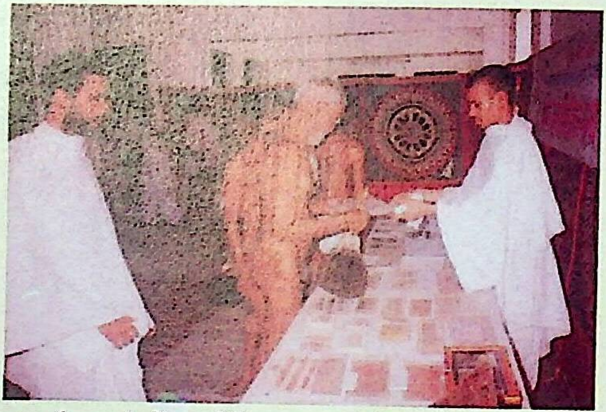

भीलवाड़ा (राज0) में आयोजित पाण्डुलिपि प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए पू0 मुनि श्री 108 ब्रम्हानंद सागर जी महाराज ससंघ

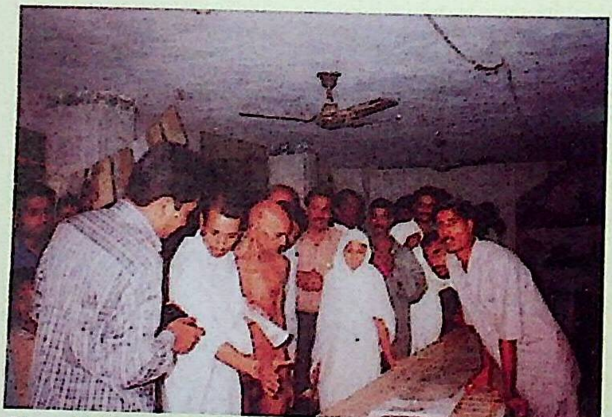

छतरपुर में आयोजित प्रदर्शनी के दर्शन करते हुए परम तपस्वी आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी एवं गणिनी आर्यिका 105 विजयमति माता जी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री तनसुखलाल जी सेठी इम्फाल (मणिपुर) में अनेकांत दर्पण का लोकार्पण करते हुए ।

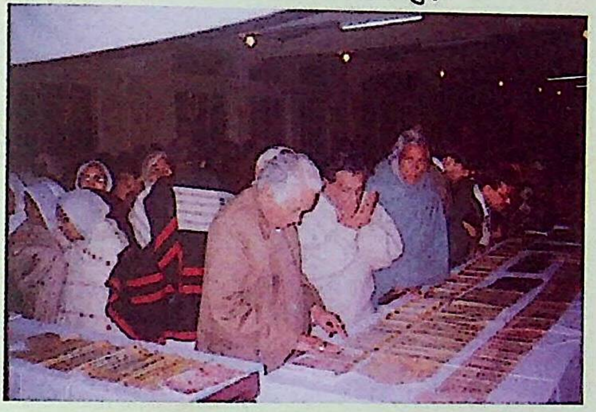

डीमापुर (नागालैंड) में आयोजित पाण्डुलिपि प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए दर्शकगण ।

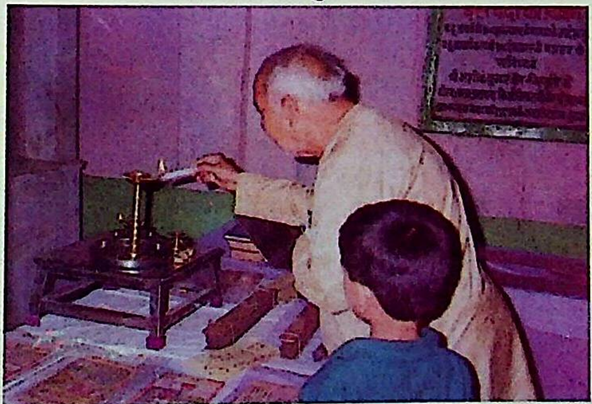

भुसावल (महाराष्ट्र) में दुर्लभ ताड़पत्र ग्रन्थों के समक्ष दीप प्रज्जवलन करते हुए जिनवाणी उपासक, उदारश्रेष्ठी श्री तोताराम जी लुहाड़िया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

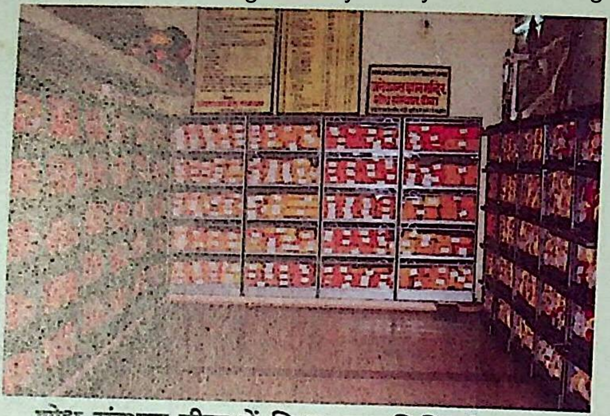

शोध संस्थान बीना में स्थित पाण्डुलिपि संग्रहालय इसमें विभिन्न स्थानों से लगभग 8000 ग्रन्थों को जीवन दान दिया

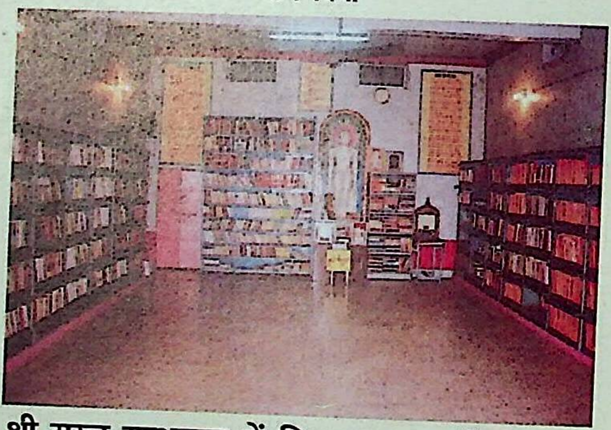

श्री सरल ग्रन्थालय में स्थित 7000 मुद्रित ग्रन्थ

श्री लक्ष्मीनारायण जैन भरतपुर (राज0) द्वारा फोटो कापी मशीन एवं श्री कमलेश कुमार सुशील कुमार जैन कानपुर ने कम्प्युटर संस्थान को प्रदान किया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिगम्बर जैन दुर्लभ मुनि मूर्ति इस सम्बन्धी लेख इसी पत्रिका
के पृ. नं. 28 पर देखें

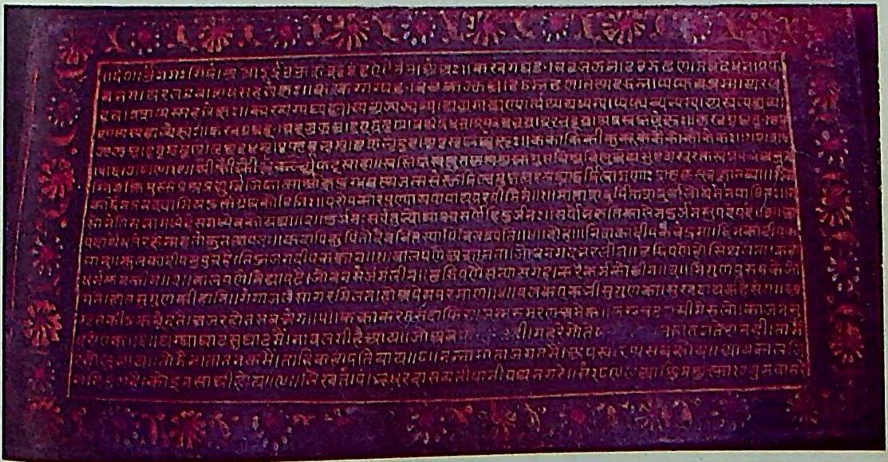

दुर्लभ काष्ठ फलक शाहपुर (मुजफ्फरनगर) के जैन बडे
मंदिर से प्राप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना की बहुमूल्य सम्पदा सचित्र रविव्रत कथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi